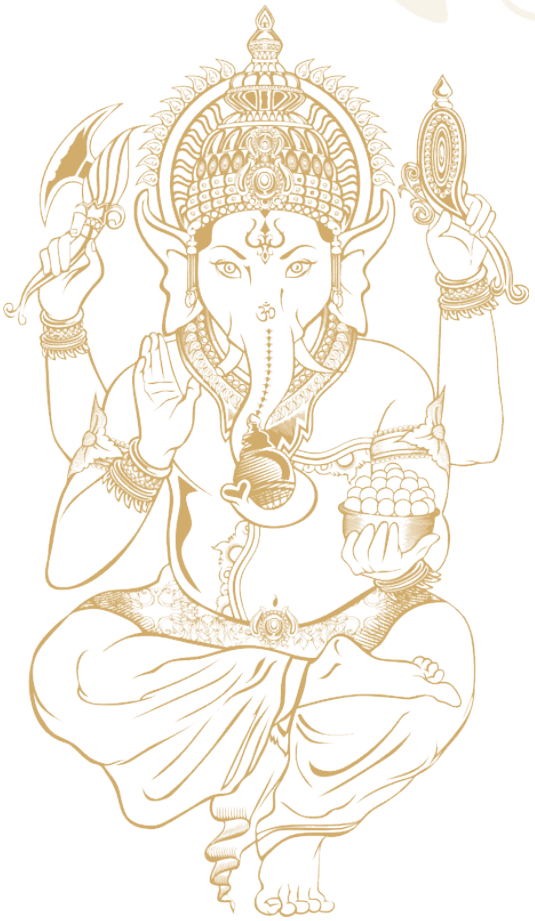

Ms.Meena Sharma

10 Mar 1969

11:30 AM

Simla

Model: Web-KundliDarpan

Order No: 121535101

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	स्त्रीलिंग
जन्म तिथि	**10/03/1969**
दिन	सोमवार
जन्म समय	**11:30:00 घंटे**
इष्ट	12:09:17 घटी
स्थान	**Simla**
राज्य	Himachal Pradesh
देश	India

अक्षांश	31:06:00 उत्तर
रेखांश	77:10:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:21:20 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	11:08:40 घंटे
वेलान्तर	-00:10:24 घंटे
साम्पातिक काल	22:19:37 घंटे
सूर्योदय	06:38:17 घंटे
सूर्यास्त	18:25:35 घंटे
दिनमान	11:47:19 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल)	दक्षिण
ऋतु	वसन्त
सूर्य के अंश	26:03:55 कुम्भ
लग्न के अंश	27:13:31 वृष

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	वृष - शुक्र
राशि-स्वामी	**वृश्चिक - मंगल**
नक्षत्र-चरण	**अनुराधा - 3**
नक्षत्र स्वामी	शनि
योग	वज्र
करण	विष्टि
गण	देव
योनि	मृग
नाड़ी	मध्य
वर्ण	विप्र
वश्य	कीटक
वर्ग	सर्प
युँजा	मध्य
हंसक	जल
जन्म नामाक्षर	नू-नूतन
पाया(राशि-नक्षत्र)	ताम्र - ताम्र
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	मीन

पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1890	फाल्गुन	19
पंजाबी	संवत : 2025	फाल्गुन	27
बंगाली	सन् : 1375	फाल्गुन	26
तमिल	संवत : 2025	मासी	27
केरल	कोल्लम : 1144	कुंभम	27
नेपाली	संवत : 2025	फाल्गुन	27
चैत्रादि	संवत : 2025	चैत्र	कृष्ण 7
कार्तिकादि	संवत : 2025	फाल्गुन	कृष्ण 7

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि ___: 7
तिथि समाप्ति काल _____: 26:18:36
जन्म तिथि _____: 7
सूर्योदय कालीन नक्षत्र ___: अनुराधा
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 19:29:43 घंटे
जन्म योग _____: अनुराधा
सूर्योदय कालीन योग ___: हर्षण
योग समाप्ति काल _____: 09:19:34 घंटे
जन्म योग _____: वज्र
सूर्योदय कालीन करण ___: विष्टि
करण समाप्ति काल _____: 15:20:38 घंटे
जन्म करण _____: विष्टि
भयात _____: 36:52:16
भभोग _____: 56:51:32
भोग्य दशा काल _____: शनि 6 वर्ष 8 मा 10 दि

घात चक्र

मास _____: आश्विन
तिथि _____: 1-6-11
दिन _____: शुक्रवार
नक्षत्र _____: रेवती
योग _____: व्यतिपात
करण _____: गर
प्रहर _____: 1
वर्ग _____: गरुड़
लग्न _____: वृश्चिक
सूर्य _____: मकर
चन्द्र _____: धनु
मंगल _____: कुम्भ
बुध _____: वृश्चिक
गुरु _____: मीन
शुक्र _____: मेष
शनि _____: कर्क
राहु _____: वृष

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

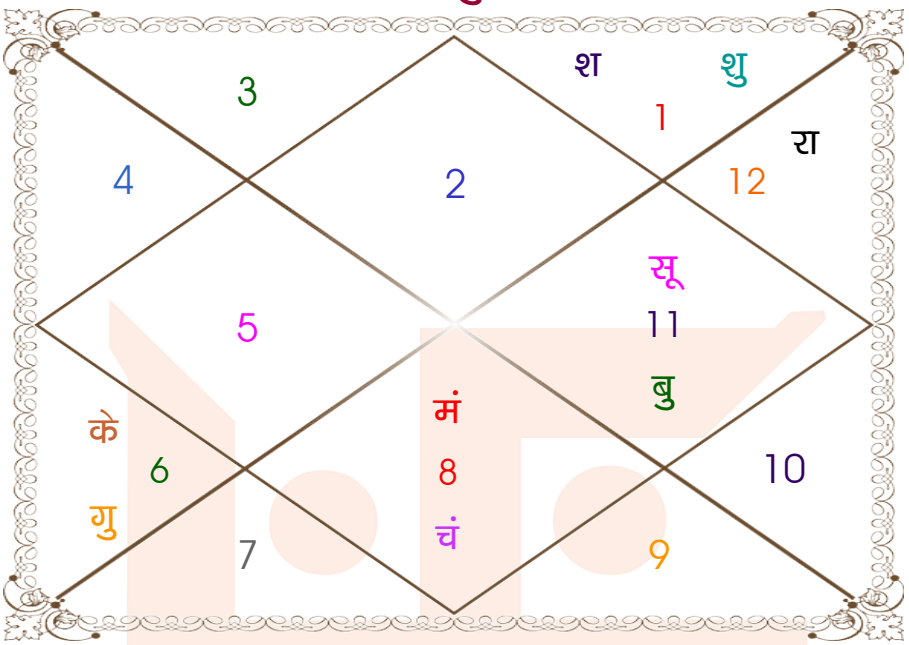

चन्द्र कुंडली

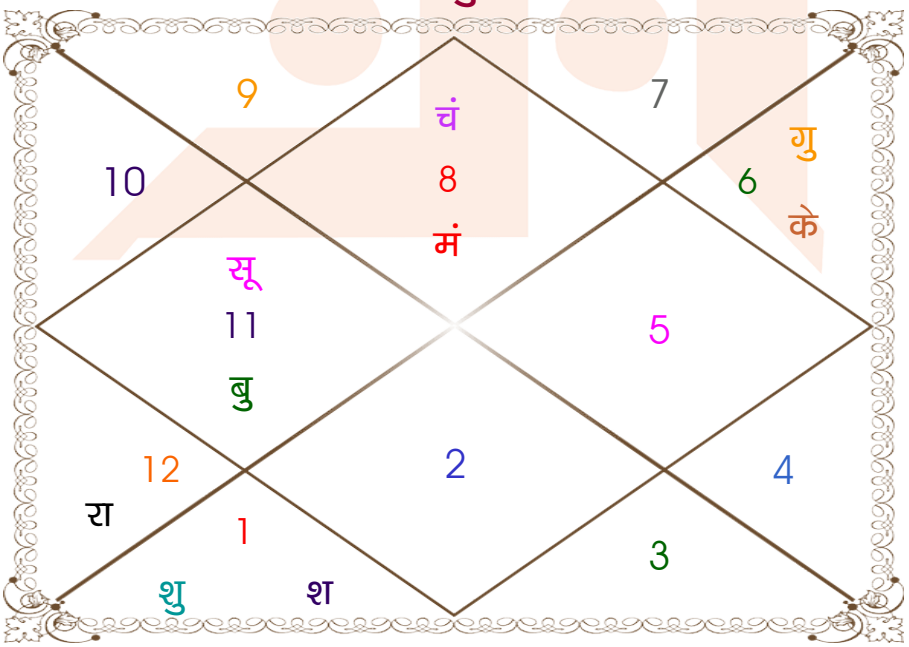

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

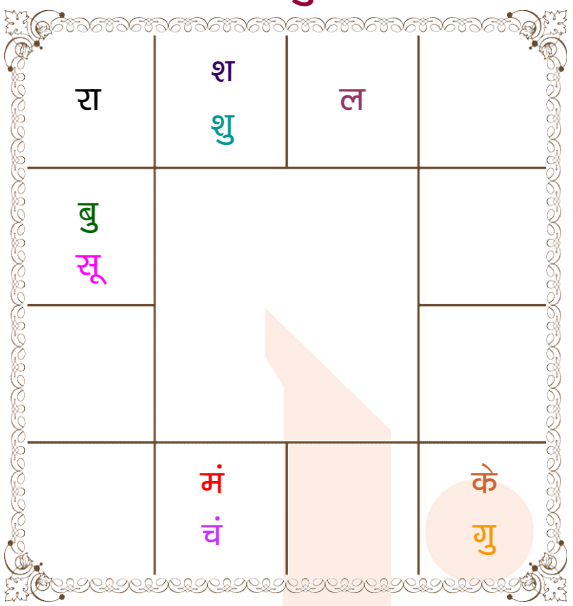

लग्न कुंडली

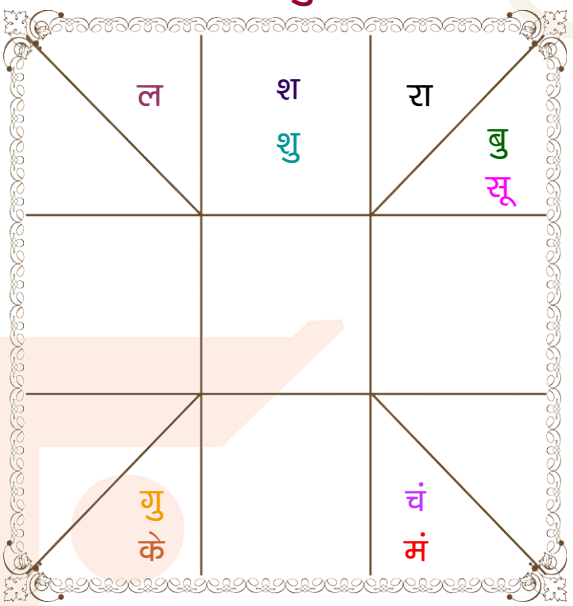

विंशोत्तरी
शनि 6वर्ष 8मा 10दि

शनि

10/03/1969

19/11/2076

शनि	20/11/1975
बुध	19/11/1992
केतु	20/11/1999
शुक्र	20/11/2019
सूर्य	19/11/2025
चन्द्र	20/11/2035
मंगल	20/11/2042
राहु	19/11/2060
गुरु	19/11/2076

योगिनी
भ्रामरी 1वर्ष 4मा 27दि

संकटा

06/08/2024

06/08/2032

संकटा	18/05/2026
मंगला	07/08/2026
पिंगला	16/01/2027
धान्या	17/09/2027
भ्रामरी	06/08/2028
भद्रिका	16/09/2029
उल्का	16/01/2031
सिद्धा	06/08/2032

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			वृष	27:13:31	349:09:11	मृगशिरा	2	5	शुक्र	मंगल	गुरु	---
सूर्य			कुंभ	26:03:55	00:59:56	पू०भाद्रपद	2	25	शनि	गुरु	केतु	शत्रु राशि
चंद्र			वृश्चि	11:58:03	14:05:15	अनुराधा	3	17	मंगल	शनि	चंद्र	नीच राशि
मंगल			वृश्चि	12:08:00	00:24:03	अनुराधा	3	17	मंगल	शनि	मंगल	स्वराशि
बुध			कुंभ	03:03:10	01:26:53	धनिष्ठा	3	23	शनि	मंगल	शुक्र	सम राशि
गुरु	व		कन्या	09:12:46	00:07:23	उ०फाल्गुनी	4	12	बुध	सूर्य	शुक्र	शत्रु राशि
शुक्र			मेष	02:06:21	00:18:15	अश्विनी	1	1	मंगल	केतु	शुक्र	सम राशि
शनि			मेष	00:18:57	00:06:46	अश्विनी	1	1	मंगल	केतु	केतु	नीच राशि
राहु			मीन	06:52:16	00:00:31	उ०भाद्रपद	2	26	गुरु	शनि	बुध	सम राशि
केतु			कन्या	06:52:16	00:00:31	उ०फाल्गुनी	4	12	बुध	सूर्य	बुध	शत्रु राशि
हर्ष	व		कन्या	09:05:03	00:02:31	उ०फाल्गुनी	4	12	बुध	सूर्य	शुक्र	---
नेप	व		वृश्चि	05:15:31	00:00:19	अनुराधा	1	17	मंगल	शनि	शनि	---
प्लूटो	व		कन्या	00:28:31	00:01:37	उ०फाल्गुनी	2	12	बुध	सूर्य	राहु	---
दशम भाव			कुंभ	09:31:51	--	शतभिषा	--	24	शनि	राहु	गुरु	--

व - वक्री स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:25:36

लग्न-चलित

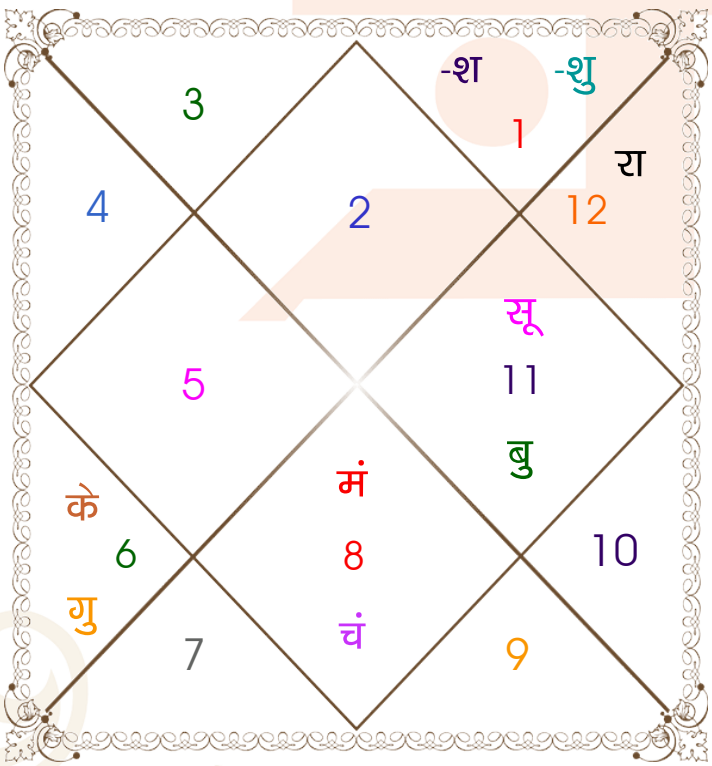

चन्द्र कुंडली

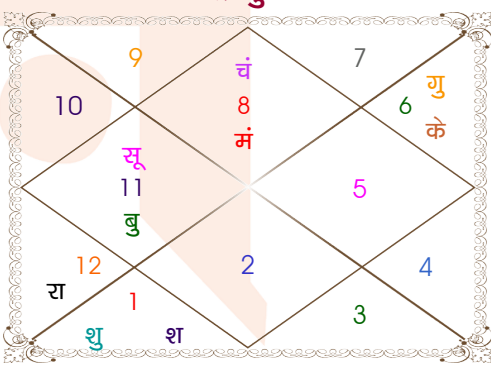

नवमांश कुंडली

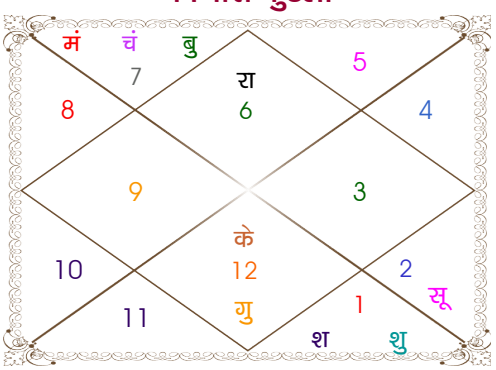

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	वृष	09:16:35	वृष	27:13:31
2	मिथुन	09:16:35	मिथुन	21:19:38
3	कर्क	03:22:41	कर्क	15:25:44
4	कर्क	27:28:47	सिंह	09:31:51
5	सिंह	27:28:47	कन्या	15:25:44
6	तुला	03:22:41	तुला	21:19:38
7	वृश्चिक	09:16:35	वृश्चिक	27:13:31
8	धनु	09:16:35	धनु	21:19:38
9	मकर	03:22:41	मकर	15:25:44
10	मकर	27:28:47	कुम्भ	09:31:51
11	कुम्भ	27:28:47	मीन	15:25:44
12	मेष	03:22:41	मेष	21:19:38

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	वृष	27:13:31
2	मिथुन	20:05:14
3	कर्क	13:00:43
4	सिंह	09:31:51
5	कन्या	12:25:39
6	तुला	20:36:14
7	वृश्चिक	27:13:31
8	धनु	20:05:14
9	मकर	13:00:43
10	कुम्भ	09:31:51
11	मीन	12:25:39
12	मेष	20:36:14

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद
उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु
पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा

चलित कुंडली

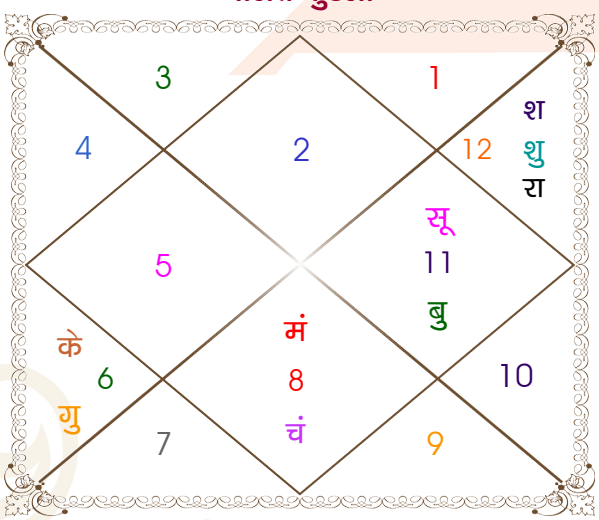

भाव कुंडली

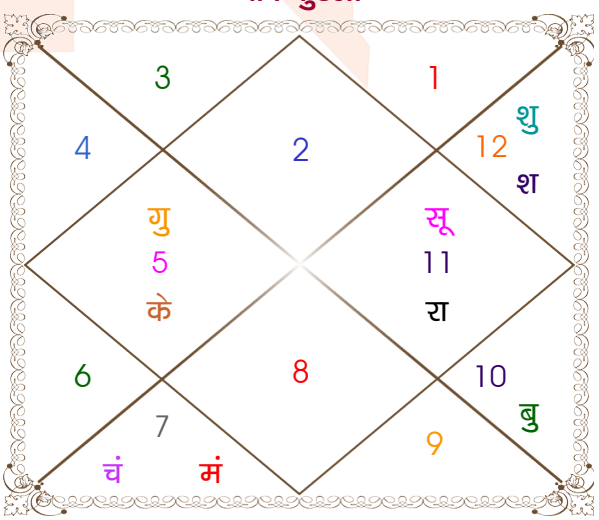

कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	------ कारक ------			------- अवस्था -------			
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	आत्मा	पितृ	मृत	खल	नेत्रपाणि	7.56	50 %
चंद्र	भ्रातृ	मातृ	वृद्ध	भीत	कौतुक	0.22	71 %
मंगल	अमात्य	भ्रातृ	युवा	स्वस्थ	सभा	4.34	56 %
बुध	पुत्र	ज्ञाति	बाल	निपीदित	नेत्रपाणि	1.40	49 %
गुरु	मातृ	धन	वृद्ध	खल	सभा	1.80	45 %
शुक्र	ज्ञाति	कलत्र	बाल	शान्त	शयन	3.89	15 %
शनि	कलत्र	आयु	बाल	भीत	उपवेशन	0.22	2 %
राहु	---	ज्ञान	वृद्ध	निपीदित	सभा	0.00	47 %
केतु	---	मोक्ष	वृद्ध	खल	सभा	0.00	47 %
कुल						19.43	

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद
उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु
पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा

चलित कुंडली

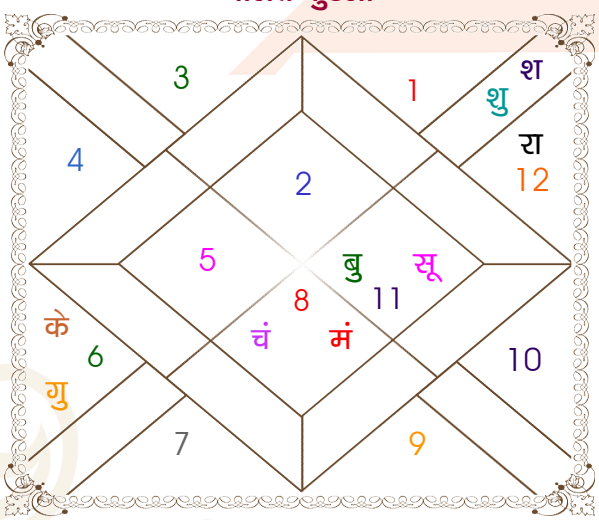

लग्न-चलित

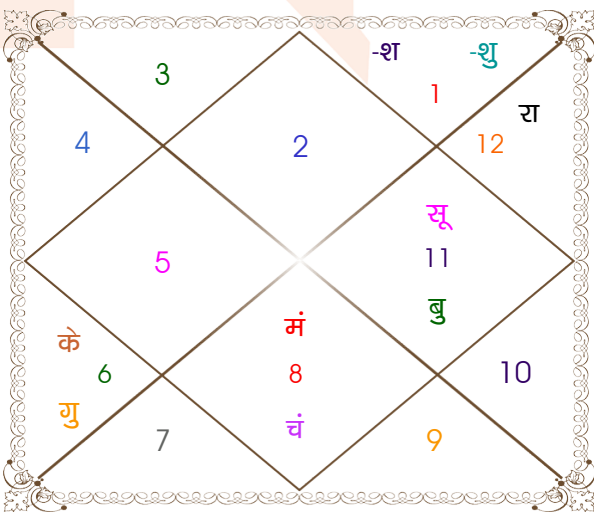

सुदर्शन चक्र

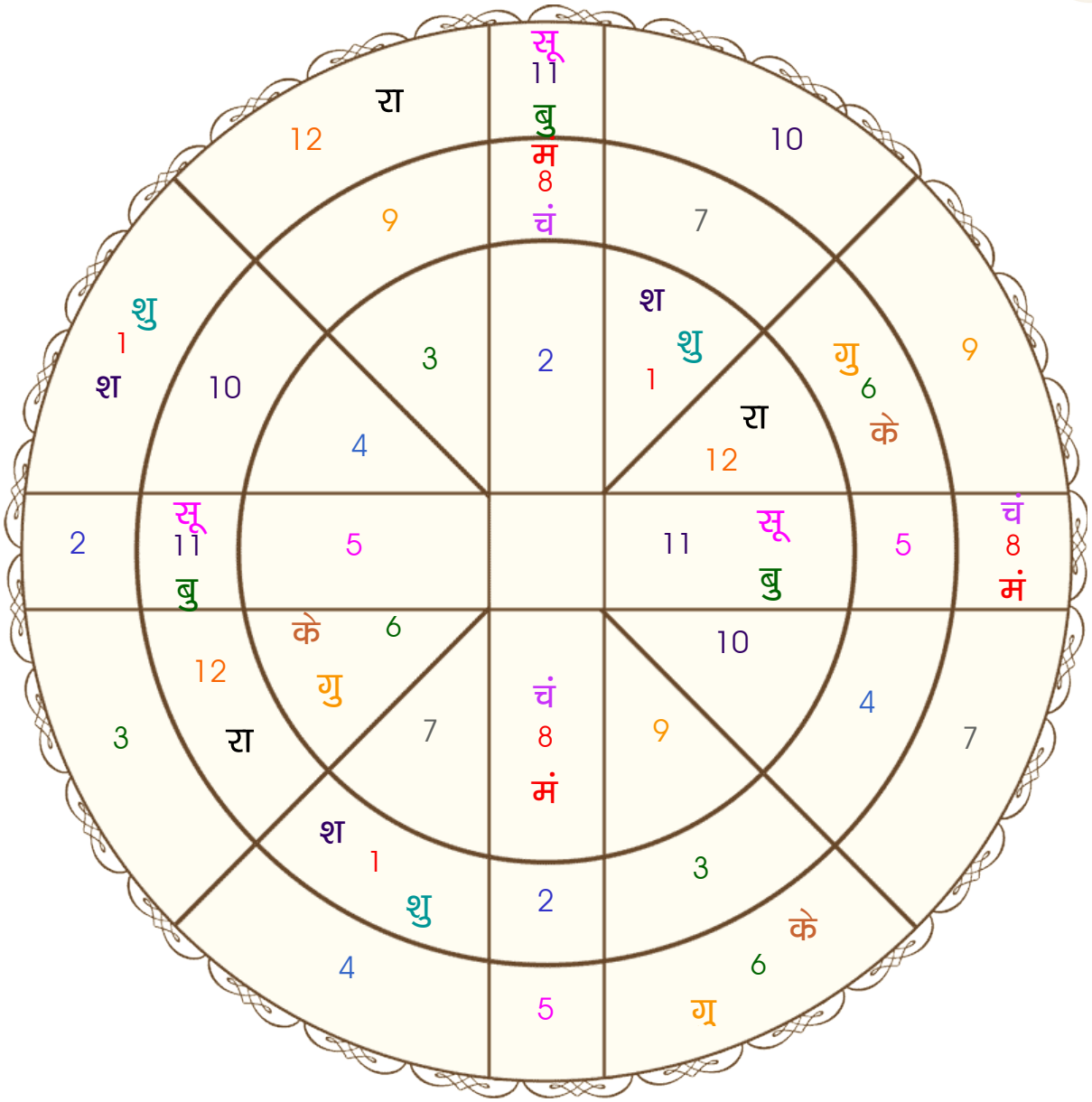

नोटः सुदर्शन चक्र क्रमानुसार बाहरी वृत से अन्तः वृत तक सूर्य, चन्द्र एवं जन्मांग कुंडलियों में ग्रहों की तुलनात्मक स्थिति दर्शाता है। किसी भाव का विचार करने के लिए उस भाव को प्रकट करने वाली तीनों राशियों का विचार करना चाहिए।

भोग्य दशा काल : शनि 6 वर्ष 8 मास 10 दिन

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		कुंभ	26:03:55	शनि	गुरु	केतु	मंगल
चंद्र		वृश्चि	11:58:03	मंगल	शनि	चंद्र	शुक्र
मंगल		वृश्चि	12:08:00	मंगल	शनि	मंगल	मंगल
बुध		कुंभ	03:03:10	शनि	मंगल	शुक्र	सूर्य
गुरु	व	कन्या	09:12:46	बुध	सूर्य	शुक्र	शनि
शुक्र		मेष	02:06:21	मंगल	केतु	शुक्र	गुरु
शनि		मेष	00:18:57	मंगल	केतु	केतु	मंगल
राहु		मीन	06:52:16	गुरु	शनि	बुध	गुरु
केतु		कन्या	06:52:16	बुध	सूर्य	बुध	शनि
हर्ष	व	कन्या	09:05:03	बुध	सूर्य	शुक्र	गुरु
नेप	व	वृश्चि	05:15:31	मंगल	शनि	शनि	गुरु
प्लूटो	व	कन्या	00:28:31	बुध	सूर्य	राहु	केतु

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	वृष	27:13:31	शुक्र	मंगल	गुरु	शुक्र
2	मिथु	20:05:14	बुध	गुरु	गुरु	गुरु
3	कर्क	13:00:43	चंद्र	शनि	राहु	राहु
4	सिंह	09:31:51	सूर्य	केतु	शनि	शनि
5	कन्या	12:25:39	बुध	चंद्र	राहु	गुरु
6	तुला	20:36:14	शुक्र	गुरु	गुरु	बुध
7	वृश्चि	27:13:31	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र
8	धनु	20:05:14	गुरु	शुक्र	राहु	मंगल
9	मक	13:00:43	शनि	चंद्र	राहु	बुध
10	कुंभ	09:31:51	शनि	राहु	गुरु	केतु
11	मीन	12:25:39	गुरु	शनि	मंगल	शनि
12	मेष	20:36:14	मंगल	शुक्र	गुरु	शनि

के.पी. अयनांश : 23:25:22

फॉरच्युना : कुम्भ 13:07:39

लग्न कुंडली

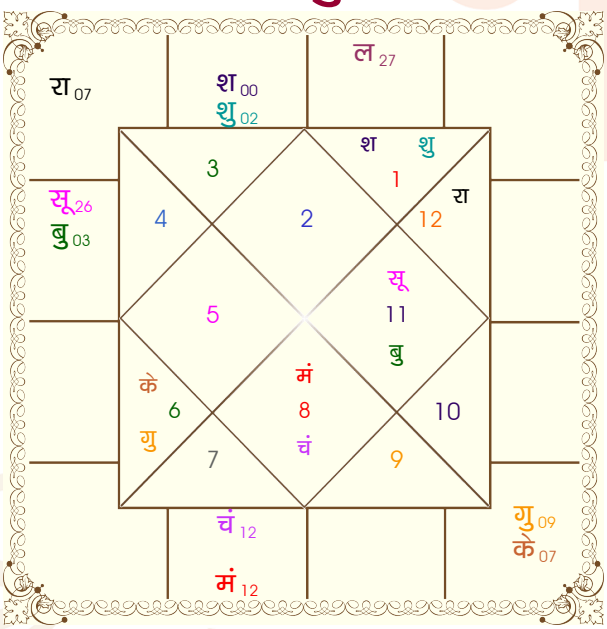

भाव कुंडली

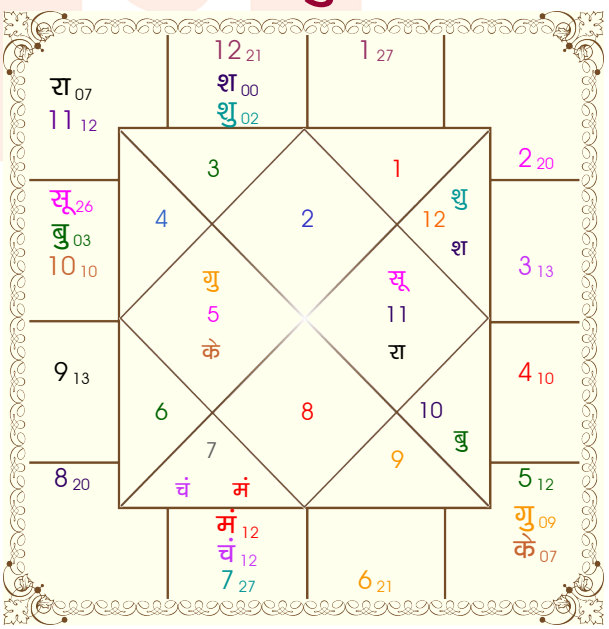

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	शुक्र-
2	बुध-
3	चंद्र-
4	सूर्य+ गुरु+ शुक्र, शनि, केतु+
5	बुध-
6	चंद्र, मंगल, बुध, शुक्र-
7	मंगल- बुध-
8	सूर्य- गुरु-
9	चंद्र- मंगल- बुध, शनि- राहु-
10	सूर्य, चंद्र- मंगल- गुरु, शनि- राहु+ केतु,
11	सूर्य- चंद्र, मंगल, गुरु- शुक्र, शनि, राहु,
12	मंगल- बुध-

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	4+ 8- 10, 11-
चंद्र	3- 6, 9- 10- 11,
मंगल	6, 7- 9- 10- 11, 12-
बुध	2- 5- 6, 7- 9, 12-
गुरु	4+ 8- 10, 11-
शुक्र	1- 4, 6- 11,
शनि	4, 9- 10- 11,
राहु	9- 10+ 11,
केतु	4+ 10,

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	मंगल
लग्न राशि स्वामी	शुक्र
राशि नक्षत्र स्वामी	शनि
राशि स्वामी	मंगल
वार स्वामी	चन्द्र
लग्न अन्तर स्वामी	गुरु
राशि अन्तर स्वामी	चन्द्र

षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिएं, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।

सूर्य कुंडली

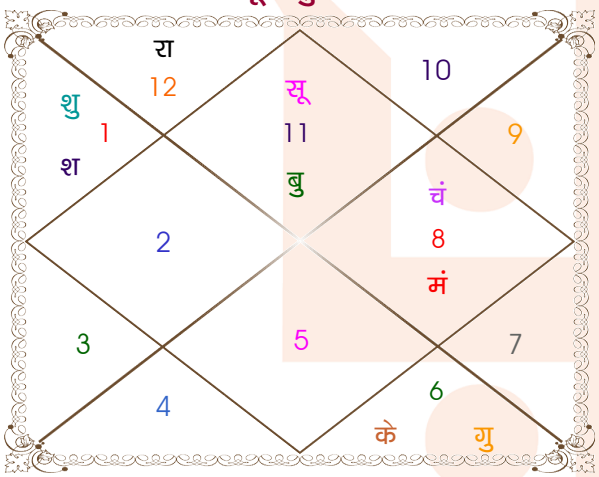

आत्मविचारः

चन्द्र कुंडली

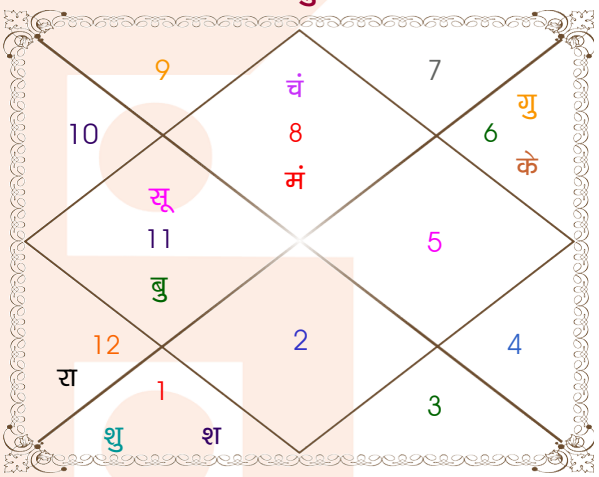

मनोबलविचारः

लग्न कुंडली

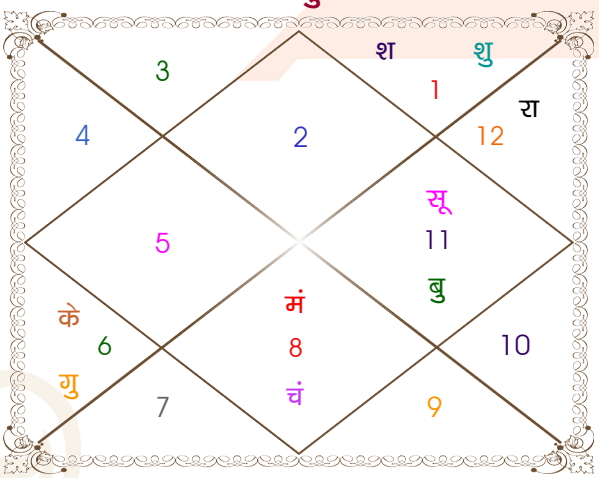

देह विचारः

होरा कुंडली

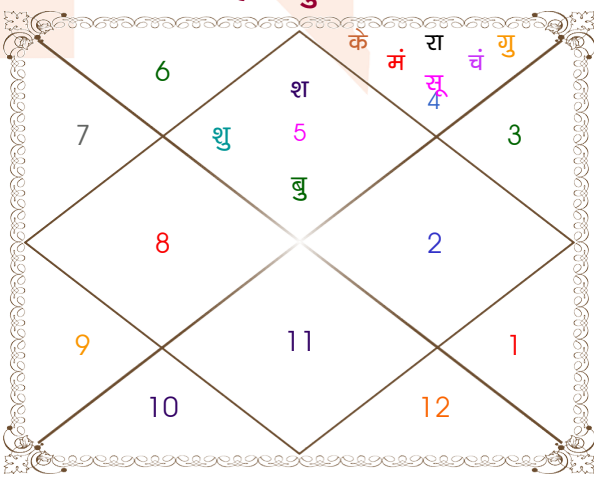

सम्पदाविचारः

षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली

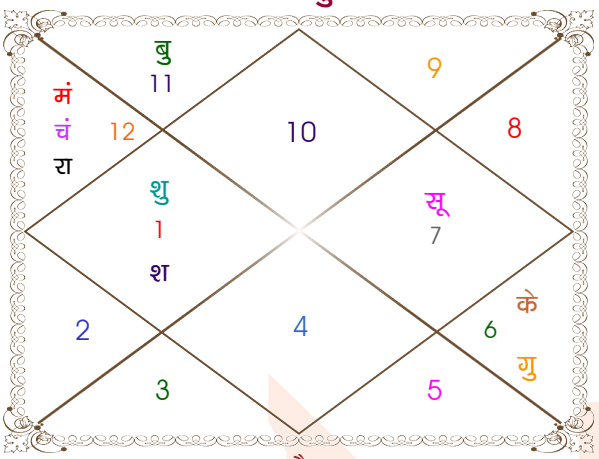

भातृसौख्यम

चतुर्थांश कुंडली

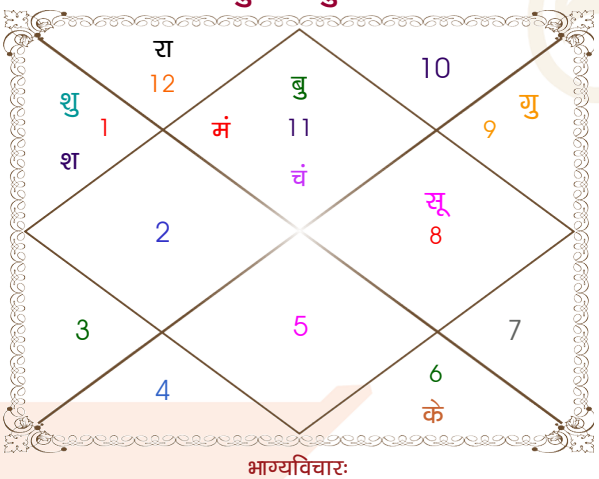

भाग्यविचारः

पंचमांश कुंडली

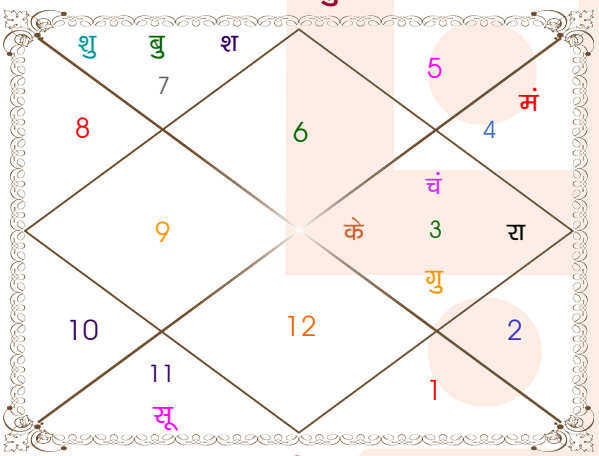

ज्ञानविचारः

षष्ठांश कुंडली

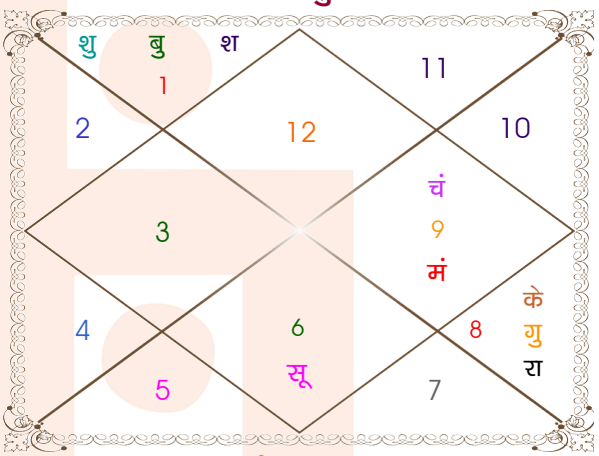

रिपुज्ञानम्

सप्तमांश कुंडली

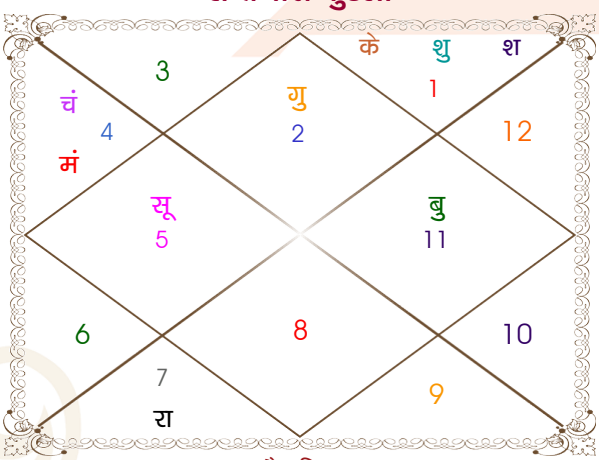

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

अष्टमांश कुंडली

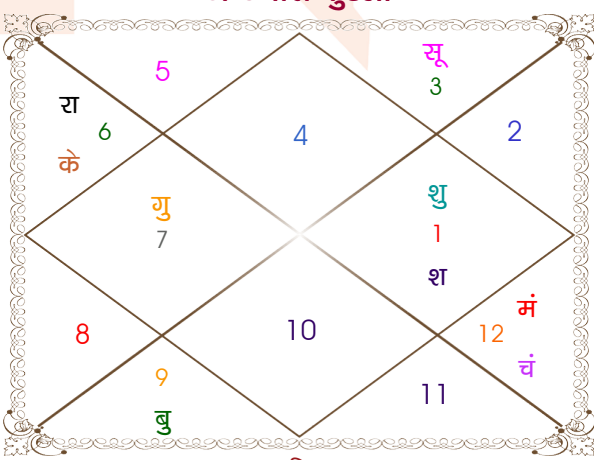

आयुविचारः

षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली

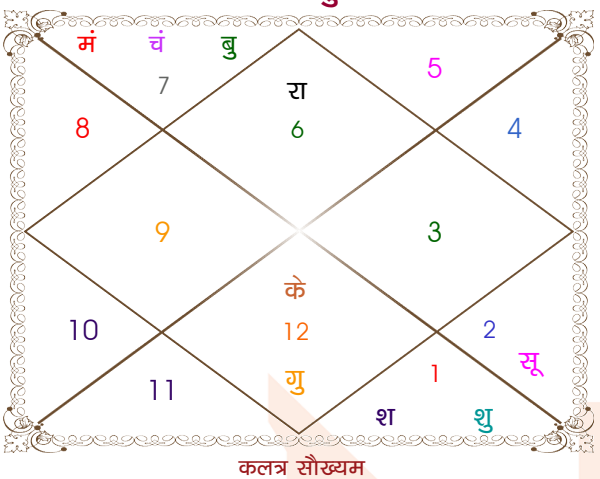

कलत्र सौख्यम

दशमांश कुंडली

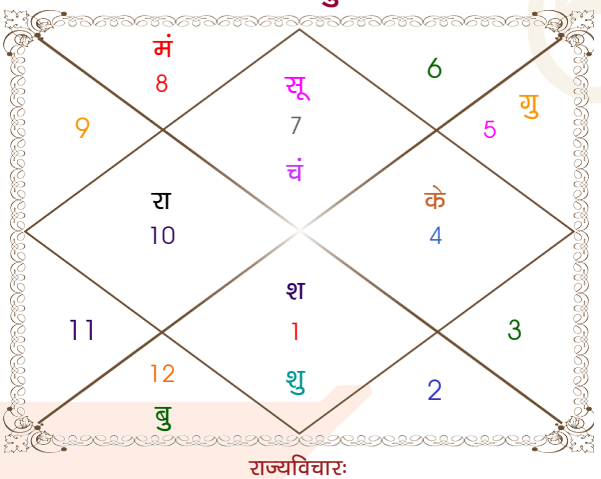

राज्यविचारः

एकादशांश कुंडली

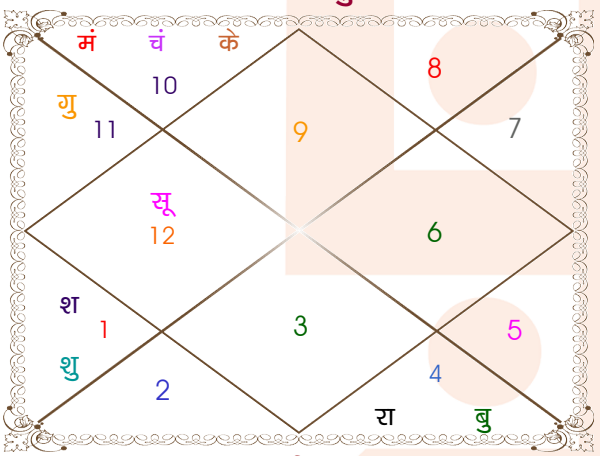

लाभविचारः

द्वादशांश कुंडली

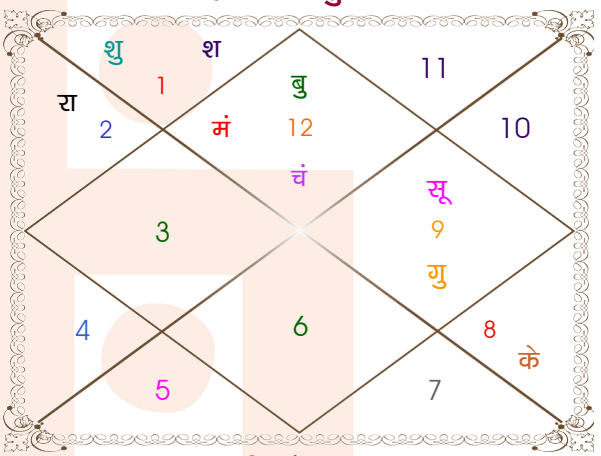

पितृसौख्यम

षोडशांश कुंडली

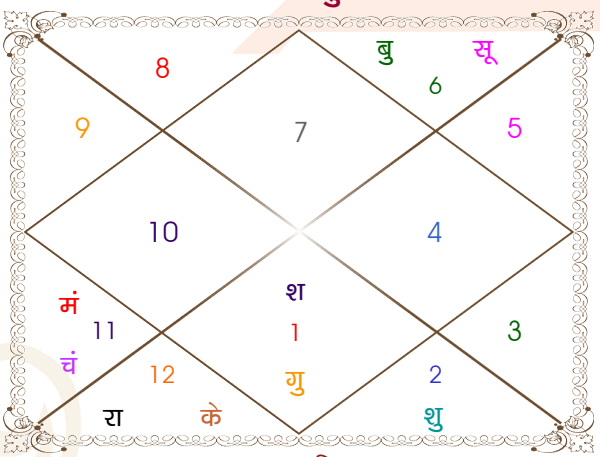

वाहनसुखविचारः

विंशांश कुंडली

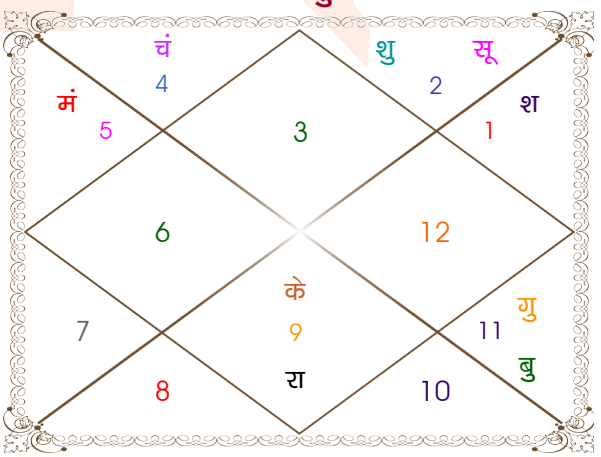

उपासनाज्ञानम्

षोडशवर्ग चक्र

चतुर्विंशांश कुंडली

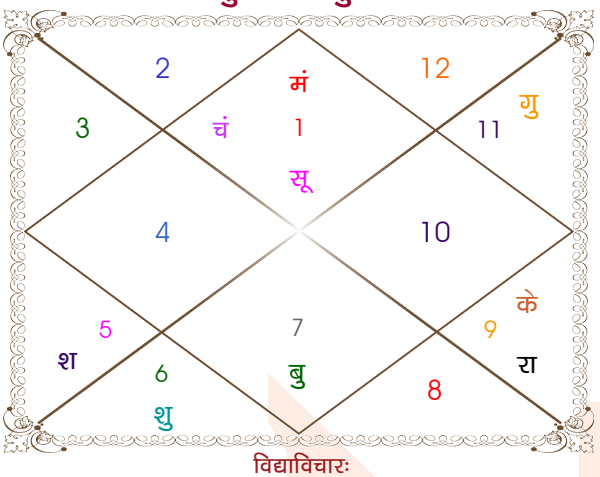

विद्याविचारः

सप्तविंशांश कुंडली

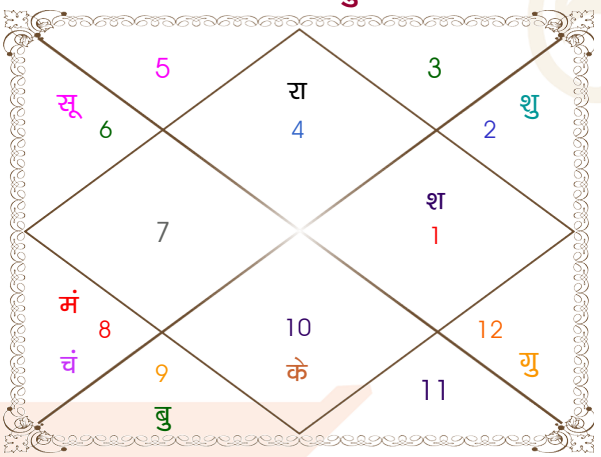

बलाबलज्ञानम्

त्रिंशांश कुंडली

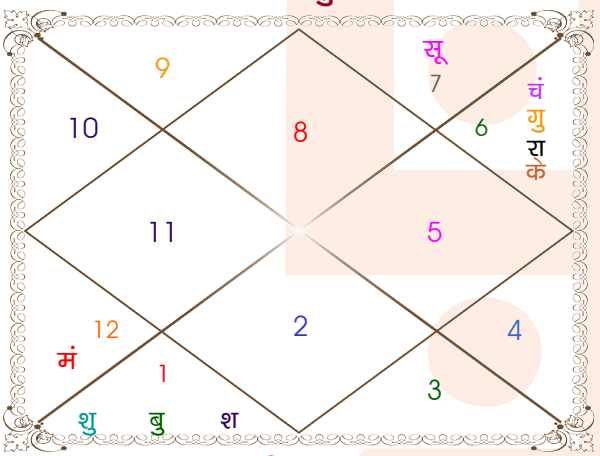

अरिष्टज्ञानम्

खवेदांश कुंडली

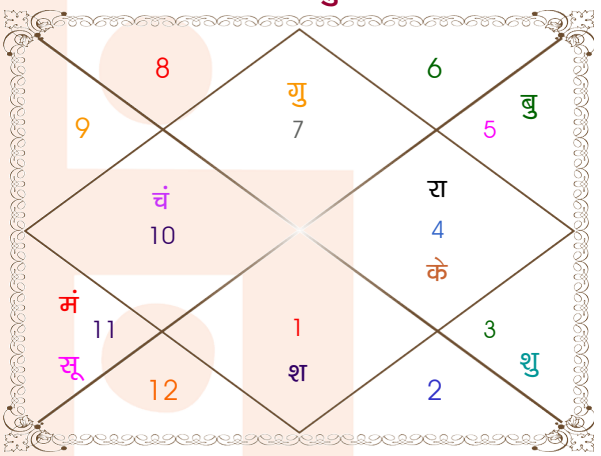

शुभाशुभज्ञानम्

अक्षवेदांश कुंडली

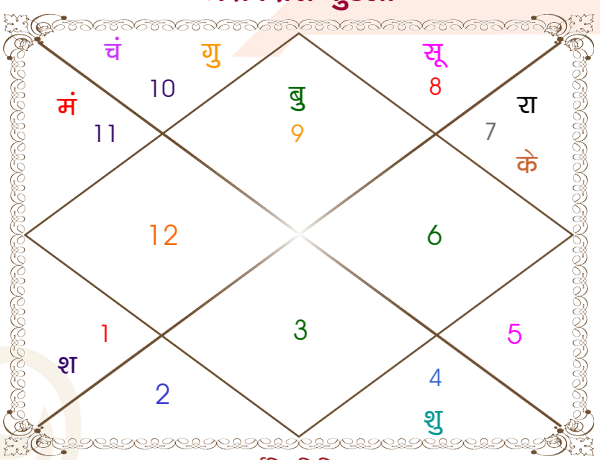

सर्वास्थितिविचारः

षष्ट्यंश कुंडली

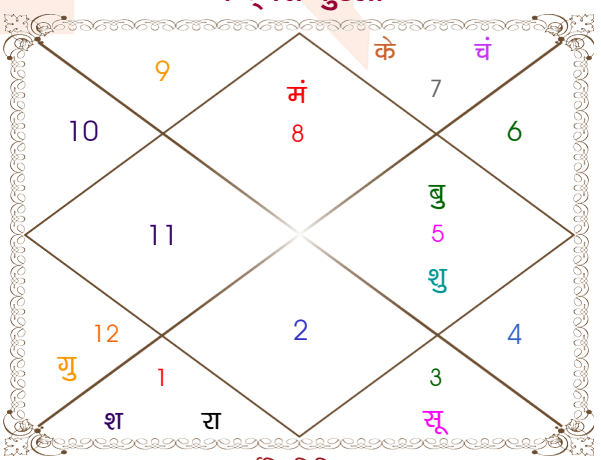

सर्वास्थितिविचारः

षोडशवर्ग सारणियाँ

षोडशवर्ग सारिणी

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	वृष	कुंभ	वृश्चि	वृश्चि	कुंभ	कन्या	मेष	मेष	मीन	कन्या
होरा	सिंह	कर्क	कर्क	कर्क	सिंह	कर्क	सिंह	सिंह	कर्क	कर्क
द्रेष्काण	मक	तुला	मीन	मीन	कुंभ	कन्या	मेष	मेष	मीन	कन्या
चतुर्थांश	कुंभ	वृश्चि	कुंभ	कुंभ	कुंभ	धनु	मेष	मेष	मीन	कन्या
सप्तमांश	वृष	सिंह	कर्क	कर्क	कुंभ	वृष	मेष	मेष	तुला	मेष
नवमांश	कन्या	वृष	तुला	तुला	तुला	मीन	मेष	मेष	कन्या	मीन
दशमांश	तुला	तुला	तुला	वृश्चि	मीन	सिंह	मेष	मेष	मक	कर्क
द्वादशांश	मीन	धनु	मीन	मीन	मीन	धनु	मेष	मेष	वृष	वृश्चि
षोडशांश	तुला	कन्या	कुंभ	कुंभ	कन्या	मेष	वृष	मेष	मीन	मीन
विंशांश	मिथु	वृष	कर्क	सिंह	कुंभ	कुंभ	वृष	मेष	धनु	धनु
चतुर्विंशांश	मेष	मेष	मेष	मेष	तुला	कुंभ	कन्या	सिंह	धनु	धनु
सप्तविंशांश	कर्क	कन्या	वृश्चि	वृश्चि	धनु	मीन	वृष	मेष	कर्क	मक
त्रिंशांश	वृश्चि	तुला	कन्या	मीन	मेष	कन्या	मेष	मेष	कन्या	कन्या
खवेदांश	तुला	कुंभ	मक	कुंभ	सिंह	तुला	मिथु	मेष	कर्क	कर्क
अक्षवेदांश	धनु	वृश्चि	मक	कुंभ	धनु	मक	कर्क	मेष	तुला	तुला
षष्ट्यंश	वृश्चि	मिथु	तुला	वृश्चि	सिंह	मीन	सिंह	मेष	मेष	तुला

वर्ग भेद

	षडवर्ग	सप्तवर्ग	दशवर्ग	षोडशवर्ग
सूर्य	0 ---	1 ---	1 ---	2 भेदक
चन्द्र	1 ---	2 किंसुक	2 पारिजात	3 कुसुम
मंगल	1 ---	1 ---	3 उत्तम	5 कन्दुक
बुध	0 ---	0 ---	1 ---	1 ---
गुरु	3 व्यंजन	3 व्यंजन	4 गोपुर	6 केरल
शुक्र	0 ---	0 ---	1 ---	3 कुसुम
शनि	0 ---	0 ---	0 ---	0 ---
राहु	2 किंसुक	2 किंसुक	2 पारिजात	2 भेदक
केतु	1 ---	1 ---	2 पारिजात	4 नागपुष्प

विंशोपक बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
षडवर्ग	10.80	11.25	15.05	14.45	11.55	7.30	5.50	10.30	8.40
सप्तवर्ग	12.05	12.48	14.23	14.38	11.18	7.30	5.50	11.48	9.78
दशवर्ग	10.38	10.98	16.10	12.78	13.33	8.95	5.38	10.03	9.85
षोडशवर्ग	10.28	9.45	14.73	13.85	13.60	10.20	5.38	9.10	8.48

मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	---	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	---	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

तात्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र
मंगल	मित्र	शत्रु	---	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र
बुध	शत्रु	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु
गुरु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
शुक्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	मित्र	शत्रु
शनि	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	---	मित्र	शत्रु
राहु	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	---

पंचधा मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	अतिमित्र	अतिमित्र	शत्रु	सम	सम	सम	सम	अधिशत्रु
चंद्र	अतिमित्र	---	शत्रु	अतिमित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	अधिशत्रु	सम
मंगल	अतिमित्र	सम	---	सम	अतिमित्र	शत्रु	शत्रु	अधिशत्रु	अतिमित्र
बुध	सम	सम	मित्र	---	शत्रु	अतिमित्र	मित्र	मित्र	शत्रु
गुरु	सम	अतिमित्र	अतिमित्र	अधिशत्रु	---	अधिशत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
शुक्र	सम	अधिशत्रु	शत्रु	अतिमित्र	शत्रु	---	सम	अतिमित्र	सम
शनि	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अतिमित्र	शत्रु	सम	---	अतिमित्र	अधिशत्रु
राहु	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	मित्र	शत्रु	अतिमित्र	अतिमित्र	---	अधिशत्रु
केतु	अधिशत्रु	सम	अतिमित्र	शत्रु	शत्रु	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	---

षट्बल तथा भावबल सारिणी

षट्बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	45	3	35	14	39	58	7
सप्तवर्गज बल	90	120	116	94	90	30	19
ओजयुग्मक बल	15	15	15	30	0	0	30
केन्द्र बल	60	60	60	60	30	15	15
द्रेष्काण बल	0	0	0	0	15	0	0
कुल स्थान बल	210	198	226	198	174	103	70
कुल दिग्बल	54	29	31	22	26	18	19
नतोन्नत बल	55	5	5	60	55	55	5
पक्ष बल	25	69	25	25	35	35	25
त्रिभाग बल	60	0	0	0	60	0	0
अब्द बल	0	0	0	0	0	15	0
मास बल	0	0	0	0	0	0	30
वार बल	0	45	0	0	0	0	0
होरा बल	60	0	0	0	0	0	0
अयन बल	49	57	3	47	29	43	18
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
कुल कालबल	249	177	33	132	178	147	78
कुल चेष्टाबल	0	0	39	16	56	11	13
कुल नैसर्गिक बल	60	51	17	26	34	43	9
कुल दृग्बल	5	-3	-3	9	-25	8	8
कुल षट्बल	579	452	343	402	443	330	198
रूप षट्बल	9.6	7.5	5.7	6.7	7.4	5.5	3.3
न्यूनतम आवश्यकता	5	6	5	7	7	6	5
अनुपात	1.9	1.3	1.1	1.0	1.1	1.0	0.7
संबंधित पद	1	2	3	6	4	5	7

इष्ट फल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
इष्ट फल	34.67	10.18	36.85	14.81	46.31	25.46	9.24
कष्ट फल	22.15	37.98	22.98	45.16	9.75	9.12	50.10

भाव बल

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधिपति बल	330	402	452	579	402	330	343	443	198	198	443	343
भावदिग्बल	30	50	50	0	20	10	60	40	10	30	10	40
भावदृष्टि बल	73	-3	22	50	25	19	33	39	43	1	63	69
कुल भाव बल	433	449	524	629	447	359	435	521	250	228	516	452
रूप भाव बल	7.2	7.5	8.7	10.5	7.5	6.0	7.3	8.7	4.2	3.8	8.6	7.5
संबंधित पद	9	6	2	1	7	10	8	3	11	12	4	5

उपग्रह एवं आरूढ़

उपग्रह	संक्षि	राशि	अंश	उच्च	स्थिति	नक्षत्र	पद	नं.
लग्न	ल	वृष	27:13:31	--	--	मृगशिरा	2	5
गुलिक	गु	कर्क	19:40:16	--	--	आश्लेषा	1	9
काल	का	सिंह	08:09:27	--	--	मघा	3	10
मृत्यु	मृ	मेष	26:11:10	--	--	भरणी	4	2
यमघंटक	यम	मिथु	11:52:09	--	--	आर्द्रा	2	6
अर्द्धप्रहर	अर्द्ध	वृष	20:54:40	--	--	रोहिणी	4	4
धूम	धू	कर्क	09:23:55	--	--	पुष्य	2	8
व्यतिपात	व्य	धनु	20:36:05	--	--	पूर्वाषाढ़ा	3	20
परिवेश	परि	मिथु	20:36:05	उच्च	--	पुनर्वसु	1	7
इन्द्रचाप	इ	मक	09:23:55	--	--	उत्तराषाढ़ा	4	21
उपकेतु	उप	मक	26:03:55	--	--	धनिष्ठा	1	23

प्राणपद	:	वृश्चि	14:38:40	कारकाँश लग्न	:	वृष	24:35:13
भाव लग्न	:	सिंह	10:09:16	होरा लग्न	:	तुला	23:05:00
घटी लग्न	:	मीन	00:42:36	वर्णद लग्न	:	धनु	20:18:31

उपग्रह कुंडली

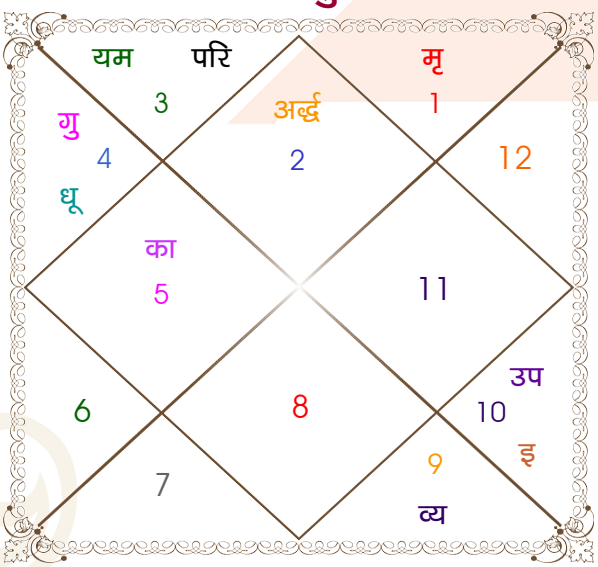

आरूढ़ कुंडली

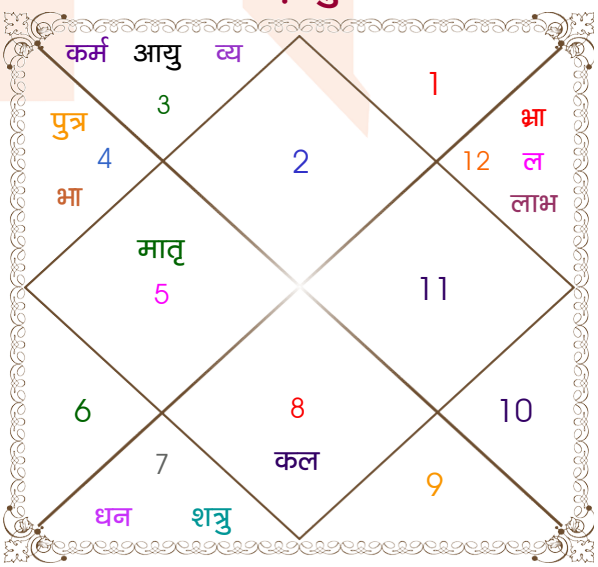

प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग

	कुं	मी	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुल
शनि	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	8
गुरु	1	0	0	1	0	1	0	0	0	0	0	1	4
मंगल	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	8
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
शुक्र	0	1	0	0	0	0	0	1	1	0	0	0	3
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	7
चंद्र	0	0	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1	4
लग्न	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	0	0	6
कुल	5	3	4	4	2	5	4	4	5	4	4	4	48

चंद्र का अष्टकवर्ग

	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	कुल
शनि	0	0	0	1	0	0	0	1	0	1	1	0	4
गुरु	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	7
मंगल	0	1	1	0	1	1	0	0	0	1	1	0	6
सूर्य	1	1	0	0	0	1	0	0	1	1	1	0	6
शुक्र	0	1	1	1	0	0	0	1	1	1	0	1	7
बुध	1	1	0	1	0	1	1	1	0	1	1	0	8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	1	0	7
लग्न	0	0	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	4
कुल	3	5	3	4	3	5	2	4	5	6	6	3	49

मंगल का अष्टकवर्ग

	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	कुल
शनि	1	1	1	1	0	1	0	0	1	0	0	1	7
गुरु	0	0	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	1	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	5
शुक्र	1	0	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	4
बुध	0	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	4
चंद्र	0	0	1	0	0	1	0	0	0	0	1	0	3
लग्न	0	0	0	1	1	0	1	0	1	0	0	1	5
कुल	4	4	2	5	2	4	2	4	5	2	3	2	39

बुध का अष्टकवर्ग

	कुं	मी	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुल
शनि	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	8
गुरु	1	0	1	0	0	1	1	0	0	0	0	0	4
मंगल	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	8
सूर्य	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	1	5
शुक्र	1	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	8
बुध	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	8
चंद्र	1	0	1	0	1	0	1	1	0	0	1	0	6
लग्न	1	1	0	1	1	0	1	0	1	0	1	0	7
कुल	7	1	5	4	6	6	5	2	4	4	7	3	54

गुरु का अष्टकवर्ग

	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कं	सि	कुल
शनि	1	0	0	0	0	0	1	0	0	1	0	1	4
गुरु	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	8
मंगल	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	7
सूर्य	1	1	1	1	0	1	1	1	1	0	0	1	9
शुक्र	1	0	0	1	1	1	0	0	1	0	0	1	6
बुध	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	1	0	8
चंद्र	1	0	0	1	0	0	1	0	1	0	1	0	5
लग्न	1	1	1	0	1	1	1	0	1	1	0	1	9
कुल	7	4	5	6	2	5	6	2	6	5	3	5	56

शुक्र का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	0	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	7
गुरु	1	1	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	5
मंगल	1	0	0	1	0	1	1	0	0	1	1	0	6
सूर्य	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	0	0	3
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	9
बुध	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0	0	0	5
चंद्र	0	0	1	1	0	1	1	1	1	1	1	1	9
लग्न	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	8
कुल	4	3	6	7	3	4	3	3	6	7	4	2	52

शनि का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	1	0	4
मंगल	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	0	1	6
सूर्य	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	7
शुक्र	0	0	0	0	0	1	0	0	0	0	1	1	3
बुध	0	0	0	1	0	1	1	1	1	1	0	0	6
चंद्र	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	0	3
लग्न	0	1	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	6
कुल	2	2	1	3	5	6	3	2	2	4	5	4	39

लग्न का अष्टकवर्ग

	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	कुल
शनि	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	0	1	6
गुरु	1	1	1	0	1	1	0	1	1	1	1	0	9
मंगल	0	0	0	1	1	0	1	0	1	0	0	1	5
सूर्य	1	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	6
शुक्र	1	1	1	1	0	0	1	1	0	0	0	1	7
बुध	1	0	1	0	1	0	1	1	0	1	1	0	7
चंद्र	0	0	0	1	1	1	0	0	1	0	0	1	5
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
कुल	4	3	6	3	5	3	4	4	5	4	3	5	49

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	2	2	1	3	5	6	3	2	2	4	5	4	39
गुरु	2	6	5	3	5	7	4	5	6	2	5	6	56
मंगल	4	2	4	5	2	3	2	4	4	2	5	2	39
सूर्य	4	4	2	5	4	4	5	4	4	4	5	3	48
शुक्र	4	3	6	7	3	4	3	3	6	7	4	2	52
बुध	5	4	6	6	5	2	4	4	7	3	7	1	54
चंद्र	5	2	4	5	6	6	3	3	5	3	4	3	49
बिन्दु	26	23	28	34	30	32	24	25	34	25	35	21	337
रेखा	30	33	28	22	26	24	32	31	22	31	21	35	335

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	0	0	1	3	4	2	0	0	2	4	2	18
गुरु	0	4	1	0	3	5	0	2	4	0	1	3	23
मंगल	2	0	2	3	0	1	0	2	2	0	3	0	15
सूर्य	0	0	0	2	0	0	3	1	0	0	3	0	9
शुक्र	1	0	3	5	0	1	0	1	3	4	1	0	19
बुध	0	2	2	5	0	0	0	3	2	1	3	0	18
चंद्र	0	0	1	2	1	4	0	0	0	1	1	0	10
रेखा	3	6	9	18	7	15	5	9	11	8	16	5	112

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	0	0	1	3	4	2	0	0	0	4	2	16
गुरु	0	4	0	0	3	5	0	2	1	0	1	3	19
मंगल	2	0	1	3	0	1	0	2	2	0	3	0	14
सूर्य	0	0	0	2	0	0	3	1	0	0	3	0	9
शुक्र	1	0	2	5	0	1	0	1	3	3	1	0	17
बुध	0	2	2	5	0	0	0	3	2	0	3	0	17
चंद्र	0	0	0	2	1	4	0	0	0	0	1	0	8
रेखा	3	6	5	18	7	15	5	9	8	3	16	5	100

शोध्य पिंड

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	70	49	106	131	167	109	136
ग्रह पिंड	43	50	90	69	86	45	80
शोध्य पिंड	113	99	196	200	253	154	216

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग

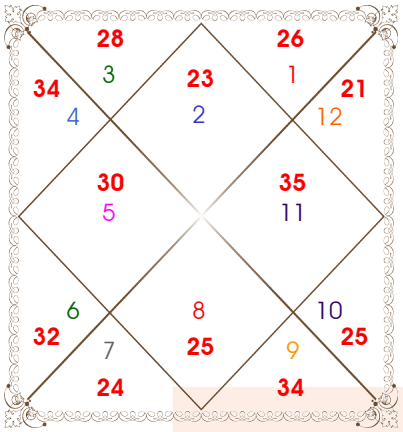

सूर्य का अष्टकवर्ग

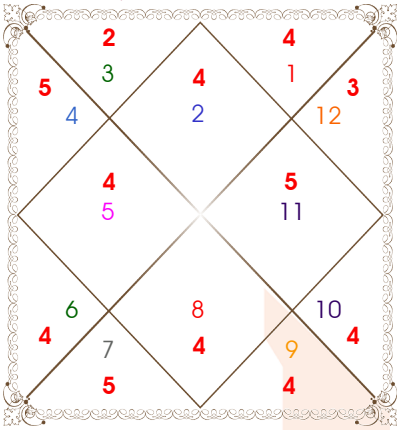

चंद्र का अष्टकवर्ग

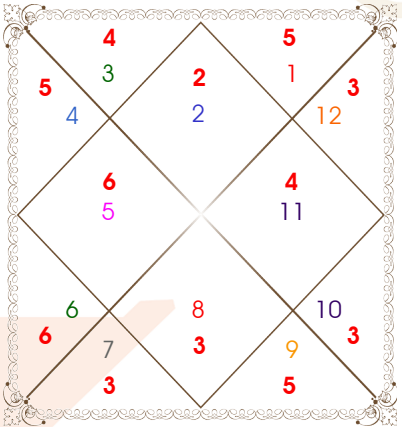

मंगल का अष्टकवर्ग

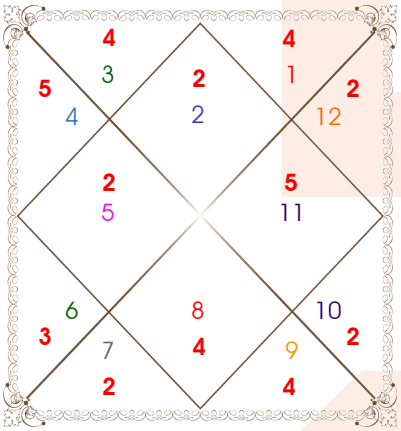

बुध का अष्टकवर्ग

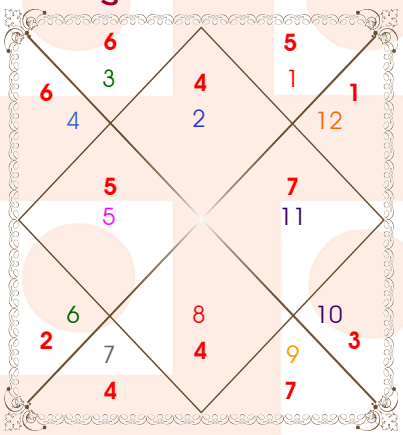

गुरू का अष्टकवर्ग

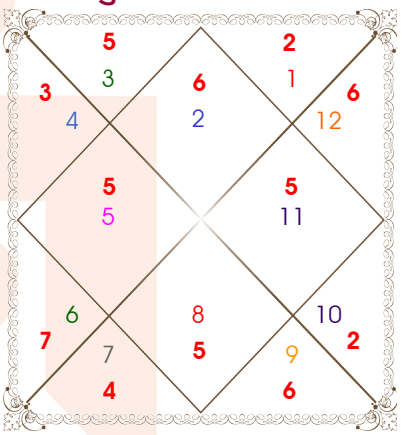

शुक्र का अष्टकवर्ग

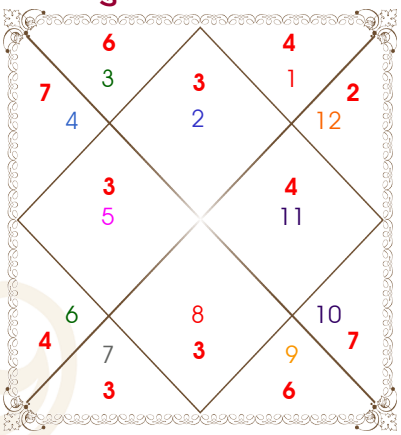

शनि का अष्टकवर्ग

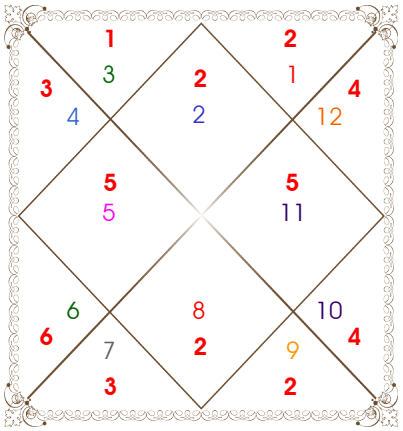

लग्न का अष्टकवर्ग

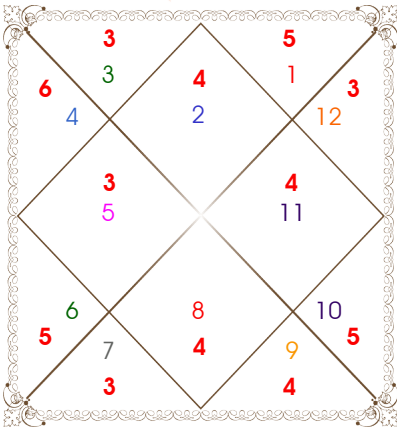

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शनि 6 वर्ष 8 मास 10 दिन

शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष	
10/03/1969		20/11/1975		19/11/1992		20/11/1999		20/11/2019	
20/11/1975		19/11/1992		20/11/1999		20/11/2019		19/11/2025	
	00/00/0000	बुध	17/04/1978	केतु	17/04/1993	शुक्र	21/03/2003	सूर्य	08/03/2020
	00/00/0000	केतु	15/04/1979	शुक्र	17/06/1994	सूर्य	21/03/2004	चंद्र	07/09/2020
	00/00/0000	शुक्र	13/02/1982	सूर्य	23/10/1994	चंद्र	19/11/2005	मंगल	13/01/2021
	00/00/0000	सूर्य	20/12/1982	चंद्र	24/05/1995	मंगल	19/01/2007	राहु	08/12/2021
	10/03/1969	चंद्र	20/05/1984	मंगल	20/10/1995	राहु	19/01/2010	गुरु	26/09/2022
चंद्र	24/05/1969	मंगल	18/05/1985	राहु	07/11/1996	गुरु	19/09/2012	शनि	08/09/2023
मंगल	03/07/1970	राहु	05/12/1987	गुरु	14/10/1997	शनि	20/11/2015	बुध	14/07/2024
राहु	09/05/1973	गुरु	12/03/1990	शनि	23/11/1998	बुध	20/09/2018	केतु	19/11/2024
गुरु	20/11/1975	शनि	19/11/1992	बुध	20/11/1999	केतु	20/11/2019	शुक्र	19/11/2025

चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष	
19/11/2025		20/11/2035		20/11/2042		19/11/2060		19/11/2076	
20/11/2035		20/11/2042		19/11/2060		19/11/2076		00/00/0000	
चंद्र	20/09/2026	मंगल	17/04/2036	राहु	02/08/2045	गुरु	07/01/2063	शनि	23/11/2079
मंगल	21/04/2027	राहु	06/05/2037	गुरु	26/12/2047	शनि	21/07/2065	बुध	02/08/2082
राहु	20/10/2028	गुरु	11/04/2038	शनि	01/11/2050	बुध	26/10/2067	केतु	11/09/2083
गुरु	19/02/2030	शनि	21/05/2039	बुध	21/05/2053	केतु	01/10/2068	शुक्र	10/11/2086
शनि	20/09/2031	बुध	17/05/2040	केतु	08/06/2054	शुक्र	02/06/2071	सूर्य	23/10/2087
बुध	18/02/2033	केतु	14/10/2040	शुक्र	08/06/2057	सूर्य	21/03/2072	चंद्र	10/03/2089
केतु	19/09/2033	शुक्र	14/12/2041	सूर्य	03/05/2058	चंद्र	21/07/2073		00/00/0000
शुक्र	21/05/2035	सूर्य	21/04/2042	चंद्र	02/11/2059	मंगल	26/06/2074		00/00/0000
सूर्य	20/11/2035	चंद्र	20/11/2042	मंगल	19/11/2060	राहु	19/11/2076		00/00/0000

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल शनि 6 वर्ष 8 मा 5 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - चंद्र		शनि - मंगल		शनि - राहु		शनि - गुरु		बुध - बुध	
10/03/1969		24/05/1969		03/07/1970		09/05/1973		20/11/1975	
24/05/1969		03/07/1970		09/05/1973		20/11/1975		17/04/1978	
	00/00/0000	मंगल	16/06/1969	राहु	06/12/1970	गुरु	09/09/1973	बुध	23/03/1976
	00/00/0000	राहु	16/08/1969	गुरु	24/04/1971	शनि	02/02/1974	केतु	14/05/1976
	00/00/0000	गुरु	09/10/1969	शनि	05/10/1971	बुध	14/06/1974	शुक्र	07/10/1976
	00/00/0000	शनि	12/12/1969	बुध	01/03/1972	केतु	06/08/1974	सूर्य	20/11/1976
	00/00/0000	बुध	08/02/1970	केतु	01/05/1972	शुक्र	08/01/1975	चंद्र	02/02/1977
	00/00/0000	केतु	03/03/1970	शुक्र	21/10/1972	सूर्य	23/02/1975	मंगल	25/03/1977
	10/03/1969	शुक्र	10/05/1970	सूर्य	12/12/1972	चंद्र	11/05/1975	राहु	04/08/1977
शुक्र	25/04/1969	सूर्य	30/05/1970	चंद्र	09/03/1973	मंगल	04/07/1975	गुरु	29/11/1977
सूर्य	24/05/1969	चंद्र	03/07/1970	मंगल	09/05/1973	राहु	20/11/1975	शनि	17/04/1978

बुध - केतु		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - चंद्र		बुध - मंगल	
17/04/1978		15/04/1979		13/02/1982		20/12/1982		20/05/1984	
15/04/1979		13/02/1982		20/12/1982		20/05/1984		18/05/1985	
केतु	09/05/1978	शुक्र	04/10/1979	सूर्य	28/02/1982	चंद्र	01/02/1983	मंगल	11/06/1984
शुक्र	08/07/1978	सूर्य	25/11/1979	चंद्र	26/03/1982	मंगल	03/03/1983	राहु	04/08/1984
सूर्य	26/07/1978	चंद्र	19/02/1980	मंगल	13/04/1982	राहु	20/05/1983	गुरु	21/09/1984
चंद्र	25/08/1978	मंगल	20/04/1980	राहु	30/05/1982	गुरु	28/07/1983	शनि	18/11/1984
मंगल	15/09/1978	राहु	22/09/1980	गुरु	10/07/1982	शनि	18/10/1983	बुध	08/01/1985
राहु	09/11/1978	गुरु	07/02/1981	शनि	28/08/1982	बुध	30/12/1983	केतु	29/01/1985
गुरु	27/12/1978	शनि	21/07/1981	बुध	11/10/1982	केतु	29/01/1984	शुक्र	30/03/1985
शनि	22/02/1979	बुध	14/12/1981	केतु	29/10/1982	शुक्र	25/04/1984	सूर्य	17/04/1985
बुध	15/04/1979	केतु	13/02/1982	शुक्र	20/12/1982	सूर्य	20/05/1984	चंद्र	18/05/1985

बुध - राहु		बुध - गुरु		बुध - शनि		केतु - केतु		केतु - शुक्र	
18/05/1985		05/12/1987		12/03/1990		19/11/1992		17/04/1993	
05/12/1987		12/03/1990		19/11/1992		17/04/1993		17/06/1994	
राहु	04/10/1985	गुरु	24/03/1988	शनि	15/08/1990	केतु	28/11/1992	शुक्र	27/06/1993
गुरु	06/02/1986	शनि	03/08/1988	बुध	01/01/1991	शुक्र	23/12/1992	सूर्य	19/07/1993
शनि	03/07/1986	बुध	28/11/1988	केतु	27/02/1991	सूर्य	30/12/1992	चंद्र	23/08/1993
बुध	12/11/1986	केतु	15/01/1989	शुक्र	10/08/1991	चंद्र	12/01/1993	मंगल	17/09/1993
केतु	05/01/1987	शुक्र	02/06/1989	सूर्य	28/09/1991	मंगल	20/01/1993	राहु	20/11/1993
शुक्र	10/06/1987	सूर्य	13/07/1989	चंद्र	19/12/1991	राहु	12/02/1993	गुरु	16/01/1994
सूर्य	26/07/1987	चंद्र	20/09/1989	मंगल	15/02/1992	गुरु	04/03/1993	शनि	24/03/1994
चंद्र	12/10/1987	मंगल	08/11/1989	राहु	11/07/1992	शनि	27/03/1993	बुध	24/05/1994
मंगल	05/12/1987	राहु	12/03/1990	गुरु	19/11/1992	बुध	17/04/1993	केतु	17/06/1994

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - सूर्य		केतु - चंद्र		केतु - मंगल		केतु - राहु		केतु - गुरु	
17/06/1994		23/10/1994		24/05/1995		20/10/1995		07/11/1996	
23/10/1994		24/05/1995		20/10/1995		07/11/1996		14/10/1997	
सूर्य	24/06/1994	चंद्र	10/11/1994	मंगल	02/06/1995	राहु	17/12/1995	गुरु	22/12/1996
चंद्र	04/07/1994	मंगल	22/11/1994	राहु	24/06/1995	गुरु	06/02/1996	शनि	14/02/1997
मंगल	12/07/1994	राहु	24/12/1994	गुरु	14/07/1995	शनि	07/04/1996	बुध	04/04/1997
राहु	31/07/1994	गुरु	22/01/1995	शनि	07/08/1995	बुध	31/05/1996	केतु	24/04/1997
गुरु	17/08/1994	शनि	24/02/1995	बुध	28/08/1995	केतु	22/06/1996	शुक्र	19/06/1997
शनि	06/09/1994	बुध	27/03/1995	केतु	06/09/1995	शुक्र	25/08/1996	सूर्य	06/07/1997
बुध	24/09/1994	केतु	08/04/1995	शुक्र	01/10/1995	सूर्य	14/09/1996	चंद्र	04/08/1997
केतु	02/10/1994	शुक्र	14/05/1995	सूर्य	08/10/1995	चंद्र	16/10/1996	मंगल	24/08/1997
शुक्र	23/10/1994	सूर्य	24/05/1995	चंद्र	20/10/1995	मंगल	07/11/1996	राहु	14/10/1997

केतु - शनि		केतु - बुध		शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र	
14/10/1997		23/11/1998		20/11/1999		21/03/2003		21/03/2004	
23/11/1998		20/11/1999		21/03/2003		21/03/2004		19/11/2005	
शनि	17/12/1997	बुध	13/01/1999	शुक्र	10/06/2000	सूर्य	09/04/2003	चंद्र	10/05/2004
बुध	12/02/1998	केतु	03/02/1999	सूर्य	10/08/2000	चंद्र	09/05/2003	मंगल	15/06/2004
केतु	08/03/1998	शुक्र	04/04/1999	चंद्र	19/11/2000	मंगल	30/05/2003	राहु	14/09/2004
शुक्र	14/05/1998	सूर्य	23/04/1999	मंगल	29/01/2001	राहु	24/07/2003	गुरु	04/12/2004
सूर्य	04/06/1998	चंद्र	23/05/1999	राहु	31/07/2001	गुरु	11/09/2003	शनि	11/03/2005
चंद्र	07/07/1998	मंगल	13/06/1999	गुरु	09/01/2002	शनि	08/11/2003	बुध	05/06/2005
मंगल	31/07/1998	राहु	06/08/1999	शनि	21/07/2002	बुध	29/12/2003	केतु	10/07/2005
राहु	30/09/1998	गुरु	24/09/1999	बुध	09/01/2003	केतु	20/01/2004	शुक्र	20/10/2005
गुरु	23/11/1998	शनि	20/11/1999	केतु	21/03/2003	शुक्र	21/03/2004	सूर्य	19/11/2005

शुक्र - मंगल		शुक्र - राहु		शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि		शुक्र - बुध	
19/11/2005		19/01/2007		19/01/2010		19/09/2012		20/11/2015	
19/01/2007		19/01/2010		19/09/2012		20/11/2015		20/09/2018	
मंगल	14/12/2005	राहु	03/07/2007	गुरु	29/05/2010	शनि	21/03/2013	बुध	14/04/2016
राहु	16/02/2006	गुरु	26/11/2007	शनि	30/10/2010	बुध	01/09/2013	केतु	14/06/2016
गुरु	14/04/2006	शनि	17/05/2008	बुध	17/03/2011	केतु	08/11/2013	शुक्र	03/12/2016
शनि	20/06/2006	बुध	20/10/2008	केतु	13/05/2011	शुक्र	19/05/2014	सूर्य	24/01/2017
बुध	20/08/2006	केतु	23/12/2008	शुक्र	22/10/2011	सूर्य	16/07/2014	चंद्र	20/04/2017
केतु	14/09/2006	शुक्र	23/06/2009	सूर्य	10/12/2011	चंद्र	21/10/2014	मंगल	20/06/2017
शुक्र	24/11/2006	सूर्य	17/08/2009	चंद्र	29/02/2012	मंगल	27/12/2014	राहु	22/11/2017
सूर्य	15/12/2006	चंद्र	16/11/2009	मंगल	26/04/2012	राहु	19/06/2015	गुरु	09/04/2018
चंद्र	19/01/2007	मंगल	19/01/2010	राहु	19/09/2012	गुरु	20/11/2015	शनि	20/09/2018

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - केतु		सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल		सूर्य - राहु	
20/09/2018		20/11/2019		08/03/2020		07/09/2020		13/01/2021	
20/11/2019		08/03/2020		07/09/2020		13/01/2021		08/12/2021	
केतु	15/10/2018	सूर्य	25/11/2019	चंद्र	24/03/2020	मंगल	15/09/2020	राहु	03/03/2021
शुक्र	25/12/2018	चंद्र	04/12/2019	मंगल	03/04/2020	राहु	04/10/2020	गुरु	16/04/2021
सूर्य	15/01/2019	मंगल	11/12/2019	राहु	01/05/2020	गुरु	21/10/2020	शनि	07/06/2021
चंद्र	19/02/2019	राहु	27/12/2019	गुरु	25/05/2020	शनि	10/11/2020	बुध	24/07/2021
मंगल	16/03/2019	गुरु	11/01/2020	शनि	23/06/2020	बुध	28/11/2020	केतु	12/08/2021
राहु	19/05/2019	शनि	28/01/2020	बुध	19/07/2020	केतु	06/12/2020	शुक्र	06/10/2021
गुरु	15/07/2019	बुध	13/02/2020	केतु	29/07/2020	शुक्र	27/12/2020	सूर्य	22/10/2021
शनि	20/09/2019	केतु	19/02/2020	शुक्र	29/08/2020	सूर्य	02/01/2021	चंद्र	18/11/2021
बुध	20/11/2019	शुक्र	08/03/2020	सूर्य	07/09/2020	चंद्र	13/01/2021	मंगल	08/12/2021

सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि		सूर्य - बुध		सूर्य - केतु		सूर्य - शुक्र	
08/12/2021		26/09/2022		08/09/2023		14/07/2024		19/11/2024	
26/09/2022		08/09/2023		14/07/2024		19/11/2024		19/11/2025	
गुरु	16/01/2022	शनि	20/11/2022	बुध	22/10/2023	केतु	22/07/2024	शुक्र	19/01/2025
शनि	03/03/2022	बुध	08/01/2023	केतु	09/11/2023	शुक्र	12/08/2024	सूर्य	06/02/2025
बुध	13/04/2022	केतु	28/01/2023	शुक्र	31/12/2023	सूर्य	18/08/2024	चंद्र	09/03/2025
केतु	30/04/2022	शुक्र	27/03/2023	सूर्य	15/01/2024	चंद्र	29/08/2024	मंगल	30/03/2025
शुक्र	18/06/2022	सूर्य	13/04/2023	चंद्र	10/02/2024	मंगल	06/09/2024	राहु	24/05/2025
सूर्य	03/07/2022	चंद्र	12/05/2023	मंगल	28/02/2024	राहु	25/09/2024	गुरु	11/07/2025
चंद्र	27/07/2022	मंगल	01/06/2023	राहु	15/04/2024	गुरु	12/10/2024	शनि	07/09/2025
मंगल	13/08/2022	राहु	24/07/2023	गुरु	26/05/2024	शनि	01/11/2024	बुध	29/10/2025
राहु	26/09/2022	गुरु	08/09/2023	शनि	14/07/2024	बुध	19/11/2024	केतु	19/11/2025

चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल		चंद्र - राहु		चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि	
19/11/2025		20/09/2026		21/04/2027		20/10/2028		19/02/2030	
20/09/2026		21/04/2027		20/10/2028		19/02/2030		20/09/2031	
चंद्र	15/12/2025	मंगल	02/10/2026	राहु	12/07/2027	गुरु	24/12/2028	शनि	21/05/2030
मंगल	01/01/2026	राहु	03/11/2026	गुरु	23/09/2027	शनि	11/03/2029	बुध	11/08/2030
राहु	16/02/2026	गुरु	02/12/2026	शनि	19/12/2027	बुध	19/05/2029	केतु	14/09/2030
गुरु	29/03/2026	शनि	04/01/2027	बुध	05/03/2028	केतु	16/06/2029	शुक्र	19/12/2030
शनि	16/05/2026	बुध	03/02/2027	केतु	06/04/2028	शुक्र	05/09/2029	सूर्य	17/01/2031
बुध	28/06/2026	केतु	16/02/2027	शुक्र	07/07/2028	सूर्य	30/09/2029	चंद्र	06/03/2031
केतु	16/07/2026	शुक्र	23/03/2027	सूर्य	03/08/2028	चंद्र	09/11/2029	मंगल	09/04/2031
शुक्र	05/09/2026	सूर्य	03/04/2027	चंद्र	18/09/2028	मंगल	08/12/2029	राहु	05/07/2031
सूर्य	20/09/2026	चंद्र	21/04/2027	मंगल	20/10/2028	राहु	19/02/2030	गुरु	20/09/2031

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - बुध		चंद्र - केतु		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल	
20/09/2031		18/02/2033		19/09/2033		21/05/2035		20/11/2035	
18/02/2033		19/09/2033		21/05/2035		20/11/2035		17/04/2036	
बुध	02/12/2031	केतु	03/03/2033	शुक्र	30/12/2033	सूर्य	30/05/2035	मंगल	29/11/2035
केतु	01/01/2032	शुक्र	07/04/2033	सूर्य	29/01/2034	चंद्र	15/06/2035	राहु	21/12/2035
शुक्र	28/03/2032	सूर्य	18/04/2033	चंद्र	21/03/2034	मंगल	25/06/2035	गुरु	10/01/2036
सूर्य	23/04/2032	चंद्र	06/05/2033	मंगल	26/04/2034	राहु	23/07/2035	शनि	02/02/2036
चंद्र	05/06/2032	मंगल	18/05/2033	राहु	26/07/2034	गुरु	16/08/2035	बुध	24/02/2036
मंगल	05/07/2032	राहु	19/06/2033	गुरु	15/10/2034	शनि	14/09/2035	केतु	03/03/2036
राहु	20/09/2032	गुरु	18/07/2033	शनि	19/01/2035	बुध	10/10/2035	शुक्र	28/03/2036
गुरु	28/11/2032	शनि	20/08/2033	बुध	16/04/2035	केतु	20/10/2035	सूर्य	05/04/2036
शनि	18/02/2033	बुध	19/09/2033	केतु	21/05/2035	शुक्र	20/11/2035	चंद्र	17/04/2036

मंगल - राहु		मंगल - गुरु		मंगल - शनि		मंगल - बुध		मंगल - केतु	
17/04/2036		06/05/2037		11/04/2038		21/05/2039		17/05/2040	
06/05/2037		11/04/2038		21/05/2039		17/05/2040		14/10/2040	
राहु	14/06/2036	गुरु	20/06/2037	शनि	15/06/2038	बुध	12/07/2039	केतु	26/05/2040
गुरु	04/08/2036	शनि	13/08/2037	बुध	11/08/2038	केतु	02/08/2039	शुक्र	20/06/2040
शनि	03/10/2036	बुध	30/09/2037	केतु	03/09/2038	शुक्र	01/10/2039	सूर्य	27/06/2040
बुध	27/11/2036	केतु	20/10/2037	शुक्र	10/11/2038	सूर्य	19/10/2039	चंद्र	10/07/2040
केतु	19/12/2036	शुक्र	16/12/2037	सूर्य	30/11/2038	चंद्र	18/11/2039	मंगल	19/07/2040
शुक्र	21/02/2037	सूर्य	02/01/2038	चंद्र	03/01/2039	मंगल	09/12/2039	राहु	10/08/2040
सूर्य	12/03/2037	चंद्र	30/01/2038	मंगल	27/01/2039	राहु	02/02/2040	गुरु	30/08/2040
चंद्र	13/04/2037	मंगल	19/02/2038	राहु	28/03/2039	गुरु	21/03/2040	शनि	22/09/2040
मंगल	06/05/2037	राहु	11/04/2038	गुरु	21/05/2039	शनि	17/05/2040	बुध	14/10/2040

मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र		राहु - राहु		राहु - गुरु	
14/10/2040		14/12/2041		21/04/2042		20/11/2042		02/08/2045	
14/12/2041		21/04/2042		20/11/2042		02/08/2045		26/12/2047	
शुक्र	24/12/2040	सूर्य	20/12/2041	चंद्र	08/05/2042	राहु	17/04/2043	गुरु	27/11/2045
सूर्य	14/01/2041	चंद्र	31/12/2041	मंगल	21/05/2042	गुरु	26/08/2043	शनि	14/04/2046
चंद्र	18/02/2041	मंगल	07/01/2042	राहु	22/06/2042	शनि	29/01/2044	बुध	17/08/2046
मंगल	15/03/2041	राहु	26/01/2042	गुरु	20/07/2042	बुध	17/06/2044	केतु	07/10/2046
राहु	18/05/2041	गुरु	12/02/2042	शनि	23/08/2042	केतु	13/08/2044	शुक्र	02/03/2047
गुरु	14/07/2041	शनि	05/03/2042	बुध	22/09/2042	शुक्र	25/01/2045	सूर्य	15/04/2047
शनि	19/09/2041	बुध	23/03/2042	केतु	04/10/2042	सूर्य	15/03/2045	चंद्र	27/06/2047
बुध	19/11/2041	केतु	30/03/2042	शुक्र	09/11/2042	चंद्र	05/06/2045	मंगल	17/08/2047
केतु	14/12/2041	शुक्र	21/04/2042	सूर्य	20/11/2042	मंगल	02/08/2045	राहु	26/12/2047

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - शनि		राहु - बुध		राहु - केतु		राहु - शुक्र		राहु - सूर्य	
26/12/2047		01/11/2050		21/05/2053		08/06/2054		08/06/2057	
01/11/2050		21/05/2053		08/06/2054		08/06/2057		03/05/2058	
शनि	08/06/2048	बुध	13/03/2051	केतु	12/06/2053	शुक्र	08/12/2054	सूर्य	24/06/2057
बुध	03/11/2048	केतु	07/05/2051	शुक्र	15/08/2053	सूर्य	01/02/2055	चंद्र	22/07/2057
केतु	02/01/2049	शुक्र	09/10/2051	सूर्य	03/09/2053	चंद्र	03/05/2055	मंगल	10/08/2057
शुक्र	25/06/2049	सूर्य	24/11/2051	चंद्र	05/10/2053	मंगल	06/07/2055	राहु	28/09/2057
सूर्य	16/08/2049	चंद्र	10/02/2052	मंगल	28/10/2053	राहु	17/12/2055	गुरु	11/11/2057
चंद्र	11/11/2049	मंगल	04/04/2052	राहु	24/12/2053	गुरु	11/05/2056	शनि	02/01/2058
मंगल	10/01/2050	राहु	22/08/2052	गुरु	13/02/2054	शनि	01/11/2056	बुध	18/02/2058
राहु	16/06/2050	गुरु	24/12/2052	शनि	15/04/2054	बुध	05/04/2057	केतु	09/03/2058
गुरु	01/11/2050	शनि	21/05/2053	बुध	08/06/2054	केतु	08/06/2057	शुक्र	03/05/2058

राहु - चंद्र		राहु - मंगल		गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - बुध	
03/05/2058		02/11/2059		19/11/2060		07/01/2063		21/07/2065	
02/11/2059		19/11/2060		07/01/2063		21/07/2065		26/10/2067	
चंद्र	17/06/2058	मंगल	24/11/2059	गुरु	03/03/2061	शनि	03/06/2063	बुध	15/11/2065
मंगल	19/07/2058	राहु	20/01/2060	शनि	04/07/2061	बुध	12/10/2063	केतु	02/01/2066
राहु	10/10/2058	गुरु	12/03/2060	बुध	23/10/2061	केतु	05/12/2063	शुक्र	20/05/2066
गुरु	22/12/2058	शनि	11/05/2060	केतु	07/12/2061	शुक्र	07/05/2064	सूर्य	01/07/2066
शनि	18/03/2059	बुध	05/07/2060	शुक्र	16/04/2062	सूर्य	22/06/2064	चंद्र	08/09/2066
बुध	04/06/2059	केतु	27/07/2060	सूर्य	25/05/2062	चंद्र	07/09/2064	मंगल	26/10/2066
केतु	06/07/2059	शुक्र	29/09/2060	चंद्र	29/07/2062	मंगल	31/10/2064	राहु	27/02/2067
शुक्र	05/10/2059	सूर्य	18/10/2060	मंगल	12/09/2062	राहु	19/03/2065	गुरु	17/06/2067
सूर्य	02/11/2059	चंद्र	19/11/2060	राहु	07/01/2063	गुरु	21/07/2065	शनि	26/10/2067

गुरु - केतु		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल	
26/10/2067		01/10/2068		02/06/2071		21/03/2072		21/07/2073	
01/10/2068		02/06/2071		21/03/2072		21/07/2073		26/06/2074	
केतु	15/11/2067	शुक्र	13/03/2069	सूर्य	17/06/2071	चंद्र	30/04/2072	मंगल	09/08/2073
शुक्र	11/01/2068	सूर्य	30/04/2069	चंद्र	11/07/2071	मंगल	29/05/2072	राहु	30/09/2073
सूर्य	28/01/2068	चंद्र	21/07/2069	मंगल	28/07/2071	राहु	10/08/2072	गुरु	14/11/2073
चंद्र	26/02/2068	मंगल	15/09/2069	राहु	10/09/2071	गुरु	14/10/2072	शनि	07/01/2074
मंगल	17/03/2068	राहु	09/02/2070	गुरु	19/10/2071	शनि	30/12/2072	बुध	24/02/2074
राहु	07/05/2068	गुरु	18/06/2070	शनि	04/12/2071	बुध	09/03/2073	केतु	16/03/2074
गुरु	21/06/2068	शनि	20/11/2070	बुध	15/01/2072	केतु	06/04/2073	शुक्र	12/05/2074
शनि	14/08/2068	बुध	07/04/2071	केतु	01/02/2072	शुक्र	26/06/2073	सूर्य	29/05/2074
बुध	01/10/2068	केतु	02/06/2071	शुक्र	21/03/2072	सूर्य	21/07/2073	चंद्र	26/06/2074

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

चंद्र - चंद्र - गुरु	
16/02/2026 15:01	
29/03/2026 05:01	
गुरु	22/02/2026 00:53
शनि	28/02/2026 11:06
बुध	06/03/2026 05:05
केतु	08/03/2026 13:54
शुक्र	15/03/2026 08:14
सूर्य	17/03/2026 08:56
चंद्र	20/03/2026 18:06
मंगल	23/03/2026 02:55
राहु	29/03/2026 05:01

चंद्र - चंद्र - शनि	
29/03/2026 05:01	
16/05/2026 09:38	
शनि	05/04/2026 20:09
बुध	12/04/2026 16:00
केतु	15/04/2026 11:28
शुक्र	23/04/2026 12:14
सूर्य	25/04/2026 22:04
चंद्र	29/04/2026 22:27
मंगल	02/05/2026 17:56
राहु	09/05/2026 23:25
गुरु	16/05/2026 09:38

चंद्र - चंद्र - बुध	
16/05/2026 09:38	
28/06/2026 12:31	
बुध	22/05/2026 12:15
केतु	25/05/2026 00:37
शुक्र	01/06/2026 05:05
सूर्य	03/06/2026 08:50
चंद्र	06/06/2026 23:04
मंगल	09/06/2026 11:27
राहु	15/06/2026 22:40
गुरु	21/06/2026 16:39
शनि	28/06/2026 12:31

चंद्र - चंद्र - केतु	
28/06/2026 12:31	
16/07/2026 06:38	
केतु	29/06/2026 13:22
शुक्र	02/07/2026 12:23
सूर्य	03/07/2026 09:42
चंद्र	04/07/2026 21:12
मंगल	05/07/2026 22:04
राहु	08/07/2026 13:59
गुरु	10/07/2026 22:48
शनि	13/07/2026 18:16
बुध	16/07/2026 06:38

चंद्र - चंद्र - शुक्र	
16/07/2026 06:38	
05/09/2026 00:08	
शुक्र	24/07/2026 17:33
सूर्य	27/07/2026 06:26
चंद्र	31/07/2026 11:53
मंगल	03/08/2026 10:54
राहु	11/08/2026 01:32
गुरु	17/08/2026 19:52
शनि	25/08/2026 20:38
बुध	02/09/2026 01:07
केतु	05/09/2026 00:08

चंद्र - चंद्र - सूर्य	
05/09/2026 00:08	
20/09/2026 05:23	
सूर्य	05/09/2026 18:24
चंद्र	07/09/2026 00:50
मंगल	07/09/2026 22:09
राहु	10/09/2026 04:56
गुरु	12/09/2026 05:38
शनि	14/09/2026 15:28
बुध	16/09/2026 19:12
केतु	17/09/2026 16:31
शुक्र	20/09/2026 05:23

चंद्र - मंगल - मंगल	
20/09/2026 05:23	
02/10/2026 15:40	
मंगल	20/09/2026 22:47
राहु	22/09/2026 19:32
गुरु	24/09/2026 11:18
शनि	26/09/2026 10:32
बुध	28/09/2026 04:47
केतु	28/09/2026 22:11
शुक्र	30/09/2026 23:54
सूर्य	01/10/2026 14:49
चंद्र	02/10/2026 15:40

चंद्र - मंगल - राहु	
02/10/2026 15:40	
03/11/2026 14:42	
राहु	07/10/2026 10:44
गुरु	11/10/2026 17:00
शनि	16/10/2026 18:27
बुध	21/10/2026 07:06
केतु	23/10/2026 03:51
शुक्र	28/10/2026 11:41
सूर्य	30/10/2026 02:02
चंद्र	01/11/2026 17:57
मंगल	03/11/2026 14:42

चंद्र - मंगल - गुरु	
03/11/2026 14:42	
02/12/2026 00:30	
गुरु	07/11/2026 09:36
शनि	11/11/2026 21:33
बुध	15/11/2026 22:09
केतु	17/11/2026 13:55
शुक्र	22/11/2026 07:33
सूर्य	23/11/2026 17:38
चंद्र	26/11/2026 02:27
मंगल	27/11/2026 18:14
राहु	02/12/2026 00:30

चंद्र - मंगल - शनि	
02/12/2026 00:30	
04/01/2027 18:08	
शनि	07/12/2026 08:42
बुध	12/12/2026 03:23
केतु	14/12/2026 02:37
शुक्र	19/12/2026 17:34
सूर्य	21/12/2026 10:02
चंद्र	24/12/2026 05:31
मंगल	26/12/2026 04:44
राहु	31/12/2026 06:11
गुरु	04/01/2027 18:08

चंद्र - मंगल - बुध	
04/01/2027 18:08	
03/02/2027 22:33	
बुध	09/01/2027 00:46
केतु	10/01/2027 19:01
शुक्र	15/01/2027 19:45
सूर्य	17/01/2027 07:59
चंद्र	19/01/2027 20:21
मंगल	21/01/2027 14:36
राहु	26/01/2027 03:16
गुरु	30/01/2027 03:51
शनि	03/02/2027 22:33

चंद्र - मंगल - केतु	
03/02/2027 22:33	
16/02/2027 08:50	
केतु	04/02/2027 15:57
शुक्र	06/02/2027 17:40
सूर्य	07/02/2027 08:35
चंद्र	08/02/2027 09:26
मंगल	09/02/2027 02:50
राहु	10/02/2027 23:35
गुरु	12/02/2027 15:21
शनि	14/02/2027 14:35
बुध	16/02/2027 08:50

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

चंद्र - मंगल - शुक्र	
16/02/2027 08:50	
23/03/2027 21:05	
शुक्र	22/02/2027 06:53
सूर्य	24/02/2027 01:29
चंद्र	27/02/2027 00:31
मंगल	01/03/2027 02:14
राहु	06/03/2027 10:04
गुरु	11/03/2027 03:42
शनि	16/03/2027 18:38
बुध	21/03/2027 19:22
केतु	23/03/2027 21:05

चंद्र - मंगल - सूर्य	
23/03/2027 21:05	
03/04/2027 12:46	
सूर्य	24/03/2027 09:52
चंद्र	25/03/2027 07:11
मंगल	25/03/2027 22:05
राहु	27/03/2027 12:27
गुरु	28/03/2027 22:32
शनि	30/03/2027 15:01
बुध	01/04/2027 03:14
केतु	01/04/2027 18:09
शुक्र	03/04/2027 12:46

चंद्र - मंगल - चंद्र	
03/04/2027 12:46	
21/04/2027 06:53	
चंद्र	05/04/2027 00:16
मंगल	06/04/2027 01:08
राहु	08/04/2027 17:03
गुरु	11/04/2027 01:52
शनि	13/04/2027 21:20
बुध	16/04/2027 09:42
केतु	17/04/2027 10:34
शुक्र	20/04/2027 09:35
सूर्य	21/04/2027 06:53

चंद्र - राहु - राहु	
21/04/2027 06:53	
12/07/2027 11:14	
राहु	03/05/2027 14:44
गुरु	14/05/2027 13:43
शनि	27/05/2027 14:00
बुध	08/06/2027 05:25
केतु	13/06/2027 00:29
शुक्र	26/06/2027 17:12
सूर्य	30/06/2027 19:49
चंद्र	07/07/2027 16:11
मंगल	12/07/2027 11:14

चंद्र - राहु - गुरु	
12/07/2027 11:14	
23/09/2027 12:26	
गुरु	22/07/2027 05:00
शनि	02/08/2027 18:35
बुध	13/08/2027 02:57
केतु	17/08/2027 09:14
शुक्र	29/08/2027 13:26
सूर्य	02/09/2027 05:05
चंद्र	08/09/2027 07:11
मंगल	12/09/2027 13:27
राहु	23/09/2027 12:26

चंद्र - राहु - शनि	
23/09/2027 12:26	
19/12/2027 06:22	
शनि	07/10/2027 06:05
बुध	19/10/2027 13:01
केतु	24/10/2027 14:28
शुक्र	08/11/2027 01:27
सूर्य	12/11/2027 09:33
चंद्र	19/11/2027 15:02
मंगल	24/11/2027 16:29
राहु	07/12/2027 16:46
गुरु	19/12/2027 06:22

चंद्र - राहु - बुध	
19/12/2027 06:22	
05/03/2028 21:08	
बुध	30/12/2027 06:15
केतु	03/01/2028 18:55
शुक्र	16/01/2028 17:23
सूर्य	20/01/2028 14:31
चंद्र	27/01/2028 01:45
मंगल	31/01/2028 14:25
राहु	12/02/2028 05:50
गुरु	22/02/2028 14:12
शनि	05/03/2028 21:08

चंद्र - राहु - केतु	
05/03/2028 21:08	
06/04/2028 20:10	
केतु	07/03/2028 17:53
शुक्र	13/03/2028 01:43
सूर्य	14/03/2028 16:04
चंद्र	17/03/2028 07:59
मंगल	19/03/2028 04:44
राहु	23/03/2028 23:47
गुरु	28/03/2028 06:03
शनि	02/04/2028 07:30
बुध	06/04/2028 20:10

चंद्र - राहु - शुक्र	
06/04/2028 20:10	
07/07/2028 03:40	
शुक्र	22/04/2028 01:25
सूर्य	26/04/2028 14:59
चंद्र	04/05/2028 05:37
मंगल	09/05/2028 13:27
राहु	23/05/2028 06:10
गुरु	04/06/2028 10:22
शनि	18/06/2028 21:22
बुध	01/07/2028 19:49
केतु	07/07/2028 03:40

चंद्र - राहु - सूर्य	
07/07/2028 03:40	
03/08/2028 13:07	
सूर्य	08/07/2028 12:32
चंद्र	10/07/2028 19:19
मंगल	12/07/2028 09:40
राहु	16/07/2028 12:17
गुरु	20/07/2028 03:57
शनि	24/07/2028 12:03
बुध	28/07/2028 09:11
केतु	29/07/2028 23:32
शुक्र	03/08/2028 13:07

चंद्र - राहु - चंद्र	
03/08/2028 13:07	
18/09/2028 04:52	
चंद्र	07/08/2028 08:25
मंगल	10/08/2028 00:21
राहु	16/08/2028 20:42
गुरु	22/08/2028 22:48
शनि	30/08/2028 04:18
बुध	05/09/2028 15:32
केतु	08/09/2028 07:27
शुक्र	15/09/2028 22:04
सूर्य	18/09/2028 04:52

चंद्र - राहु - मंगल	
18/09/2028 04:52	
20/10/2028 03:53	
मंगल	20/09/2028 01:36
राहु	24/09/2028 20:40
गुरु	29/09/2028 02:56
शनि	04/10/2028 04:22
बुध	08/10/2028 17:02
केतु	10/10/2028 13:47
शुक्र	15/10/2028 21:37
सूर्य	17/10/2028 11:58
चंद्र	20/10/2028 03:53

योगिनी दशा

भोग्य दशा काल : भ्रामरी 1 वर्ष 4 मास 27 दिन

भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष	
10/03/1969		07/08/1970		07/08/1975		07/08/1981		06/08/1988	
07/08/1970		07/08/1975		07/08/1981		06/08/1988		06/08/1996	
	00/00/0000	भद्रि	18/04/1971	उल्क	06/08/1976	सिद्ध	17/12/1982	संक	18/05/1990
	00/00/0000	उल्क	16/02/1972	सिद्ध	07/10/1977	संक	07/07/1984	मंग	07/08/1990
	00/00/0000	सिद्ध	05/02/1973	संक	06/02/1979	मंग	16/09/1984	पिंग	16/01/1991
	10/03/1969	संक	18/03/1974	मंग	07/04/1979	पिंग	05/02/1985	धांय	17/09/1991
संक	06/12/1969	मंग	08/05/1974	पिंग	07/08/1979	धांय	06/09/1985	भ्राम	06/08/1992
मंग	16/01/1970	पिंग	17/08/1974	धांय	06/02/1980	भ्राम	17/06/1986	भद्रि	16/09/1993
पिंग	07/04/1970	धांय	16/01/1975	भ्राम	06/10/1980	भद्रि	07/06/1987	उल्क	16/01/1995
धांय	07/08/1970	भ्राम	07/08/1975	भद्रि	07/08/1981	उल्क	06/08/1988	सिद्ध	06/08/1996

मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष	
06/08/1996		07/08/1997		07/08/1999		07/08/2002		07/08/2006	
07/08/1997		07/08/1999		07/08/2002		07/08/2006		07/08/2011	
मंग	17/08/1996	पिंग	16/09/1997	धांय	06/11/1999	भ्राम	16/01/2003	भद्रि	18/04/2007
पिंग	06/09/1996	धांय	16/11/1997	भ्राम	07/03/2000	भद्रि	07/08/2003	उल्क	16/02/2008
धांय	06/10/1996	भ्राम	05/02/1998	भद्रि	06/08/2000	उल्क	07/04/2004	सिद्ध	05/02/2009
भ्राम	16/11/1996	भद्रि	18/05/1998	उल्क	05/02/2001	सिद्ध	16/01/2005	संक	18/03/2010
भद्रि	06/01/1997	उल्क	16/09/1998	सिद्ध	06/09/2001	संक	06/12/2005	मंग	08/05/2010
उल्क	07/03/1997	सिद्ध	06/02/1999	संक	08/05/2002	मंग	16/01/2006	पिंग	17/08/2010
सिद्ध	17/05/1997	संक	18/07/1999	मंग	07/06/2002	पिंग	07/04/2006	धांय	16/01/2011
संक	07/08/1997	मंग	07/08/1999	पिंग	07/08/2002	धांय	07/08/2006	भ्राम	07/08/2011

नोट :- योगनियों के स्वामी नीचे दिए गए हैं :-

मंगला	: चन्द्र	पिंगला	: सूर्य	धान्या	: गुरु	भ्रामरी	: मंगल
भद्रिका	: बुध	उल्का	: शनि	सिद्धा	: शुक्र	संकटा	: राहु/केतु

उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
योगिनी दशा 36 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

योगिनी दशा

उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष	
07/08/2011		07/08/2017		06/08/2024		06/08/2032		07/08/2033	
07/08/2017		06/08/2024		06/08/2032		07/08/2033		07/08/2035	
उल्क	06/08/2012	सिद्ध	17/12/2018	संक	18/05/2026	मंग	17/08/2032	पिंग	16/09/2033
सिद्ध	07/10/2013	संक	07/07/2020	मंग	07/08/2026	पिंग	06/09/2032	धांय	16/11/2033
संक	06/02/2015	मंग	16/09/2020	पिंग	16/01/2027	धांय	06/10/2032	भ्राम	05/02/2034
मंग	07/04/2015	पिंग	05/02/2021	धांय	17/09/2027	भ्राम	16/11/2032	भद्रि	18/05/2034
पिंग	07/08/2015	धांय	06/09/2021	भ्राम	06/08/2028	भद्रि	06/01/2033	उल्क	16/09/2034
धांय	06/02/2016	भ्राम	17/06/2022	भद्रि	16/09/2029	उल्क	07/03/2033	सिद्ध	06/02/2035
भ्राम	06/10/2016	भद्रि	07/06/2023	उल्क	16/01/2031	सिद्ध	17/05/2033	संक	18/07/2035
भद्रि	07/08/2017	उल्क	06/08/2024	सिद्ध	06/08/2032	संक	07/08/2033	मंग	07/08/2035

धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष	
07/08/2035		07/08/2038		07/08/2042		07/08/2047		07/08/2053	
07/08/2038		07/08/2042		07/08/2047		07/08/2053		06/08/2060	
धांय	06/11/2035	भ्राम	16/01/2039	भद्रि	18/04/2043	उल्क	06/08/2048	सिद्ध	17/12/2054
भ्राम	07/03/2036	भद्रि	07/08/2039	उल्क	16/02/2044	सिद्ध	07/10/2049	संक	07/07/2056
भद्रि	06/08/2036	उल्क	07/04/2040	सिद्ध	05/02/2045	संक	06/02/2051	मंग	16/09/2056
उल्क	05/02/2037	सिद्ध	16/01/2041	संक	18/03/2046	मंग	07/04/2051	पिंग	05/02/2057
सिद्ध	06/09/2037	संक	06/12/2041	मंग	08/05/2046	पिंग	07/08/2051	धांय	06/09/2057
संक	08/05/2038	मंग	16/01/2042	पिंग	17/08/2046	धांय	06/02/2052	भ्राम	17/06/2058
मंग	07/06/2038	पिंग	07/04/2042	धांय	16/01/2047	भ्राम	06/10/2052	भद्रि	07/06/2059
पिंग	07/08/2038	धांय	07/08/2042	भ्राम	07/08/2047	भद्रि	07/08/2053	उल्क	06/08/2060

संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष	
06/08/2060		06/08/2068		07/08/2069		07/08/2071		07/08/2074	
06/08/2068		07/08/2069		07/08/2071		07/08/2074		00/00/0000	
संक	18/05/2062	मंग	17/08/2068	पिंग	16/09/2069	धांय	06/11/2071	भ्राम	16/01/2075
मंग	07/08/2062	पिंग	06/09/2068	धांय	16/11/2069	भ्राम	07/03/2072	भद्रि	07/08/2075
पिंग	16/01/2063	धांय	06/10/2068	भ्राम	05/02/2070	भद्रि	06/08/2072	उल्क	07/04/2076
धांय	17/09/2063	भ्राम	16/11/2068	भद्रि	18/05/2070	उल्क	05/02/2073	सिद्ध	16/01/2077
भ्राम	06/08/2064	भद्रि	06/01/2069	उल्क	16/09/2070	सिद्ध	06/09/2073	संक	10/03/2077
भद्रि	16/09/2065	उल्क	07/03/2069	सिद्ध	06/02/2071	संक	08/05/2074		00/00/0000
उल्क	16/01/2067	सिद्ध	17/05/2069	संक	18/07/2071	मंग	07/06/2074		00/00/0000
सिद्ध	06/08/2068	संक	07/08/2069	मंग	07/08/2071	पिंग	07/08/2074		00/00/0000

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	1
भाग्यांक	2
मित्र अंक	1, 4, 8, 9, 2
शत्रु अंक	3, 5, 6
शुभ वर्ष	19,28,37,46,55
शुभ दिन	शनि, बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	शनि, बुध, शुक्र
मित्र राशि	कर्क, सिंह
मित्र लग्न	सिंह, मकर, मीन
अनुकूल देवता	शिव
शुभ रत्न	हीरा
शुभ उपरत्न	जरकिन, ओपल
भाग्य रत्न	नीलम
शुभ धातु	रजत
शुभ रंग	रजत
शुभ दिशा	दक्षिणपूर्व
शुभ समय	सूर्योदय
दान पदार्थ	मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन
दान अन्न	चावल
दान द्रव्य	दूध

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पन्ना	बुध	91%	व्यावसायिक उन्नति, धन, सन्तति सुख
माणिक्य	सूर्य	75%	व्यावसायिक उन्नति, सुख
लहसुनिया	केतु	75%	सन्तति सुख, व्यावसायिक उन्नति
गोमेद	राहु	70%	धनार्जन, सन्तति सुख
नीलम	शनि	64%	कम खर्च, भाग्योदय, व्यावसायिक उन्नति
हीरा	शुक्र	58%	कम खर्च, स्वास्थ्य, शत्रु व रोग मुक्ति
मोती	चंद्र	38%	दाम्पत्य कष्ट, पराक्रम हानि
पुखराज	गुरु	28%	सन्तति कष्ट, दुर्घटना, हानि
मूंगा	मंगल	0%	दाम्पत्य कष्ट, व्यय

रत्न की शुभता

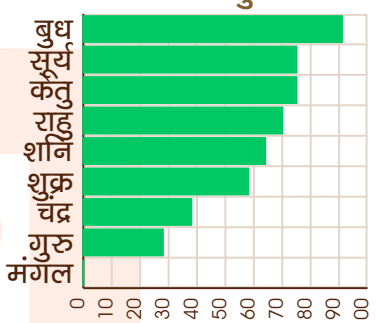

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
शनि	20/11/1975	62%	12%	0%	97%	28%	64%	77%	77%	62%
बुध	19/11/1992	81%	12%	0%	100%	28%	64%	64%	70%	75%
केतु	20/11/1999	62%	12%	12%	91%	28%	64%	52%	58%	88%
शुक्र	20/11/2019	62%	12%	0%	97%	28%	70%	70%	77%	81%
सूर्य	19/11/2025	88%	50%	12%	91%	41%	41%	52%	58%	62%
चंद्र	20/11/2035	81%	56%	0%	97%	28%	58%	64%	58%	62%
मंगल	20/11/2042	81%	50%	24%	78%	41%	58%	64%	58%	81%
राहु	19/11/2060	62%	12%	0%	91%	28%	64%	70%	83%	62%
गुरु	19/11/2076	81%	50%	12%	78%	52%	41%	64%	70%	75%

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत ।।

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते है। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते है। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ है तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते है अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते है।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते है। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुडंली और रत्न

आपके लिए पन्ना, माणिक्य व लहसुनिया रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है। इन्हें आप सर्वदा धारण करेंगे तो आपके जीवन का चहुंमुखी विकास होगा। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

पन्ना, माणिक्य व लहसुनिया रत्न आपके कारक रत्न हैं। कारक रत्न के धारण करने से व्यावसायिक उन्नति प्राप्त होती है। धन लाभ होता है। सुख सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। जीवन में नयी ऊर्जा का प्रवाह होता है।

अतः उपरोक्त रत्न आप अवश्य धारण करें। सभी रत्न जीवन पर्यन्त धारण करने से ग्रहों की विशेष शुभता प्राप्त होगी और जीवन सुखमय होकर गतिमान होगा। उपरोक्त रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के धारण कर सकते हैं क्योंकि सभी रत्न अति शुभफलदायी हैं।

आपके लिए गोमेद, नीलम एवं हीरा रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम है। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

मोती व पुखराज रत्न आपके लिए नेष्ट हैं। अतः इन्हें न पहनना ही बेहतर है। यदि आप इन रत्नों को धारण करते हैं तो इनकी अनुकूलता का परिक्षण अवश्य कर लें। अनुकूलता होने पर ही इन्हें धारण करें, अन्यथा शीघ्र अति शीघ्र उतार दें। इन रत्नों के धारण करने से आपको मानसिक परेशानी, स्वास्थ्य में कमी या धन हानि हो सकती है।

मूंगा पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। इस रत्न का आप सर्वदा त्याग ही करें, क्योंकि किसी भी दशा या गोचर में इससे शुभ फल प्राप्त होने की आशा कम ही है। इस रत्न को धारण करने से सामाजिक, आर्थिक व स्वास्थ्य पक्ष से विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

पन्ना

आपकी कुंड़ली में बुध दशम भाव में स्थित है। आपको बुध रत्न पन्ना धारण करना

चाहिए। पन्ना रत्न आपकी न्यायप्रियता और नीतिनिपुणता में वृद्धि करेगा। रत्न शुभता आपको विवेकवान। गुणवान और सत्यवादी व्यक्ति बनेंगे। यह रत्न आपके धैर्य और विनम्रता को बढ़ाएगा। परिस्थिति अनुसार बोलने का कौशल यह रत्न पन्ना आपको दे सकता है। रत्न प्रभाव आपको यशस्वी और व्यवहार कुशल बनाएगा। रत्न धारण करने के बाद आपको विभिन्न प्रकार के वाहनों का सुख प्राप्त होगा। रत्न शुभता आपको धनाढ्य और संपतिवान बनाएगी। व्यापार के माध्यम से लाभ, सफलता दोनों देगा।

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में बुध द्वितीयेश एवं पंचमेश है। पन्ना रत्न धारण कर आप बुध ग्रह की शुभता प्राप्त कर सकते है। पन्ना रत्न आपको उद्धोग-व्यापार द्वारा सम्मान दिला सकता है। पन्ना रत्न बौद्धिक योग्यता से धन संचय दे सकता है। पारिवारिक कलह को दूर करने का कार्य भी पन्ना रत्न कर सकता है। यह रत्न आपको संतान पक्ष से सुखी कर सकता है. तथा यह रत्न आपको विद्या, बुद्धि, प्रतिष्ठा, धन-धान्य, प्रतियोगिताओं में सफलता, श्रेष्ठ पद पर आसीन, विलक्षण रूप से तीव्र बुद्धि एवं राजनैतिक कार्यो से लाभ दिला सकता है।

पन्ना रत्न कनिष्ठिका अंगूली में धारण करना चाहिए। इस रत्न को सोना धातु में जड़वाकर आप प्रातःकाल में स्नानादि नित्यक्रियाओं से निवृत होने के बाद रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर धूप, दीप और फूल दिखाकर धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करते समय बुध मंत्र ऊँ बुं बुधाय नमः का ९ माला या ५ माला जाप करना चाहिए। तदुपरांत बुध ग्रह की वस्तुएं जैसे - मूंग, कस्तूरी, कांसा, हरित वस्त्र आदि का यथाशक्ति दान करना चाहिए। रत्न इस प्रकार धारण करें कि वह शरीर को स्पर्श करें। पन्ना रत्न 3 रत्ती का कम से कम, अन्यथा 6 रत्ती का होना चाहिए।

इस रत्न को आप लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या विपरीत हाथ में भी धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करने में आप असमर्थ हो तो आप इसके स्थान पर मरगज, हरा हकीक, पेरिडोट एवं ४ मुखी रुद्राक्ष धारण कर सकते है।

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य दशम भाव में स्थित है। आपको सूर्य रत्न माणिक्य धारण करना चाहिए। माणिक्य रत्न आपको बुद्धिमान, विद्वान और प्रसिद्ध बनाएगा। इसकी शुभता से आप आत्मविश्वास से भरे हुए आर्थिक रूप से सुदृढ़ व्यक्ति होंगे। रत्न शक्तियां आपको कार्यक्षत्र में अधिकारिक शक्तियां प्राप्त करने में सहयोग करेंगी। आपको सरकारी क्षेत्र में नौकरी प्राप्त हो सकती है। आजीविका क्षेत्र में भी आपको उच्चाधिकारियों का सुख-सहयोग सहजता से प्राप्त होगा। यह रत्न आपको कार्यक्षेत्र में बड़ी सफलता दिला सकता है। रत्न शुभता से नेतृत्त्व करने की अद्भुत योग्यता सामने आयेगी।

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में सूर्य चतुर्थ भाव का स्वामी है। सूर्य आपके लिए केन्द्रेश, सुखेश ग्रह है। सूर्य रत्न माणिक्य धारण कर आप घर, जमीन, जायदाद पैतृक सम्पति, वाहन, माता और जमीन के सुख प्राप्त कर सकते है। सूर्य चतुर्थेश होने के कारण माणिक्य रत्न आपके शैक्षिक ज्ञान का भी विकास करने में सक्षम है। सूर्य की शुभता पाने के लिए आपको सूर्य रत्न माणिक्य धारण करना चाहिए। माणिक्य रत्न शुभ होने के कारण आपकी वैचारिक शक्ति,

निर्णय शक्ति, योग्यता और कार्यक्षमता देगा। माणिक्य रत्न आपको विद्या, बुद्धि, मानसिक, शारीरिक, बौद्धिक, अध्यात्मिक और आत्मिक बल प्रदान कर सकता है।

यह रत्न अनामिका अंगूली, स्वर्ण धातु में जड़वाकर रविवार को प्रातः काल में स्नानादि से निवृत होकर धारण करना चाहिए। पंचामृत से रत्न को शुद्ध करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। धारण करने के पश्चात सूर्य मंत्र ऊँ घृणि सूर्याय नमः का कम से कम १ माला जाप करना चाहिए। तद्पश्चात सूर्य वस्तुएं जैसे- गेहूं, गुड़, चंदन, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। माणिक्य रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर ८ रत्ती तक का धारण करना लाभकारी रहता है।

माणिक्य रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न को धारण करने से बचना चाहिए। अति आवश्यकता में इन्हें आप लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते है। आवश्यकता में यह रत्न चांदी धातु में भी धारण किया जा सकता है। यदि आप माणिक्य रत्न पहनने में किसी प्रकार से असमर्थ है तो आप इसके स्थान पर लाल तुरमली, गुलाबी हकीक, गारनेट एवं एक मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु पंचम भाव में स्थित है। आपको केतु रत्न लहसुनिया धारण करना चाहिए। लहसुनिया रत्न धारण कर आप वाहन सुखों में बढ़ोतरी कर सकते है। यह रत्न आपको तीर्थयात्रा एवं विदेश प्रवास देगा। रत्न की शुभता से आपके पराक्रम और नौकरी क्षेत्र में सफलता देगा। आपको अनेक सेवकों का सुख प्राप्त होगा। आप छ्ल-कपट से दूर रहने का प्रयास करेंगे। केतु रत्न लहसुनिया आपको आंशिक धैर्यहीन बना सकता है। इसकी शुभता से आपके नकारात्मक विचारों का अंत होगा। सगे भाईयों से विवाद समाप्त होंगे।

केतु कन्या राशि में स्थित है व इसका स्वामी बुध दशम भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न धारण कर आप आजीविका क्षेत्र में चातुर्य से उन्नति प्राप्त करेंगे। यह रत्न आपको कर्मक्षेत्र में उच्च पद, सम्मान एवं अधिकार शक्ति देगा तथा रत्न पहन कर आप व्यवहार कुशल होंगे। रत्न शुभता से आप धनवान, बुद्धिमान और पितृ-सुखयुक्त होंगे। यह रत्न आपको आजीविका क्षेत्र में व्यर्थ विवादों में सम्मिलित होने से बचाएगा। इस रत्न को धारण करने से आपको अधीनस्थों का सुख-सहयोग प्राप्त होगा। तथा यह रत्न आपके कार्यभार में कमी करेगा। आपके कार्यों में नियमितता आएगी। न्याय और परिश्रम कुशलता में वृद्धि होगी। आपको उत्तम व्यक्तियों के संपर्क में रहने के अवसर प्राप्त होंगे।

लहसुनिया रत्न को चांदी धातु में जड़वाकर गुरुवार के दिन सूर्यास्त काल में धारण किया जा सकता है। लहसुनिया रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, इसका धूप, दीप और फूलों से पूजन करने के बाद अनामिका अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात केतु रत्न मंत्र ऊँ के केतवे नमः का १ माला जाप करें। मंत्र जाप के बाद केतु ग्रह की वस्तुओं का दान किसी योग्य व्यक्ति को करना शुभ रहता है। केतु वस्तुएं इस प्रकार है- सप्तधान्य, नारियल, धूम्र वस्त्र। लहसुनिया रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए। अंगूठी रूप में रत्न धारण करने में किसी प्रकार की असमर्थता होने पर इसे ल

लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है।

लहसुनिया रत्न धारण करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि इस रत्न के साथ माणिक्य एवं गोमेद रत्न धारण करना प्रतिकूल फल प्रदान कर सकता है।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहु एकादश भाव में स्थित है। आपको राहु रत्न गोमेद धारण करना चाहिए। यह गोमेद रत्न आपके जीवन के कष्टों को कम करेगा। इसके शुभ प्रभाव से आप परिश्रमी, विलासी और सहृदय व्यक्ति बनेंगे। गोमेद रत्न प्रभाव से आप अपनी इन्द्रियों पर नियन्त्रण रखने में सफल होंगे। आप बड़े स्तर पर प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। गोमेद की शुभता आपको धनवान और विभिन्न भोगों को भोगने वाला बनाएगी। आपकी मित्रता चतुर व्यक्तियों के साथ होगी। यह रत्न आपको धोखा और ठगी के माध्यम से धन अर्जन करने से रोकेगा।

राहु मीन राशि में स्थित है व इसका स्वामी गुरु पंचम भाव में स्थित है। अतः गोमेद रत्न धारण करने से आपको शिक्षा क्षेत्र में विशेष सम्मान, पद और सफलता प्राप्त होगी। रत्न शुभता आपको अधिकार शक्ति प्रदान करेगी। आप शिक्षा क्षेत्र या मनोरंजन क्षेत्र में अपनी विशेष योग्यता दिखा पाएंगे। इस रत्न को धारण करने से आप धन-संपत्ति का संचय करने में सफल होंगे। अध्ययन कार्यों में आपका आत्मविश्वास बढ़ा-चढ़ा रहेगा। एवं यह रत्न आपके संतान सुख को बढ़ाएगा। आपको कम परिश्रम करने पर भी अधिक लाभ देगा। विद्याध्ययन में आपकी रुचि जागृत होगी तथा धार्मिक क्रिया-कलापों में आपको सुख का अनुभव होगा।

गोमेद रत्न अष्टधातु से निर्मित अंगूठी को शनिवार के दिन सूर्यास्त काल में सभी प्रकार से स्वयं शुद्ध होकर रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से स्नान करायें। इसके बाद रत्न का धूप, दीप और फूल से पूजन कर मध्यमा अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात राहु मंत्र ऊँ रां राहवे नमः का १०८ बार जाप करें और फिर इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- तिल, तेल, कंबल, नीले वस्त्र आदि का दान करें। गोमेद रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए।

गोमेद रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ माणिक्य, मोती एवं मूंगा रत्न धारण करने से बचना चाहिए। अंगूठी रूप में इस रत्न को धारण न कर पाने की स्थिति में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी पहना जा सकता है। विशेष परिस्थितियों में रत्न के स्थान पर इसके उपरत्न गोमेद या ८ मुखी रुद्राक्ष को भी धारण करना श्रेष्ठकर रहता है।

नीलम

आपकी कुंडली में शनि द्वादश भाव में स्थित है। आप शनि ग्रह का नीलम रत्न धारण करें। नीलम रत्न धारण कर आपके फिजूलखर्चों पर नियंत्रण होगा। इस रत्न को धारण कर आप अपने शत्रुओं को सहजता से पराजित कर सकते है। बडे-बडे दान और यज्ञ करने में आपकी रुचि बन सकती है। साथ ही यह रत्न आपको स्वजनों से प्रेम और धन संग्रह करने के लिए सदैव प्रयासरत रख जीवन में बडी तरक्की दे सकता है। रत्न धारण कर आप दानगृह, कारागार जैसी जगहों पर नौकरी कर आय प्राप्त कर सकते है। नीलम रत्न आपको गुप्त रीति

से धन संचय करने का स्वभाव दे सकता है।

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में शनि नवमेश एवं दशमेश है। शनि लग्नेश शुक्र के मित्र एवं योगकारक ग्रह है। आपके लिए शनि सबसे शुभ ग्रह है। शनि रत्न नीलम धारण कर आप अपना भाग्योदय कर सकते है। नीलम रत्न की शक्तियां आपके माता-पिता के सुखों में बढ़ोतरी कर सकती है। यह रत्न शुभ होकर आपको भूमि, भवन, संपति के मामलों का सहज समाधान दे सकता है। नीलम रत्न की शुभता से आपकी आजीविका के कार्य बिना बाधाएं समय पर पूरे हो सकते है। लाभ क्षेत्र की कठिनाईयों को दूर करने में भी नीलम रत्न उपयोगी सिद्ध हो सकता है। विदेश स्थानों से आय प्राप्ति के योग बना सकता है।

नीलम रत्न शनिवार के दिन पंचधातु से निर्मित अंगूठी में जड़वाकर, संध्या काल में स्नानादि कर शुद्ध होकर अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, धूप, दीप एवं फूल से पूजन करने के बाद इस अंगूठी को मध्यमा अंगूठी में धारण करें। तत्पश्चात शनि मंत्र ऊँ शं शनैश्चराय नमः का जाप एक माला करें। मंत्र जप के बाद इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- उड़द, काले तिल, तेल, काले वस्त्र आदि का दान किसी योग्य व्यक्ति को करें। नीलम रत्न कम से कम 3 रत्ती, अन्यथा 5-6 रत्ती का होना चाहिए।

नीलम रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा, पुखराज धारण करने से बचना चाहिए। विशेष स्थितियों में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है। किसी कारणवश यदि इस रत्न को धारण न कर पाएं तो इसके उपरत्न फिरोजा, नीली, एमेथिस्ट एवं ७ मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र बारहवें भाव में स्थित है। शुक्र ग्रह का हीरा रत्न धारण करना आपके लिए अनुकूल सिद्ध होगा। हीरा रत्न धारण करने से विदेश स्थानों की आय से आपके वैभव और आय में बढ़ोतरी होगी। यह रत्न आपको श्रेष्ठकर्मों से जोड़ेगा। आपको अपना जीवन लक्ष्य प्राप्त होगा। शुक्र रत्न हीरा आपको विरोधियों से आत्मीयता दे सकता है। हीरा रत्न शुभता से आप वैभव, सुख सामग्री और भौतिक सुविधाओं पर अत्यधिक व्यय कर सकते है। इस रत्न को धारण कर आप अपने वैवाहिक जीवन को सुखमय बनाए रख सकते है।

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में शुक्र लग्नेश एवं षष्ठेश है। शुक्र आपके लग्न भाव के स्वामी होने के कारण सबसे शुभ ग्रह है। शुक्र रत्न हीरा धारण कर आप अपने स्वास्थ्य सुख को बेहतर कर सकते है। शुक्र रत्न हीरा आपको रोगों से मुक्त रखने में सहयोग करेगा। हीरा रत्न की शुभता से आपके आत्मबल में बढ़ोतरी हो सकती है। रत्न प्रभाव से आप अपने शत्रुओं पर विजय पाने में सफल रहेंगे। हीरा रत्न अनुकूल फलदायक होने के कारण आपके दांपत्य जीवन को सुखी, भौतिक सुख-सुविधाओं से युक्त तथा प्रतियोगिताओं में सफल हो सकते है.

हीरा रत्न सोने धातु की अंगूठी में जड़वाकर, शुक्रवार के दिन सूर्य उदय के पश्चात स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर रत्न को रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और

शहद से मिलकर बने पंचामृत में डूबोकर शुद्ध कर, अपने देव स्थान पर रखकर शुक्रदेव और रत्न को धूप, दीप एवं फूल दिखाकर अनामिका अंगूली में धारण करें। हीरा रत्न धारण करते समय शुक्र मंत्र ऊँ शं शुक्राय नमः का १०८ बार मंत्र जाप करना चाहिए। मंत्र जाप करने के बाद शुक्र ग्रह की वस्तुएं जैसे- चावल, चांदी, घी, श्वेत वस्त्र आदि वस्तुओं का दान करें। हीरा 1 रत्ती से अधिक बजन का धारण करना चाहिए। यह छोटे टुकड़ों में भी पहना जा सकता है।

हीरा रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा एवं पुखराज रत्न धारण करना सर्वदा वर्जित है। अंगूठी रूप रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में इसे लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। हीरा रत्न के स्थान पर इस रत्न के उपरत्न ओपल, जर्कन, स्फटिक एवं ६ मुखी रुद्राक्ष धारण किया जा सकता है।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्र सप्तम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः चंद्र रत्न मोती पहनने से आपको व्यापार में कई बार परिवर्तन करने पड सकते है। अपने मनोरथ पूरे करने के लिए आपको अत्यधिक प्रयास करने पड़ सकते है। चंद्र रत्न मोती विवाह में देरी कर सकता है। तथा इसके कारण जीवन साथी से आत्मियता की कमी की स्थिति बन सकती है। यह रत्न धारण कर आपमें धैर्य का अभाव और नेतृत्त्व करने की क्षमता की कमी हो सकती है। विदेश गमन को यह मुश्किल कर सकता है। अधीरता का भाव बढ़ सकता है। रत्न प्रतिकूलता में कमी करने के लिए आप विषय वासना में अत्यधिक लिप्त होने से बचें। जलीय यात्राओं में व्यय वृद्धि बढ़ सकती है।

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में चंद्र तृतीय भाव का स्वामी है। चंद्र ग्रह की शुभता प्राप्ति एवं अशुभता में कमी के लिए आपका चंद्र रत्न मोती धारण करना उचित नहीं होगा। इस रत्न को धारण करने पर आपके द्वारा अभक्ष्य पदार्थो का सेवन एवं आपमें क्रोध भाव की अधिकता हो सकती है। इस रत्न के प्रभाव से आपका आलोचनात्मक व्यवहार, पुरुषार्थ, साहस और शौर्य की कमी आपमें हो सकती है। खांसी तथा छाती के रोग आपको स्वास्थ्य विकार दे सकते है। यह रत्न आपके मानसिक क्लेश बढ़ा सकता है। रत्न धारण के बाद आपके द्वारा किये गये कार्यो में बाहुबल की प्रमुखता हो सकती है। धन संचय में परेशानियां बनी रह सकती है। रत्न प्रभाव आपके स्वास्थ्य सुख में कमी कर सकता है।

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु पंचम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः गुरु रत्न पुखराज धारण करने पर आपकी न्यायशीलता प्रभावित हो सकती है। संघर्षो की अधिकता आपको जीवन में अधिक हो सकती है। रत्न धारण से धर्म क्षेत्र में आस्था की कमी हो सकती है। आप विपत्तियों से घबराकर कुमार्ग पर चल सकते है। अदालती मामलें आपको परेशान कर सकते है। यह रत्न आपकी आमदनी में कमी कर सकता है। शिक्षा क्षेत्र में सफलता पाने के लिए आप गलत तरीकों का प्रयोग कर सकते है। पुखराज रत्न आपको मनोरंजक और खेलकूद के क्षेत्रों में असफलता दे सकता है। आराम पसंद होने से आपके कष्ट बढ़ सकते है।

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में गुरु अष्टमेश एवं आयेश है। गुरु अष्ट्मेश है इसलिए इस ग्रह का रत्न धारण करना आपको प्रतिकूल फल दे सकता है। गुरु रत्न पुखराज धारण करने पर आपको स्वास्थ्य में कमी का सामना करना पड़ सकता है। इस रत्न से व्याधी, आयु में कमी, मानसिक चिंता, नास्तिकता, नकारात्मक विचारधारा और दुर्भाग्य की स्थितियां बन सकती है। इसके अलावा अष्टम भाव का रत्न आपको दरिद्रता, आलस्य, अस्पताल एवं चीरफाड़ आदि जैसी परेशानियां भी दे सकता है। रत्न का अनुकूल न होने के कारण आपको आय, लाभ वृद्धि में आपको योग्यता की कमी का अनुभव हो सकता है। पुखराज रत्न धारण से आप के बड़े भाई से संबंध कुछ प्रभावित हो सकते है।

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल सप्तम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः मंगल रत्न मूंगा धारण करने पर आपके जीवन साथी के क्रोध भाव में वृद्धि हो सकती है। आपका वैवाहिक जीवन दुःखमयी हो सकता है। इस रत्न को धारण करने पर आपका विवाह देरी से हो सकता है। जीवनसाथी के साथ व्यवहार में सरसता की कमी अलगाव तक लेकर जा सकती है। रत्न प्रभाव आपको बेचैनी और चिडचिडापन देने के साथ-साथ तर्क और बहस करने वाला भी बना सकता है। सफलता के लिए आपको कडी मेहनत करनी पड़ सकती है। रत्न धारण से वात रोग, पेट से संबंधित तकलीफें बढ़ सकती है। तथा मुकद्दमों में धन हानि के योग बन सकते है।

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में मंगल सप्तमेश और द्वादशेश है। अशुभ भावों का स्वामित्व प्राप्त होने के कारण मंगल आपको शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः आपके द्वारा मंगल रत्न मूंगा धारण करने पर आप निद्रा की कमी का अनुभव करेंगे। यह रत्न आपके वैवाहिक जीवन को तनाव पूर्ण और गृह कलेश से युक्त कर सकता है। रत्न प्रभाव से चोरी, झगड़ा, उपद्रव आदि विषयों में आपकी रुचि अधिक हो सकती है। यह रत्न आपकी कामवासना में उत्तरोत्तर वृद्धि करेगा। आपके पारिवारिक जीवन में अशांति का माहौल हो सकता है। बढ़ते हुए व्यय आपकी ग्रहस्थ जीवन को ओर अधिक कष्टमय बना सकते है। व्ययों का केन्द्र विशेष रूप से ग्रहस्थ जीवन हो सकता है।

दशानुसार रत्न विचार

चन्द्र
(19/11/2025 - 20/11/2035)

चन्द्र की दशा में आपका पन्ना व माणिक्य रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

नीलम, लहसुनिया, हीरा, गोमेद व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पुखराज रत्न नेष्ट हैं और मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

मंगल
(20/11/2035 - 20/11/2042)

मंगल की दशा में आपका माणिक्य, लहसुनिया व पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

नीलम, हीरा, गोमेद व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पुखराज रत्न नेष्ट हैं और मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

राहु
(20/11/2042 - 19/11/2060)

राहु की दशा में आपका पन्ना व गोमेद रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

नीलम, हीरा, माणिक्य व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पुखराज रत्न नेष्ट हैं और मोती व मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

गुरु
(19/11/2060 - 19/11/2076)

गुरु की दशा में आपका माणिक्य, पन्ना व लहसुनिया रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

गोमेद, नीलम, पुखराज व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

हीरा रत्न नेष्ट हैं और मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शुभ रत्न

आपका शुभ रत्न - टरक्वाइज

आपका जन्म वृष राशि के लग्न में हुआ है। जिसका स्वामी ग्रह शुक्र होता है। टरक्वाइज रत्न शनि ग्रह के लिये धारण किया जाता है और शनि वृष राशि के लग्न के जातकों के लिये भाग्य रत्न होता है। क्योंकि शनि की मकर राशि वृष लग्न से नवम भाव में स्थित होती है। किसी भी जातक के लिये भाग्य का प्रबल होना सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है क्योंकि किसी भी किये गये प्रयास या कार्य के परिणाम में भाग्य उत्प्रेरक का कार्य करता है, यह ठीक उसी प्रकार कार्य करता है जैसे किसी रासायनिक क्रिया में उत्प्रेरक का कार्य होता है।

अतः वृष राशि के लग्न वाले जातकों को टरक्वाइज रत्न धारण करके शनि को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक को सभी लाभ मिलेंगे अर्थात जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है तथा जातक के भाग्य को चमकाता है। वैसे भी शनि सेवक का प्रतिनिधि ग्रह है अर्थात यदि जातक सरकारी या प्राइवेट नौकरी में है तो नौकरी में प्रमोशन व आय वृद्धि के साथ-साथ अधिकार भी प्रदान करता है। साथ ही अन्य कर्मचारीगणों का सहयोग भी प्राप्त होता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को सेवकों का सहयोग तथा अधीनस्थ कर्मचारियों की शुभकामनाऐं भी प्राप्त होती हैं। जिसको जोड़ों के रोग हों या लाइलाज रोगी हों तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है तथा लाइलाज रोगों से मुक्ति दिलाता है।

टरक्वाइज को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि मध्यमा अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में शनि की अंगुली मानी जाती है। टरक्वाइज शनि ग्रह का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात शनिवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय सायंकाल शनि की होरा में धारण करना श्रेष्ठ होता है। शनिवार के दिन सूर्यास्त के समय शनि की होरा में धारण करना सर्वश्रेष्ठ माना गया है। टरक्वाइज को यदि शनिवार के साथ-साथ शनि के नक्षत्र अर्थात् पुष्य, अनुराधा और उ.भाद्रपद में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

टरक्वाइज को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पटरे पर नीले या काले रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, शनि के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से लगाकर सीधे हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करना चाहिए।

शनि का मंत्र - ऊँ शं शनैश्चराय नमः

इसको धारण करने के पश्चात यदि शनि से संबंधित पदार्थ जैसे सरसों का तेल, काला उड़द सवा मीटर काला कपड़े का दान करें तो टरक्वाइज की अंगूठी धारण करना और भी

अधिक फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी प्रतिदिन शनि का 108 बार स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें। शनि मंदिर में शनिदेव की मूर्ति पर सरसों का तेल का अभिषेक करायें तो यह टरक्वाइज की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रत्येक शनिवार को शनि चालीसा का पाठ भी इसमें अधिक शुभकारी साबित होता है।

वृष लग्न वाले जातक यदि टरक्वाइज की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन भाग्यशाली व्यक्ति के रूप में सुखी, समृद्धिशाली एवं शांतिपूर्ण जीवन प्राप्त करते हैं।

रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के ह्रदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते है। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते है, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापो का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है ।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरू ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यो में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुडंली और रूद्राक्ष

आपकी कुंडली वृष लग्न की हैं। वृषभ लग्न आपको आकर्षक व्यक्तित्व का स्वामी बना रहा हैं। स्थिर लग्न होने से इनका स्वभाव स्थिरता लिये हुए होता है। आप जो भी कार्य करते हैं उसे पूरा करके ही हटते हैं। राशि चिह्न बैल होने की वजह से आप अत्यंत मेहनती हैं तथा लगातार कार्य करते रहना आपका व्यवहार हैं। प्यार से आप कुछ भी कर सकते हैं लेकिन जबरदस्ती करने पर आप बैल की भाँति अड़ियल हो जाते हैं, उस स्थिति में आपसे कुछ भी कराना मुश्किल होता है। पृथ्वी तत्व राशि होने से सहनशीलता का भाव आपमें कूट-कूट कर भरा है। जब तक आपसे सहन होता है, आप करते जाते हैं। योजनाबद्ध तरीके से कार्य करना आपको पसंद होता है। हर वस्तु को नियत स्थान पर रखना, हाथ में लिया गया प्रत्येक कार्य

पूर्ण करना, प्रत्येक सुन्दर वस्तु की ओर आप आसानी से आकर्षित हो जाते हैं।

त्रिक भावों के स्वामी अपने स्वामित्व के आधार पर स्वयं में अशुभता लिए होते हैं। 6,8,12 भावों को त्रिक भाव के नाम से जाना जाता हैं। इन भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता हैं। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं।

वृषभ लग्न में छठे भाव व लग्न भाव के स्वामी शुक्र हैं, शुक्र षष्टेश होने पर स्वास्थ्य, ऋण के पक्ष से शुभ नहीं हैं। जीवन में प्रगति की राहों में बाधक बनता हैं। सतत प्रयासों के उपरान्त आप बाधाएं समाप्त करने में सफल रहेंगे।

अष्टम व एकादश भाव के गुरु हैं। इस भाव में बृहस्पति की स्व और मूल त्रिकोण धनु राशि हैं। बृहस्पति की राशि बाधक और गुप्त विषयों से सम्बंधित भाव में होना, आपको आर्थिक, वितीय और प्रबंधकीय विषयों में छोटी, धोखा और अप्रत्याशित हानि दे सकती हैं। जीवन की घटनाओं में शुभता के पक्ष से गुरु की धनु राशि इस भाव में आपके पक्ष में शुभ फल नहीं दे रही हैं।

द्वादश व सप्तम भाव के मंगल हैं। वृषभ लग्न के लिए मंगल विशेष अशुभ ग्रह होते हैं। आपके लग्न में मंगल की एक राशि सप्तम भाव तथा दूसरी द्वादश भाव में आती हैं। द्वादश भाव में मंगल की राशि मंगल के कारक तत्वों में कमी करती हैं। सप्तमेश मंगल दुर्घटनाओं, शल्यचिकित्सा, लड़ाई-झगड़ों के योग बना कर ऊर्जा शक्ति की हानि करा सकता हैं।

शुक्र आपकी कुंडली के द्वादश भाव में स्थित है, आपको स्वार्थ भावना का त्याग करना चाहिए, व्यर्थ के कामों में आप अत्यधिक व्यय कर सकते है, आत्मीय जनों से मनमुटाव हो सकता है, विरोधियों के कपट को न समझते हुए आप उनसे आत्मीयता रखे। जीवन साथी की भावनाओँ को आहात करने से बचे। या आपको विवाहेत्तर संबंधों में रूचि हो सकती है, अवस्था बढ़ने के साथ साथ आप पर मोटापा हावी हो सकता है।

आपको पैतृक सम्पति से वंचित रहना पड़ सकता है, पिता से शत्रुता, तंत्र-मंत्र ज्योतिष में रूचि, शत्रुनाशक, दीर्घरोगी, भाइयों व मित्रों से मतभेद, आर्थिक विपन्नता की स्थिति उत्पन्न हो सकती है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 3, 5, 6, 7 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए।

क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पडता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पडता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	10/06/1973-23/07/1975	----------	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	06/10/1982-21/12/1984	01/06/1985-17/09/1985	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	21/12/1984-01/06/1985	17/09/1985-17/12/1987	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	17/12/1987-21/03/1990	20/06/1990-15/12/1990	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	05/03/1993-15/10/1993	10/11/1993-02/06/1995	10/08/1995-16/02/1996

द्वितीय चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	23/07/2002-08/01/2003	07/04/2003-06/09/2004	13/01/2005-26/05/2005
साढेसाती प्रथम ढैया	15/11/2011-16/05/2012	04/08/2012-02/11/2014	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	02/11/2014-26/01/2017	21/06/2017-26/10/2017	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	26/01/2017-21/06/2017	26/10/2017-24/01/2020	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	29/04/2022-12/07/2022	17/01/2023-29/03/2025	----------

तृतीय चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	31/05/2032-13/07/2034	----------	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	28/01/2041-06/02/2041	26/09/2041-11/12/2043	23/06/2044-30/08/2044
साढेसाती द्वितीय ढैया	11/12/2043-23/06/2044	30/08/2044-08/12/2046	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	08/12/2046-06/03/2049	10/07/2049-04/12/2049	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	25/02/2052-14/05/2054	02/09/2054-05/02/2055	----------

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
अष्टम स्थानस्थ ढैया	सम	धन
साढेसाती प्रथम ढैया	शुभ	शत्रु व रोग मुक्ति
साढेसाती द्वितीय ढैया	सम	दाम्पत्य कलह
साढेसाती तृतीय ढैया	अशुभ	दुर्घटना से बचाव
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	व्यावसायिक उन्नति

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति सप्तम भाव में है। अतः आप एक मांगलिक कन्या हैं। चूंकि आपका मांगलिक दोष भंग नहीं हो रहा है अतः इसके प्रभाव से आपके पति का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा स्वभाव से ही उनमें उग्रता रहेगी जिससे यदा कदा परस्पर संबंधों में मतभेद उत्पन्न हो सकते हैं लेकिन यह अल्प समय के लिए होंगे तथा दाम्पत्य जीवन पर इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। आप भी यदा कदा पित या गर्मी आदि से परेशानी की अनुभूति कर सकती हैं। मंगल के इस प्रभाव से आपके विवाह कार्य में विलम्ब होने की संभावना रहेगी तथा विवाह से पूर्व वार्ताओं में भी गतिरोध रहेगा लेकिन अन्त में आप को सफलता अवश्य प्राप्त होगी तथा सामान्य रूप से दाम्पत्य जीवन में प्रसन्नता बनी रहेगी।

सप्तम भावस्थ मंगल के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा पित जन्य दोषों से आपको परेशानी हो सकती है । दशम भाव पर मंगल की दृष्टि से कार्य क्षेत्र में आप परिश्रम एवं पराक्रम से इच्छित सफलता अर्जित करेंगी तथा समाज से भी न्यूनाधिक मान सम्मान की प्राप्ति होती रहेगी। लग्न पर दृष्टि के प्रभाव से स्वभाव में तेजस्विता का भाव रहेगा तथा यदा कदा मानसिक अशान्ति की भी अनुभूति हो सकती है। द्वितीय भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि मध्यम रहेगी तथा यदा कदा पारिवारिक जनों के मध्य मतभेद उत्पन्न होंगे जिससे परिवार की शान्ति प्रभावित होगी लेकिन इसका दुष्प्रभाव अल्प मात्रा में ही रहेगा।

अतः अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक सुखी एवं सम्पन्न बनाने के लिए आपको किसी ऐसे मांगलिक पुरुष से विवाह करना चाहिए जिससे आपका परस्पर मांगलिक दोष भंग हो सके। इसके लिए पुरुष की कुंडली में मांगलिक भावों अर्थात प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि तथा राहु जैसे पापग्रहों की स्थिति होनी चाहिए। इससे आपके

सुख सौभाग्य एवं ऐश्वर्य में वृद्धि होगी तथा सुखी एवं प्रसन्नता पूर्वक आपका दाम्पत्य जीवन व्यतीत होगा। आपसी संबंधों में भी मधुरता तथा सहयोग का भाव विद्यमान रहेगा।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं –

ऊँ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- नवम् भाव का स्वामी नीच का होकर द्वादश भाव में स्थित है।
- नवम् भाव का स्वामी नीचस्थ है और उस पर शनि का प्रभाव है।
- लग्नेश द्वादश भाव में स्थित है और उस पर शनि का प्रभाव है।

आपकी कुडली में शुक्र और शनि के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में शुक्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गरीब या जरूरतमंद स्त्रियों, कन्याओं को तथा पत्नी को दान दें। 11 वर्ष से छोटी 9 कन्याओं को मंदिर में खीर खिलायें।

आपकी कुंडली में शनि पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा दलित पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ भगवान रुद्र की पूजा करें। पीपल को जल चढ़ायें व पूजा करें। शम्मी की समिधा से हवन करें। बकरी व शनि प्रीतकारी वस्तुओं का दान करें। गरीब या जरूरतमंदों की सहायता के रूप में दान

दें तथा कौए को खाने का पहला ग्रास खिलायें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

अंक ज्योतिष फल

आपका जन्म दिनांक दस है। एक एवं शून्य का जोड़ एक होता है जोकि अंक ज्योतिषानुसार आपका मूलांक होता है। मूलांक एक का स्वामी सूर्य और शून्य को ब्रह्म या शिव माना गया है। इनके प्रभाववश आप अपने क्षेत्र में एक प्रभावशील महिला होंगी। सूर्य जिस तरह से प्रकाशित एवं अस्त होता है वैसे ही आपके जीवन में काफी ऐसे अवसर आयेंगे जिनमें आपको सफलताऐं प्राप्त होंगी। कभी-कभी अस्त सूर्य के समान असफलता का भी सामना करना पड़ेगा। लेकिन आप असफलता से पीछे नहीं हटेंगी। कुछ दिन शिव की तरह शांत रहकर पुनः सफलता अर्जित करेंगी। संघर्ष, साहस, धैर्य एवं उच्च महत्वाकांक्षायें आप में अधिक रहेंगी।

आप स्थिरवादी, दृढ़ निश्चयी, वचनशील महिला होंगी। इन गुणों वश मेहनत एवं ईमानदारी से सफलता अर्जित करेंगी। संघर्षों से पीछे नहीं हटेंगी। समाज में नाम तथा यश प्राप्त करेंगी। आप परोपकारवादी, बहुतों की पोषक बनेंगी। आर्थिक स्थिति आपकी मध्य अवस्था में काफी ठीक रहेगी। समाज में आपका अच्छा नाम होगा।

मानसिक स्थिति आपकी स्वतंत्र विचारधारा की रहेगी। इससे आपको पराधीन रहकर कार्य करना अच्छा नहीं लगेगा। आप किसी के आधीन कार्य करने की अपेक्षा स्वतंत्र रूप से कार्य करने पर अपनी प्रतिभा का उपयोग अधिक करेंगी। आप अपने कार्य करने के ढंग में स्वतंत्रता, निष्पक्षता, अधिक पसन्द करेंगी।

भाग्यांक दो का स्वामी चन्द्र ग्रह को माना गया है। इसके प्रभाव से आपकी कल्पनाशक्ति उन्नत किश्म की होगी। बौद्धिक स्तर आपका उच्च कोटि का रहेगा एवं बुद्धि जन्य कार्यों में आपकी विशेष अभिरुचि रहेगी। शारीरिक श्रम साध्य कार्यों में आपकी दिलचस्पी कम रहेगी। चन्द्रमा जिस तरह घटता-बढ़ता रहता है, उसी प्रकार आपके भाग्य का सितारा भी कभी तो एकदम ऊँचाईयों को प्राप्त करेगा और कभी आप एकदम घोर अंधकार में अपने आप को पायेंगी। ऐसे समय में धैर्य रखना आपके लिए अनिवार्य हो जाता है, क्योंकि आपके भाग्य का सितारा भी पुनः पूर्णिमा की तरह प्रकाशित होगा। धैर्य न रखना आपकी कमजोरियों में रहेगा।

भाग्य आपका बदलता रहेगा। एक स्थिर मुकाम पर कभी भी नहीं पहुँचेगा। आपको सम्पूर्ण जीवन में भाग्योदय की कुछ कमी खटकती रहेगी। आपको अधिकारियों से लाभ रहेगा तथा धन-धान्य से आप सुखी रहेंगी। आपको अपनी चलायमान प्रकृति पर नियंत्रण रखना होगा अन्यथा एक के बाद एक कार्यों को बीच में छोड़कर आगे बढ़ने की प्रवृत्तिवश आपके कार्य देर से सफल होंगे और कभी असफल भी होंगे।

आपका मूलांक 1 है तथा भाग्यांक 2 है। मूलांक 1 का स्वामी सूर्य है तथा भाग्यांक 2 का स्वामी चंद्र है। मूलांक स्वामी सूर्य का भाग्यांक स्वामी चंद्र से सम संबंध हैं। भाग्यांक स्वामी चंद्र के प्रभाव से आपका भाग्यचक्र घटता-बढ़ता रहेगा। अपने जीवन में आपको विभिन्न परिवर्तन देखने को मिलेंगे। कभी आप भाग्य की ऊंचाइयों को प्राप्त करेंगी, तो कभी अवनति भी देखनी होगी । चंद्र प्रभाव से कल्पना शक्ति आप में अच्छी होगी और जो भी कार्य करेंगी सोच-विचार कर करेंगी। मूलांक एवं भाग्यांक आपस में सम होने से सूर्य एवं चंद्र के पूर्ण

गुण-अवगुण आपके अंदर रहेंगे। आप एक उदीयमान सितारे की तरह अपने जीवन में चमकेंगी। सूर्य की उदीयमान किरणों की तरह आपका जीवन प्रकाशित होगा एवं भाग्य का सितारा चमकेगा, लेकिन चंद्र प्रभाव से कभी-कभी आप अमावस्या जैसे अंधकारमय दिन भी देखेंगी। आपकी सामाजिक स्थिति उच्च कोटि की रहेगी तथा समाज में आप अपनी मेहनत से मान-सम्मान प्राप्त करेंगी। रोजगार-व्यापार के क्षेत्र में आपकी गिनती सफल महिला के रूप में होगी।

मूलांक 1 तथा भाग्यांक 2 के प्रभाव से आपका भाग्योदय 20 वें वर्ष की अवस्था से प्रारंभ होगा। 28 एवं 29 वर्ष पर उन्नति मिलेगी एवं 37 से 38 वर्ष की अवस्था पर पूर्ण भाग्योदय का लाभ प्राप्त होगा।

आपके मूलांक 1 की मित्रता 4 एवं 8 से है तथा भाग्यांक 2 की मित्रता 7 एवं 9 से है। अतः आपके जीवन में 1, 2, 4, 7, 8, 9 के अंक विशेष महत्वपूर्ण रहेंगे। इनसे आपके जीवन में कुछ विशेष घटनाएं घटित होंगी।

आपके मूलांक का आपके भाग्यांक से सम संबंध होने से मूलांक-भाग्यांक के प्रभाव न्यूनाधिक मात्रा में आपके अनुरूप जाएंगे। आपके जीवन की प्रमुख घटनाएं इन्हीं अंकों की तारीखों मास, ईस्वी सन् या आयु के वर्षों में घटित होंगी। जब कभी इन्हीं अंकों की तारीख, मास वर्ष के साथ आपके लिए निर्धारित शुभ वार का भी मेल होता हो, तो ऐसा दिन आपके लिए विशेष फलदायी तथा किसी भी कार्य को प्रारंभ करने, पत्र लेखन या उच्च अधिकारी/व्यक्ति से मिलने हेतु अधिक उपयुक्त रहेगा। आप अपने विगत जीवन में घटित घटनाओं का अवलोकन करेंगी, तो पाएंगी कि काफी घटनाएं इन्ही अंकों के मास, वर्ष या दिन को घटित हुई होंगी।

आपके लिए जनवरी, फरवरी, अप्रैल, जुलाई, अगस्त, सितंबर के माह विशेष घटनाक्रम वाले होंगे तथा आप कोई भी नया कार्य ऐसे ही दिन प्रारंभ करें, जब दिन, तारीख, मास तथा वर्ष आपके मूलांक तथा भाग्यांक से भी मेल स्थापित करें तथा एक ही समय पर सभी शुभ रहें।

इसी प्रकार आपकी अवस्था के ऐसे वर्ष, जिनका योग 1, 2, 4, 7, 8, 9 होता है, आपके लिए शुभ फलदायक रहेंगे।

1 . 10, 19, 28, 37, 46, 55, 64, 73
2 . 11, 20, 29, 38, 47, 56, 65, 74
4 . 13, 22, 31, 40, 49, 58, 67
7 . 16, 25, 34, 43, 52, 61, 70
8 . 17, 26, 35, 44, 53, 62, 71
9 . 18, 27, 36, 45, 54, 63, 72

उपर्युक्त वर्ष आपके जीवन में परिवर्तनकारी रहेंगे। इन वर्षों में कुछ प्रमुख घटनाएं घटित होंगी, जो आपके जीवन की दशा बदलेंगी तथा कुछ घटनाएं यादगार साबित होंगी।

ग्रह फल

सूर्य

दशमभाव में सूर्य हो तो जातक-प्रतापी, व्यवसाय कुशल, राजमान्य लब्ध-प्रतिष्ठ, राजमन्त्री, उदार, ऐश्वर्य सम्पन्न एवं लोकमान्य होता है।

कुम्भ राशि में रवि हो तो जातक स्थिरचित्त, स्वार्थी, कार्यदक्ष, क्रोधी, दुःखी, निर्धन, अच्छा ज्योतिषी एवं मध्य अवस्था के पश्चात् सन्यास लेने वाला होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य दशम भाव में स्थित है अतः पिता की आप प्रिय रहेंगी। उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी पूर्ण रहेगी। धनैश्वर्य से वे सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन में आपको पूर्ण रूप से आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके साथ ही आपके आजीविका या व्यापार संबंधी कार्य भी उन्हीं की प्रेरणा एवं सहायता से सम्पन्न होंगे एवं आप इन कार्यों में वांछित सफलता अर्जित कर सकेंगी।

आप भी उनका पूर्ण हार्दिक सम्मान करेंगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध प्रायः मधुर ही रहेंगे तथापि यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे। जीवन में आप पिता को अपनी ओर से पूर्ण आर्थिक सहायता प्रदान करेंगी एवं सुख दुःख में सर्वदा उनका सहयोग करेंगी।

चन्द्र

सप्तमभाव में चन्द्रमा हो तो जातक सभ्य, धैर्यवान् नेता, विचारक, प्रावासी, जलयात्रा करने वाला, व्यापारी, अभिमानी, वकील, कीर्तिमान, शीतल स्वभाववाला एवं स्फूर्तिवान् होता है।

वृश्चिक राशि में चन्द्रमा हो तो जातक अपने माता-पिता, भाइयों आदि से अलग रहने वला, नास्तिक, लोभी, बन्धुहीन, परस्त्रीरत, झगड़ालू, स्पष्ट वक्ता, बुरे विचार रखने वाले, दुःखी, हठी, अनैतिक विचारों वाला एवं धनी होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा सप्तम भाव में स्थित है। अतः माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। आपके प्रति उनके मन में प्यार एवं स्नेह का भाव रहेगा। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा युक्त रहेंगी एवं जीवन में आपको अपना सहयोग प्रदान करेंगी। आपकी शादी करने में भी उनका विशेष सहयोग रहेगा तथा आपको व्यापारादि कार्यों में भी पूर्ण आर्थिक या अन्य रूप से सहयोग तथा प्रोत्साहन देंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धालु रहेंगी एवं हमेशा उनका हार्दिक सम्मान करेंगी। उनकी बातों से आप प्रायः सहमत रहेंगी तथा उसका पालन करने के लिए भी तत्पर रहेंगी। आपके मध्य कभी कभी सैद्धान्तिक मतभेदों की भी उत्पत्ति होगी जिसके कारण कभी कभी अप्रिय स्थिति भी उत्पन्न हो सकती है। परन्तु कुल मिलाकर आपसी संबंध अच्छे रहेंगे तथा एक दूसरें का सहयोग करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे।

मंगल

सातवें भाव में मंगल हो तो जातक वातरोगी, राजभीरु, शीघ्रकोपी, कटुभाषी, स्त्रीदुःखी, धूर्त, मूर्ख, निर्धन, घातकी, धननाशक एवं ईर्ष्यालु होता है।

वृश्चिक राशि में मंगल हो तो जातक नीति-दक्ष, अच्छी स्मरण शक्ति ईर्ष्यालु स्वभाववाला, बहुतहठी, अभिमानी, चोरों का नेता, पातकी एवं दुराचारी होता है।

आपके जन्म समय में मंगल सप्तम भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा वे शारीरिक रूप से कष्टानुभूति भी प्राप्त करेंगे। आप उनकी प्रिय रहेंगी तथा आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह तथा सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा। धन धान्य से वे युक्त रहेंगे तथा जीवन में उनसे आप पूर्ण रूपेण सहयोग प्राप्त करेंगी एवं आपकी विवाह सम्पन्न कराने में भी उनका मुख्य योगदान रहेगा। साथ ही व्यापार संबंधी कार्यों एवं सुख दुःख में वे आपको अपनी ओर से पूर्ण आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहायता प्रदान करते रहेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह एवं विश्वास रहेगा एवं उनके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपका सहयोग रहेगा। साथ ही विषम परिस्थितियों में भी आप उनको आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहायता प्रदान करेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण इसमें कटुता भी आएगी लेकिन यह अस्थायी होगी तथा शीघ्र संबंध सामान्य हो जाएंगे।

बुध

दशमभाव में बुध हो तो जातक सत्यवादी, मनस्वी, व्यवहार कुशल, लोकमान्य, विद्वान, लेखक, कवि जमींदार, मातृ-पितृ भक्त, राजमान्य, न्यायी एवं भाग्यवान् होता है।

कुम्भ राशि में बुध हो तो जातक कुटुम्बहीन, दुःखी, अल्पधनी, झगड़ालू, प्रसिद्ध निर्बल स्वास्थ्य एवं प्रगति करने वाला होता है।

गुरु

पंचमभाव में गुरु हो तो जातक नीतिविशारद, सन्तिवान्, सट्टे से धन प्राप्त करने वाला, कुलश्रेष्ठ, लोकप्रिय, कुटुम्ब में सबसे ऊँचा स्थान, ज्योतिषी एवं आस्तिक होता है।

कन्या राशि में गुरु हो तो जातक सुखी, भोगी, विलासी, चित्रकला, निपुण, चंचल, उच्चाकांक्षी, स्वार्थी, भाग्यवान्, विद्वान एवं सन्तोषी होता है।

शुक्र

बारहवें भाव में शुक्र होतो जातक धनवान्, परस्त्रीरत, बहुभोजी, शत्रुनाशक,

मितव्ययी, आलसी, पतित, धातुविकारी, स्थूल एवं न्यायशील होता है।

मेष राशि में शुक्र हो तो जातक स्वप्न जगत में विचारने वाला, आवेशपूर्ण स्वभाव, अस्थिरमन, दुःखी, बुद्धिमान्, आरामतलब, दुराचारी, परस्त्रीरत, झगड़ालू विश्वास हीन एवं अधिक खर्च करने वाला होता है।

शनि

बारहवें भाव में शनि हो तो जातक आलसी, दुष्ट, व्यसनी, व्यर्थ व्यय करने वाला, अपस्मार, उन्माद का रोगी, मातुलकष्टदायक, अविश्वासी एवं कटुभाषी होता है।

मेष राशि में शनि हो तो जातक आत्मबलहीन, मूर्ख, आवारा, क्रूर जालफरेव करने वाला, व्यसनी, निर्धन, दुराचारी, कपटी लम्पट एवं कृतघ्न होता है।

राहु

ग्यारहवें भाव में राहु हो तो जातक परिश्रमी, अल्पसन्तान, विदेशियों से धनलाभ, दीर्घायु, मन्दमति, लाभहीन, अरिष्टनाशक, व्यवसाययुक्त, कदाचित् लाभदायक एवं कार्य सफल करने वाला होता है।

मीन राशि में राहु हो तो जातक आस्तिक, कुलीन, शान्त, कलाप्रिय और दक्ष होता है।

केतु

पंचम भाव में केतु हो तो जातक वातरोगी, कुचाली, कुबुद्धि, सन्तान को नष्ट करता है, योगी, कुशाग्रबुद्धि एवं क्रोधी होता है।

कन्या राशि में केतु हो तो जातक सदारोगी, मूर्ख, मन्दाग्निरोग एवं व्यर्थवादी होता है।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। सामान्यतया वृष लग्न में उत्पन्न जातक सुदंर उदार तथा सहिष्णु स्वभाव के होते हैं। उनकी वाणी में भी मधुरता का भाव विद्यमान रहता है। साथ ही व्यक्तित्व भी आकर्षक होता है तथा अन्य जनों को प्रभावित करने में वे समर्थ रहते हैं। शारीरिक रूप से उनका स्वास्थ्य अच्छा रहता है तथा मानसिक सन्तुष्टि भी उनकी बनी रहती है। ये अत्याधिक परिश्रमी जातक होते हैं तथा परिश्रम करने की उनकी अपूर्व क्षमता रहती है जिससे जीवन में उन्नति मार्ग प्रशस्त करने तथा सुखैश्वर्य एवं वैभव अर्जित करने में वे प्रायः सफल रहते हैं। शांति एवं सहिष्णुता के साथ इनमें साहस तथा पराक्रम का भाव भी विद्यमान रहता है।

अतः इसके प्रभाव से आपका व्यक्तित्व आकर्षक रहेगा तथा सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। अपने वाक्चातुर्य से शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यों को सिद्ध करने में भी सफल होंगी। आपका शारीरिक कद मध्यम होगा परन्तु स्वरूप सुदंर एवं आकर्षक होगा। आप में सहनशीलता का भाव भी विद्यमान होगा।

आप एक परिश्रमी महिला होंगी तथा अपनी योग्यता एवं परिश्रम से किसी उच्च पद या समाज में प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त करेंगी साथ ही अपने सदगुणों के द्वारा श्रेष्ठ जनों को सन्तुष्ट करने में सफल होंगी। आप एक विदुषी महिला होंगी तथा विभिन्न विषयों कला साहित्य एवं संगीत का आपको उचित ज्ञान रहेगा तथा इस क्षेत्र में प्रसिद्धि भी प्राप्त होगी।

लग्न में लग्नेश शुक्र की राशि के प्रभाव से शारीरिक एवं मानसिक रूप से आप स्वस्थ तथा प्रसन्न रहेंगी तथा उत्साह एवं परिश्रम पूर्वक अपने सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करेंगी। दानशीलता का भाव भी आप में विद्यमान होगा तथा समय समय पर जरूरतमन्दों को दान देने में तत्पर रहेंगी। आप एक बुद्धिमान महिला होंगी तथा आपके कार्य कलापों पर बुद्धिमता की स्पष्ट छाप होगी।

धर्म के प्रति आप श्रद्धालु होंगी तथा अवसरानुकूल धार्मिक अनुष्ठानों तथा कार्य कलापों को सम्पन्न करेंगी। धार्मिक क्षेत्र में आप किसी संस्था से सम्बंधित हो सकती हैं या इस क्षेत्र में आपको कोई विशिष्ट सफलता या प्रतिष्ठा प्राप्त हो सकती है।

आप में उदारता तथा सहनशीलता का भाव भी विद्यमान रहेगा तथा अवसरानुकूल आप समाज सेवा के लिए भी उद्यत रहेंगी। आपकी प्रवृति सात्विक होगी तथा विचार भी उत्तम होंगे। साथ ही परोपकार की भावना भी विद्यमान होगी। इसके अतिरिक्त कई शास्त्रों का आपको ज्ञान होगा जिससे आपको सामाजिक मान प्रतिष्ठा तथा प्रसिद्धि प्राप्त होगी।

इस प्रकार आप स्वस्थ सुदंर आकर्षक व्यक्तित्व, विदुषी एवं साहसी महिला होंगी तथा प्रसन्नतापूर्वक आपका जीवन व्यतीत होगा।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आपकी प्रवृति धन संग्रह करने की रहेगी तथा वर्तमान एवं भविष्य के प्रति हमेशा चिन्तित रहेंगी फलतः धन संग्रह सामान्यतया आपके पास रहेगा जिससे आर्थिक स्थिति संतुलित रहेगी। साथ ही आप जायदाद आदि पर पूंजी निवेश करेंगी जिससे प्रचुर मात्रा में लाभ अर्जित होता रहेगा। आपकी पारिवारिक सुख शान्ति भी उत्तम रहेगी तथा आनन्द पूर्वक पारिवारिक जनों के साथ अपना समय व्यतीत करेंगी। इसके साथ ही उनकी खुशी तथा खुशहाली के लिए हमेशा प्रयत्नशील रहेंगी तथा पारिवारिक जन भी आपको पूर्ण सहयोग तथा सहायता प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे।

सामान्यतया आपको सभी स्वाद प्रिय होंगे परन्तु मिष्ठान के प्रति आपकी विशेष रूचि रहेगी। चूंकि यह भाव वाणी का प्रतिनिधित्व करता है तथा बुध इसका स्वामी है अतः आपकी वाणी मृदु तथा प्रभावशाली रहेगी तथा अन्य जनों को अपनी मृदुवाणी से प्रभावित करने में समर्थ रहेंगी। साथ ही अपने विचारों को भी कुशलता पूर्वक अभिव्यक्त करेंगी यदि आप यह समझते है कि यह विचार अवसर के अनुकूल नहीं है तो आप उसे शीघ्र ही परिवर्तन करने में कोई विलम्ब नहीं करेंगी। आतिथ्य सत्कार की भावना भी आपके मन में रहेगी। इसके अतिरिक्त पुरूष वर्ग से आपको प्रचुर मात्रा में लाभ होगा तथा वाहन एवं बहुमूल्य धातु या रत्नों की भी उपलब्धि होगी। साथ ही धार्मिक या सज्जन लोगों से आप सामान्यतया मित्रता की इच्छुक रहेंगी।

पराक्रम, सहोदर, प्रकाशन एवं लघुयात्राएं

आपके जन्म समय में तृतीभ भाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चंद्रमा है। अतः इसके प्रभाव से भाई बहिनों के प्रति आप उदार तथा भावुक रहेंगी एवं उनके साथ सहानुभूति का व्यवहार करेंगी। आप उनसे अत्यन्त ही स्नेह भाव रखेंगी तथा उनकी सुख सुविधा के लिए पूर्ण रूप से प्रयत्नशील रहेंगी परन्तु उनसे आपको यथोचित मान सम्मान अल्प मात्रा में ही प्राप्त होगा। कभी कभी परिस्थिति के अनुकूल आप अत्यंत ही साहस एवं पराक्रम का प्रदर्शन भी करेंगी। आप एक बुद्धिजीवी महिला होंगी तथा नैतिकता के प्रति पूर्ण सजग रहेंगी। साथ ही समयानुसार अपने विचारों में भी परिवर्तन करती रहेगी। आपकी स्मरण शक्ति भी तीव्र रहेगी तथा ऐतिहासिक घटनाओं को पूर्ण रूप से याद रखेंगी। इसके अतिरिक्त आप में क्रोध के भाव की भी क्षणिकता रहेगी तथा शीघ्र ही शान्त भी हो जाएंगी।

जीवन में आप एक कर्तव्य परायण महिला होंगी तथा यत्नपूर्वक अपनी जिम्मेदारियों को पूर्ण करेंगी। साथ ही नवीन ज्ञान या अन्य विषयों को शीघ्र ही सीखने में समर्थ रहेंगी। दर्शन शास्त्र या उच्च शिक्षा के प्रति भी आपकी रूचि रहेगी। सामाजिक जनों के प्रति आपका सेवा भाव रहेगा अतः इससे आपको ख्याति तथा सम्मान की प्राप्ति होगी। आप किसी भी उददे्श्य को कार्य रूप में परिवर्तित करने के लिए साहसिक निर्णय लेने में भी समर्थ रहेंगी। अतः यदा कदा आपको समूह का नेतृत्व भी मिल सकता है। साथ ही समाज सेवा या नवीन खोज आदि से भी आप ख्याति अर्जित कर सकती हैं। आधुनिक संचार साधनों की सुख सुविधाएं भी आपको प्राप्त होगी अतः टेलीफोन, दूरर्शन तथा वाहन आदि से युक्त रहेंगी। साथ ही प्रकाशन संपादक या संवाददाता के रूप में भी आप सफल हो सकती हैं। इस प्रकार परिश्रम पूर्वक आप अपने घर एवं परिवार का पालन करेंगी। साथ ही आपकी प्रवृति धार्मिक रहेगी तथा शील स्वभाव भी उत्तम रहेगा।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है। अतः इसके प्रभाव से आप जीवन में समस्त भौतिक सुख संसाधनों एवं आधुनिक विलासमय वस्तुओं से युक्त होंगी तथा सुख पूर्वक इनका उपभोग करने में समर्थ होंगी। शुक्र के प्रभाव से युवावस्था से ही आपको सुख-संसाधनों की उपलब्धि हो जायेगी तथा इसके लिए विशेष परिश्रम भी कम ही करना पड़ेगा।

जीवन में चल एवं अचल सम्पत्ति के स्वामित्व को आप अवश्य प्राप्त करेंगी। आपको प्रचुर मात्रा में धन सम्पत्ति की प्राप्ति होगी तथा विवाह के बाद इसमें काफी वृद्धि होगी। चल सम्पत्ति की उपेक्षा अचल सम्पत्ति की आपके पास बहुलता होगी जिससे जमीन जायदाद तथा मकान प्रमुख होंगे। साथ ही समस्त आधुनिक भौतिक एवं विलासमय उपकरणों से आप सम्पन्न होंगी तथा आनंदपूर्वक इनका उपभोग करेंगी।

उत्तम निवास स्थान के विषय में आप सौभाग्यशाली महिला समझी जाएंगी। आपका घर उत्तम एवं आधुनिक स्थान में होगा तथा सर्व प्रकार से यह आकर्षक एवं सुसज्जित रहेगा। आप भी इसकी सुन्दरता एवं सफाई का पूर्ण ध्यान रहेंगी। आपका घर किसी अच्छी कालोनी में होगा एवं पड़ोसी भी बुद्धिमान एवं शिक्षित होंगे तथा आपसी संबंध अच्छे रहेंगे। आपकी कुंडली में उत्तम वाहन के भी योग बनते है जिसका आप युवावस्था से ही उपयोग करके प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी।

आपकी माता जी सुन्दर सुसंस्कृत एवं मृदुस्वभाव की महिला होंगी तथा उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा। वह एक चतुर एवं बुद्धिमान महिला होंगी तथा अपनी चतुराई एवं व्यवहार कुशलता से परिवार का अच्छी तरह पालन पोषण करेंगी एवं किसी भी सदस्य को उनसे कोई परेशानी नहीं होगी। आपके प्रति उनके हृदय में विशेष वात्सल्य एवं स्नेह का भाव होगा तथा अवसरानुकूल उनसे आपको प्रचुर मात्रा में आर्थिक सहयोग की भी प्राप्ति होती रहेगी। आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान का भाव रहेंगी तथा उनकी आज्ञा का पालन करने में तत्पर होंगी। इसके अतिरिक्त सुख-दुख में उनको अपनी ओर से किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगी। इस प्रकार आपसी संबंध भी मधुर होंगे।

अध्ययन के प्रति वचपन से ही आपकी रूचि होगी तथा बुद्धिमान एवं परिश्रमशील होने के कारण प्रारंभ से ही अध्ययन के क्षेत्र में अनावश्यक समस्याओं एवं बाधाओं का सामना नहीं करना पड़ेगा। इसी परिपेक्ष्य में आप स्नातक परीक्षा आसानी से उतीर्ण करेंगी तथा इससे आप की आत्मिक शक्ति में वृद्धि होगी फलतः जीवन में इच्छित उन्नति एवं सफलता अर्जित करने में समर्थ होंगी। सामाजिक जनों एवं संबंधियों में भी आपके सम्मान में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपसे प्रसन्न एवं प्रभावित होंगी। इससे आपको प्रोत्साहन मिलेगा जिससे भविष्य उज्ज्वल होगा।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्मसमय में पंचमभाव में कन्याराशि उदित हो रही थी। जिसका स्वामी बुध है तथा वृहस्पति की स्थिति भी पंचमभाव में ही स्थित है। अतः इसके प्रभाव से आप तीव्र बुद्धि के स्वामिनी होंगी तथा आपने कार्य कलापों को बुद्धिमता से ही सम्पन्न करेंगी। फलतः सभी लोग आपकी बुद्धिमता से प्रभावित होंगे तथा आप किसी गंभीर समस्या का समाधान स्वबुद्धिबल से आसानी से सम्पन्न करने में समर्थ होंगी। वैदिक धर्म एवं दर्शन शास्त्रों में आपकी विशेष रूचि होगी तथा इन क्षेत्रों में स्वपरिश्रम से ज्ञानार्जन करेंगी तथा शोध कार्य में भी आपकी प्रवृति हो सकती है। आधुनिक विज्ञान, गणित एवं ज्योतिष का भी आपका गहन ज्ञान होगा तथा एक ज्योतिषी के रूप में भी आप प्रसिद्ध हो सकती हैं। इस प्रकार समाज में आप एक विदुषी महिला के रूप में सम्मान एवं प्रतिष्ठा अर्जित करने में समर्थ होंगी।

पंचमभाव में वृहस्पति के प्रभाव से प्रेम प्रसंग आदि में भी आपकी रूचि रहेगी तथापि आपका प्रेम आदर्शवादी एवं मर्यादित होगा। आप में भावुकता का भाव अवश्य रहेगा। प्रेम को आप आदर्श समझेंगे तथा केवल मनोरंजन का साधन नहीं समझेंगे। अतः ऐसे अपनत्व के भाव के कारण आपका प्रेम प्रसंग विवाह में भी परिवर्तित हो सकता है जिससे आपका जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा।

आपको सन्तति की प्राप्ति यथासमय होगी तथा कन्याओं की अपेक्षा पुत्र सन्तति की अधिकता रहेगी। आपके सभी बच्चे सुन्दर, स्वस्थ बुद्धिमान एवं गुणवान होंगी तथा स्वपरिश्रम एवं योग्यता से उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे। उनकी प्रगति से आपको मानसिक संतुष्टि प्राप्त होगी। माता पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण सेवा एवं श्रद्धा का भाव होगा तथा आज्ञाकारिता के भाव से भी युक्त होंगे तथा जीवन में शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को माता पिता की सलाह से ही सम्पन्न करेंगे। माता की अपेक्षा पिता के प्रति उनके मन में विशेष लगाव होगा तथा अपनी व्यक्तिगत समस्याओं का समाधान पिता के द्वारा करवाएंगे। लेकिन इससे माता के सम्मान एवं महत्व में कमी नहीं आएगी। वे माता पिता की वृद्धावस्था में पूर्ण सेवा करेंगे तथा उनकी सेवा करना अपना धर्म समझेंगे।

शिक्षा के क्षेत्र में आपके बच्चों की प्रारंभ से ही पूर्ण रूचि होगी तथा छोटी कक्षाओं से ही वे अच्छी सफलता का प्रदर्शन करेंगी। उच्च शिक्षा के क्षेत्र में भी वे कीर्तिमान स्थापित कर सकते है जिससे आपको मानसिक संतुष्टि की प्राप्ति होगी। वे विनम्र एवं व्यवहार कुशल भी होंगे जिससे अन्य सामाजिक लोग भी उनसे प्रसन्न तथा प्रभावित होंगे। इससे आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी। इस प्रकार सन्तति के सम्बंध में आप भाग्यवान महिला होंगी तथा उनसे आजीवन आपको वांछित सुख एवं सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी।

रोग, शत्रु, सेवक एवं मामा

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में तुला राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आप सामान्यतया स्वस्थ ही रहेंगी तथा किसी भी प्रकार के कष्ट को सहन करने की शक्ति आप में विद्यमान रहेगी। लेकिन यदा कदा बुखार या अन्य रोगों से आप शारीरिक कष्ट की अनुभूति कर सकती है। आपको अपने स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखना चाहिए क्योंकि आप में रोग अवरोधक तत्वों की कमी रहेगी जिससे एक बार बीमार पड़ने पर काफी समय बाद ही आप स्वस्थ हो पाएंगी। इसके अतिरिक्त भावुकता भरे क्षणों में आपको कोई महत्वपूर्ण या संवेदनशील कार्य नहीं करना चाहिए।

आपका शत्रु या विरोध पक्ष पर्याप्त होगा तथा आपके सम्मान में कमी करने के लिए नित्य प्रयत्नशील रहेगा। क्योंकि वे आपकी खुशहाली के प्रति ईर्ष्या का भाव रखेंगे। साथ ही मित्र, संबन्धी एवं पड़ौसी भी यदा कदा आपके विरोध करने में तत्परता का प्रदर्शन करेंगे। अतः प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष शत्रुओं के प्रति आपको हमेशा सतर्क रहना चाहिए। यद्यपि मुकद्दमे आदि में आपको कोई विशेष रूचि नहीं रहेगी परन्तु धन संबन्धी मामलों में आप कोई मुकद्दमा दायर कर सकती हैं यद्यपि इसमें आपका काफी धन व्यय होगा परन्तु किंचित परिश्रम के उपरांत आपको सफलता भी मिल सकती है ।

सेवक वर्ग आपके लिए विशेष विश्वास पात्र तथा ईमानदार नहीं रहेंगे तथा इनसे समय समय पर आपको आर्थिक या अन्य प्रकार से हानि का सामना करना पड़ेगा। साथ ही पारिवारिक रहस्यों का भेद खोलकर भी वे आपकी मान हानि कर सकते हैं। आप स्वच्छन्द प्रवृत्ति की महिला होंगी तथा इसी के अनुसार अपने अधिकाँश कार्यो को सम्पन्न करेंगी। यद्यपि आपके पास धनऐश्वर्य पूर्ण होगा परन्तु आपातकाल के लिए संग्रह करने में असमर्थ रहेंगी फलतः ऋण आदि लेने की आवश्यकता पड़ेगी। इसके साथ ही मामा मामी आदि से आपको कोई विशेष सुख एवं सहयोग की प्राप्ति नहीं होगी। खान पान के प्रति भी आपको सतर्क रहना चाहिए अन्यथा वृद्धावस्था में वात या गुर्दे से संबन्धित परेशानी हो सकती है। यद्यपि आप एक धन मान सम्मान से युक्त महिला होंगी परन्तु कई बार आपके अच्छे कार्यो से भी समाज में शत्रुता का भाव बन सकता है। अतः सचेत रहें।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है साथ ही मंगल भी सप्तम भाव में ही स्थित है। वृश्चिक राशि की सप्तम भाव में स्थिति से जातक का सहयोगी व्ययशील पित प्रकृति एवं धर्म के प्रति अल्प श्रद्धा वाला होता है परन्तु मंगल की स्वगृही स्थिति के कारण उसमें तेजस्विता पराक्रमी एवं बुद्धिमता का भाव भी विद्यमान रहेगा।

अतः इसके प्रभाव से आपके पति तेजस्वी पराक्रमी एवं साहसी होंगे वह एक शिक्षित एवं बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा अपने कार्यक्षेत्र में दक्ष होंगे। साहित्य एवं कला के प्रति भी उनकी रूचि रहेगी एवं स्वगृही मंगल के प्रभाव से कर्तव्य परायणता का भाव भी विद्यमान होगा जिससे परिवार एवं समाज के प्रति वह ईमानदारी से अपने कर्तव्य का पालन करेंगे लेकिन स्वाभिमानी प्रवृति के कारण यदा कदा असहिष्णुता के भाव का प्रदर्शन भी कर सकते हैं।

आपके पति लालिमा लिए गौरवर्ण की व्यक्ति होंगे तथा उनका कद भी सामान्य रहेगा शारीरिक संरचना की दृष्टि से वह पुष्ट एवं आकर्षक होंगे तथा शरीर की सुडौलता दर्शनीय रहेगी। एवं शारीरिक सुडौलता बनाए रखने के लिए व्यायाम या योगिक क्रियाएं भी सम्पन्न करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त पाक शास्त्र में वह दक्ष होंगे तथा कभी कभी उनके द्वारा निर्मित स्वादिष्ट व्यंजनों से संबंधित लोग प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे।

सामान्यतया मंगल की सप्तम भाव में स्थिति के फलस्वरूप विवाह में अनावश्यक विलम्ब होता है लेकिन आपकी कुंडली में सप्तम भाव में स्वगृही मंगल के स्थित होने पर आपका विवाह यथोचित समय पर विज्ञापन या किसी बन्धु अथवा संबंधी के माध्यम से सम्पन्न होगा एवं इसमें अनावश्यक विलम्ब नहीं होगा। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सुख एवं शांति पूर्वक व्यतीत होगा तथा आपसी संबंधों में मधुरता बनी रहेगी।

आपका ससुराल किसी समृद्ध एवं सम्मानीय परिवार में होगा तथा उनकी आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी। विवाह में आप दहेज या अन्य रूप से ससुराल में प्रचुर मात्रा में धन सम्पति लाएंगी। विवाह के बाद भी मायके से नैतिक एवं आर्थिक सहयोग मिलता रहेगा। सास ससुर के मध्य आपके संबंधों में मधुरता रहेगी तथा वे भी आपको यथोचित स्नेह प्रदान करेंगे।

सास ससुर के प्रति आपके पति का सेवा एवं सम्मान का भाव रहेगा परन्तु उनकी तेजस्विता की प्रवृति से सास ससुर को किंचित परेशानी की अनुभूति हो सकती है। साले एवं सालियों को भी वह अपने कार्य कलापों से प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रखेंगे।

व्यापार में साझेदारी के लिए स्थिति सामान्यतया अनुकूल रहेगी तथा इससे आपको लाभ एवं उन्नति प्राप्त होगी। यदि बन्धुवर्ग से साझेदारी की जाए तो इनसे इच्छित लाभ की प्राप्ति हो सकती है

आयु, दुर्घटना एवं बीमा

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में धनुराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप आध्यात्म, ज्यौतिष या तंत्र मंत्र आदि के प्रति श्रद्धा का भाव रखेंगी तथा आपका इस पर पूर्ण विश्वास रहेगा। आपको इन विषयों का न्यूनाधिक ज्ञान भी हो सकता है। साथ ही मनोविज्ञान के क्षेत्र में भी आप कुछ न कुछ कार्य अवश्य सम्पन्न करेंगी। पैतृक सम्पत्ति आपको मिलेगी लेकिन वह अल्प मात्रा में ही होगी तथा उसका उपभोग भी अच्छी तरह से करने में असमर्थ रहेंगी। आपके बन्धु या संबन्धी भी उस जायदाद पर अपना अधिकार प्रस्तुत कर सकते है जिससे परस्पर अनावश्यक विवादों से आपसी संबंधों में कटुता का वातावरण बनेगा। अतः पारिवारिक कलह की भी संभावना रहेगी। अतः इससे आपको प्रसन्नता की अपेक्षा अप्रसन्नता ही अधिक प्राप्त होगी।

आपका दाम्पत्य जीवन मधुर रहेगा तथापि यदा कदा आर्थिक कमी से परेशानियां हो सकती है लेकिन आप स्वपरिश्रम एवं पराक्रम से उसे दूर करने में समर्थ रहेंगी। बीमा आदि कराने से आपके लाभ मार्ग प्रशस्त होंगे तथा इससे आपको समय समय पर लाभ होता रहेगा अतः बीमा अवश्य करवाएं वह अपना या किसी भी वस्तु का हो सकता है। यद्यपि आपकी कुडंली में कोई दुर्घटना या चोरी आदि का कोई योग नहीं है तथापि इस बारे में आपको सतर्क रहना चाहिए लेकिन इससे कोई विशेष हानि नहीं होगी आपकी आयु उत्तम रहेगी तथा जीवन में स्वपरिश्रम एवं पराक्रम से धनार्जन करेंगी तथा इच्छित सुख संसाधनों को अर्जित करके अपना जीवन सुख पूर्वक व्यतीत करेंगी।

प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा एवं लम्बी यात्राएं

आपके जन्म समय में नवम भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है अतः इसके प्रभाव से यद्यपि आप धर्म या धार्मिक कार्य कलापों का विरोध नहीं करेंगी परन्तु इसमें स्वयं भी कोई विशेष रूचि नहीं लेंगी तथा स्वेच्छा से किसी धार्मिक ग्रंथ का अध्ययन नहीं करेंगी लेकिन ईश्वर के प्रति आपके मन में पूर्ण विश्वास रहेगा तथा इसी परिपेक्ष्य में आप व्रतादि भी सम्पन्न कर सकती है साथ ही दैनिक पूजा पाठ में न्यूनाधिक समय प्रदान करेंगी या इस उददे्श्य की पूर्ति के लिए किसी पूजा स्थल पर जाएंगी। आप धार्मिक कार्य कलापों पर विशेष व्यय करना उचित नहीं समझती। लेकिन अन्य विषयों में उच्च शिक्षा अर्जित करने में समर्थ रहेंगी। धर्म एवं भाग्य को अपनी विचार धारा में कम ही सम्मिलित करेंगी अर्थात कार्य पर अधिक विश्वास करेंगी। आपकी अर्न्तप्रज्ञा भी विकसित रहेगी तथा मन में आत्मा को स्वीकार करेंगी।

आपके विचार में जीवन कार्य प्रधान होना चाहिए तथा भाग्य इसमे सहायक होना चाहिए। अतः अन्य जनों को हमेशा कर्म करने की शिक्षा प्रदान करेंगी तथा भाग्य पर अल्प विश्वास करने को कहेंगी। परन्तु प्रौढ़ावस्था में स्वयं कर्म की अपेक्षा भाग्य को विशेष महत्व प्रदान करेंगी। आपकी लम्बी दूरी की यात्राएं अल्प मात्रा में ही होगी तथा इनसे आपको जीवन में विशेष लाभ भी अल्प मात्रा में ही प्राप्त होगा लेकिन समाज में आप एक सम्मानित तथा ख्याति प्राप्त महिला के रूप में सम्मान्नीया रहेगी। आप अपने पूर्व जन्मों के कर्मो के फल को युवावस्था के बाद प्राप्त करेंगी तथा इस समय सुखी रहेंगी लेकिन वृद्धावस्था में किंचित परेशानी हो सकती है। साथ ही पौत्रादि से भी इच्छित सुख एवं सहयोग मध्यम रूप से ही प्राप्त होगा तथापि आप सामान्यतया सन्तुष्टि की ही अनुभूति करेंगी।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशम भाव में कुंभ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। साथ ही बुध भी दशम भाव में ही स्थित है। कुंभराशि वायुतत्व एवं बुध ग्रह पृथ्वीतत्व है। अतः इनके प्रभाव से आपका कार्य श्रमसाध्य होने के साथ साथ बौद्धिकता से भी युक्त होगा तथा इसमें आप इच्छित उन्नति एवं लाभ अर्जित करने में समर्थ होंगी। इसके अतिरिक्त कार्य क्षेत्र में स्थायित्व भी रहेगा।

द्वितीयेश एवं पंचमेश योग कारक बुध की दशम भाव में स्थिति के प्रभाव से आजीविका के लिए आप लिपिक, लेखक, कवि, चित्रकार, जिल्दसाज शिक्षक,ज्यौतिषी,पुस्तक विक्रेता,यंत्र निर्माण कर्ता, सम्पादक, संशोधक, अनुवादक, वकील, दूत कार्य, टेलीफोन आपरेटर या विभाग में अधिकारी हो सकती हैं। अतः यदि आप उपरोक्त क्षेत्रों में अपनी आजीविका का चयन करें तो इनमें आपको वांछित उन्नति एवं सफलता प्राप्त होगी तथा भविष्य में भी प्रगति के मार्ग प्रशस्त रखेंगी। अतः उज्ज्वल भविष्य के लिए आपको उपरोक्त क्षेत्रों में ही कार्य करना चाहिए।

वाणिज्य कारक बुध की दशमस्थ स्थिति से व्यापार का क्षेत्र भी आपके लिए अनुकूल एवं लाभदायक होगा। अतः एजेंसी, दलाली, पुस्तक विक्रेता, अगरबत्ती, पुष्प मालाएं, कागज के खिलौने आदि से वांछित लाभ की प्राप्ति होगी। साथ ही कला एवं चित्रकारी भी आपका व्यवसाय हो सकता है। यदि आप एक व्यवसायी के रूप में अपना कार्य प्रारंभ करना चाहती है तो उपरोक्त क्षेत्रों में ही व्यापार का आरंभ करना चाहिए। इससे आपको प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित होगा तथा उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होकर नवीन आयाम स्थापित करने में समर्थ होंगे।

पंचमेश बुध के प्रभाव से जीवन में आपको विशिष्ट उन्नति एवं सम्मान की प्राप्ति होगी तथा अपने क्षेत्र में आप एक आदरणीय प्रभावी एवं अनुकरणनीय मानी जाएंगी। साथ ही आप किसी सामाजिक या धार्मिक संस्था की भी उच्चपदाधिकारी हो सकती है। इससे आपकी मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा सभी लोगों का आपके प्रति सम्मान का भाव रहेगा। इसके अतिरिक्त आपका भाग्य भी प्रबल होगा तथा सौभाग्य से आप सामाजिक मान प्रतिष्ठा एवं यश अर्जित करेंगी तथा एक सम्मानीय महिला के रूप में अपना जीवन व्यतीत करेंगी।

आपके पिता एक बुद्धिमान योग्य विचारक एवं विनम्र स्वभाव के व्यक्ति होंगे तथा अन्य जनों के मध्य उनका पूर्ण प्रभाव तथा सम्मान होगा। साथ ही अपने उत्तम कार्य कलापों से वे उचित मान प्रतिष्ठा अर्जित करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह का भाव होगा तथा शिक्षा दीक्षा का उच्चस्तर बनाने के लिए सदैव प्रयत्नशील रहेंगे। आपके कार्य क्षेत्र की उन्नति में उनका विशेष सहयोग होगा तथा उनके प्रभाव से भी आप उन्नति एवं प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगी। आपका भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान एवं सहयोग का भाव होगा तथा उनके आज्ञा पालन में तत्पर होंगी फलतः आपसी संबंधो में भी मधुरता बनी रहेगी एवं एक दूसरे के प्रति सदैव सकारात्मक भाव रहेगा।

लाभ, मित्र, समाज एवं ज्येष्ठ भ्राता

आपके जन्म समय में एकादश भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप एक महत्वाकांक्षी महिला होंगी तथा अपनी महत्वाकांक्षा तथा इच्छाओं की पूर्ति के लिए ईमानदारी तथा सत्य का अनुपालन करते हुए कार्यो में सर्वदा तत्पर रहेंगी तथा इनमें आपको सफलता भी प्राप्त होगी। आप जब कभी भी जिस वस्तु की कामना करेंगी आपको यथेष्ट रूप से उसकी प्राप्ति हो जाएगी। आप शिक्षिका, बैंक, कानून या कम्पनी आदि द्वारा इच्छित लाभ एवं धनार्जन करेंगी यदि आप स्वयं कार्यरत नहीं है तो आपके पति को उपरोक्त विभागों या सम्बन्धित लोगों से धनार्जन होगा तथा आय स्रोतों में भी वृद्धि होगी। मित्रों के संबंध में आप भाग्यशाली रहेगी तथा उनसे आपको समय समय पर उचित लाभ एवं सहयोग प्राप्त होगा एवं संकट के क्षणों में मित्रवर्ग आपको पूर्ण प्रोत्साहन प्रदान करेंगे जिससे आप उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगी। वे आपसे वयस्क भी होंगे।

आपका सामिजक स्तर उच्च रहेगा तथा बड़े बड़े अधिकारी नेता तथा अन्य समाज के महत्वपूर्ण व्यक्तियों से आपके संबंध रहेंगे जिससे समाज में आप एक प्रतिष्ठित तथा सम्मानीय महिला समझी जाएंगी । इसके साथ ही आपको अपने सामाजिक क्षेत्र में पूर्ण ख्याति प्राप्त होगी। आपको बड़े भाईयों का जीवन में पूर्ण सहयोग तथा स्नेह प्राप्त होगा तथा जीवन में वे प्रत्येक क्षेत्र में आपको यथा शक्ति अपना योगदान प्रदान करेंगे। फलतः आप पितृवत उनका आदर करेंगी। आपको युवावस्था के बाद किसी विशिष्ट सामाजिक सम्मान की प्राप्ति की भी संभावना रहेगी। इस प्रकार आप जीवन में सुखऐश्वर्य एवं संसाधनों से सर्वदा युक्त रहेंगी तथा आनन्द पूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगी।

विदेश यात्रा, हानि, बन्धन एवं कर्ज

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में मेष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आप धन का सदुपयोग करेंगी तथा अवसरनुकूल बचत करने में भी समर्थ रहेंगी। आप सामान्यतया अनावश्यक व्यय कम ही सम्पन्न करेंगी तथा हमेशा उचित जगह व्यय या निवेश करने की उत्सुक रहेंगी लेकिन आपको सामान्य कंपनियों या अन्य स्थानों पर पूंजी निवेश नहीं करना चाहिए तथा ख्याति प्राप्त जगह ही पूंजीनिवेश करें तभी लाभ प्राप्त होगा।

आपकी जीवन में उन्नति शनैः शनैः सम्पन्न होगी क्योंकि आप किसी भी कार्य को अत्यंत ही सोच समझकर एवं धैर्य पूर्वक सम्पन्न करेंगी। आपकी आर्थिक स्थिति सामान्यतया युवावस्था के बाद ही सुदृढ़ तथा संतोष प्रद होगी। अतः आपके आर्थिक क्षेत्र में किसी नाटकीय परिवर्तन की अपेक्षा कम ही रहेगी। इसके साथ ही दीर्धावाधि के निवेशों से आपको लाभ प्राप्त हो सकता है।

आपका सामान्य व्यय परोपकार संबंधी कार्यो पर होगा लेकिन मंगल के प्रभाव से कोई अनावश्यक व्यय भी कर सकती है जिसकी विशेष आवश्यकता न हो। अतः ऐसे समय में आपको सावधान रहना चाहिए। यात्राओं से आपको आनंदानुभूति होगी तथा समय समय पर लाभ भी प्राप्त होगा। जीवन में आपकी विदेश यात्रा अवश्य होगी। यह यात्रा धर्म या धार्मिक कार्य से संबंधित होगी अथवा किसी अन्य मित्र या संबंधी के सहयोग से यह यात्रा सम्पन्न होगी। इस यात्रा से आपको भविष्य में पूर्ण लाभ होगा तथा आपकी ख्याति एवं प्रसिद्धि में भी वृद्धि होगी। इसके साथ ही यदा कदा बाएं आंख से संबंधित कोई परेशानी हो सकती है लेकिन इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा।

इस वर्ष मीन राशि के शनि एकादश भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु दशम भाव में रहेंगे औंर उसके बाद मकर राशिमें नवम भाव में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि केगुरु द्वितीय भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशिमें तृतीय भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशिमें चतुर्थ भाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ बहुत उत्तम रहेगा। आप अपनी कार्य कुशलता एवं दक्षता के बल पर अपने व्यवसाय में बेहतरसफलता प्राप्त करेंगे। आपकी सफलता में आपको भाइयों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। बड़े अधिकारियों व वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा जिसका उचित लाभ उठाकर आप अपने व्यापार में कुछ नया करेंगेऔर आपको अच्छा लाभ होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने कार्यस्थल पर मान-सम्मान मिलेगा व अपने अधिकारियों की अनुकूलता प्राप्त होगी।

02 जून के बाद एकादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपको अपने कार्य क्षेत्र में बहुत अच्छा लाभ होगा। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो उसमें भी इच्छित लाभ प्राप्त होगा। भूमि से संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों को 31 अक्टूबर के बाद अच्छा लाभ मिलेगा। इस समय के अंतराल में इच्छित स्थान पर आपका स्थानान्तरण भी हो सकता है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का पूर्वार्द्धबहुत उत्तम रहेगा। आपके धनागम में वृद्धि होगीजिससे आप इच्छित बचत करके आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बना सकते हैं। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपको रत्न आभुषण इत्यादि का भी सुख प्राप्त होगा। अष्टम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से पैतृक सम्पत्ति, या ससुराल से धन प्राप्त होने का प्रबल योग बन रहे हैं।

02 जून के बाद एकादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपकी आय के स्रोतों में बढोत्तरी होगी। इस समय अंतराल में आपको अचानक धन लाभ होगा। 31 अक्टूबर के बाद भूमि, भवन, वाहन इत्यादि का सुख भी प्राप्त हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। वर्षारम्भ में द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। परिवार में एक दूसरे के प्रति समर्पण की भावना बनने के कारण सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। आपको भाइयों का

पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। चतुर्थ स्थान का केतु आपके पारिवारिक माहौल को भंग करने की कोशिश करेगा, परन्तु आप अपने बुद्धि-विवेक से उसे भी अनुकूल कर लेंगे।

02 जून के बाद आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिबिधियों मेंबढ़ चढ़ के भाग लेंगे और सामाजिक उत्थान के लिए आप किसी संस्था का संचालन भी कर सकते हैं। समाज में आपका अपना एक अलग व्यक्तित्व होगा। 31 अक्टूबर के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है उस समय आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण छा जाएगा।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल है। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रूचि बढ़ेगी। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। संतान के इच्छुक व्यक्तियों के लिए गर्भाधान का शुभ समय चल रहा है।

02 जून से आपकी दूसरी संतान के लिए समय शुभ हो रहा है। यदि आप का दुसरा बच्चा विवाह के योग्य है। तो विवाह हो जाएगा। इस समय के अंतराल में आपके बच्चों के साथ आपका भावानात्मक लगाव बढ़ेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्धउत्तम रहेगा। आपकी शारीरिक ऊर्जा व कार्य क्षमता में वृद्धि होगी। पूर्ण रूप से शारीरिक आरोग्यता बनी रहेगी। शारीरिक अनुकूलता बनाये रखने के लिए आप संतुलित आहार एवं नियमित व्यायाम करते रहेंगे। गुरु ग्रह की अनुकूलता के कारण शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे। आपके अंदर अच्छे विचार आएंगे और आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आप छोटी-मोटी बीमारियों के कारण परेशान हो सकते हैं। लग्न स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि आलस्य की भावना उत्पन्न कर सकती है। उस समय आपको परहेज की ज्यादा जरूरत होगी। खान-पान के साथ साथ आपको अपनी दिनचर्या पर विशेष ध्यान देना चाहिए। सुबह सुबह व्यायाम के साथ योगाभ्यास भी करना चाहिए। समय का सदुपयोग कर अपनी जीवनशैली को बेहतर बनाने की कोशिश करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा, षष्ठ स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आप प्रतियोगिता परीक्षा में सबसे आगे रहेंगे। कुछ अनुभवी व्यक्तियों से मिलकर आप अपनी कार्यशैली में सुधार लाएंगे, सरकारी अफसरों और वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा, जिससे आपको कार्यों में लाभ प्राप्त हो सकता है।

02 जून के बाद तकनीकि शिक्षा या व्यवसाय के लिए समय अच्छा हो रहा है। शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारणबेरोजगार लोगों को नौकरी मिलने की संभावना बन रही है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में कोइ विशेष यात्रा का योग नहीं बन रहा है, परन्तु 02 जून के बाद तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपकी छोटी-मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी। धार्मिक यात्रा के लिए भी समय काफी अच्छा है।

31 अक्टूबर के बाद आप परिवार के साथ अपनी जन्म भूमि की यात्रा करेंग या पयर्टन स्थल व दार्शनिक स्थलों की यात्रा कर आनन्द प्राप्त करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। ईश्वर के प्रति आपके मन में अटूट विश्वास बना रहेगा। 2 जून के बाद नवम स्थान पर गुरुके दृष्टि प्रभाव से आप कोई विशेष पूजा-पाठ यज्ञ,अनुष्ठान संपन्न करेंगे। धार्मिक कार्य, गरीबों को दान एवं तीर्थ यात्रा कर अत्यधिक पुण्यार्जन भी करेंगे, जिससे आपको मानसिक शान्ति एवं आत्मिक सुख की अनुभूति होगी। 31 अक्टूबर के बाद अपने परिवार में सुख शान्ति या समृद्धि प्राप्ति के लिए हवन व कोई धार्मिक कार्य भी संपन्न करेंगें।

- स्फटिक श्रीयन्त्र घर में स्थापित करें एवं उसके सामने नित्य दीपक जलाएं।
- बुधवार के दिन गणेश जी को दूर्वा चढ़ाएं एवं ऊँ गं गणपतये नमः इस मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीस का पाठ करें।

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि एकादश भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं एकादश भाव में आजाएंगे। मकर राशि के राहु इस वर्ष नवम भाव में रहेंगे। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध शुभ फलदायी रहेगा। शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आपके कार्य व्यवसाय में अनुकूलता बनी रहेगा। बड़े अधिकारी या अनुभवी लोगों का सहयोग प्राप्त होगा। व्यवसाय में कुछ विशेष वनया करने के अवसर भी मिलते रहेंगे परन्तु इस समय के अंतराल में व्यापार में विस्तार न करें। जितना आपसे हो सके उतना ही कार्य करें नहीं तो वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपसे नुकसान हो सकता है। गुरु ग्रह के गोचर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नती के साथ-साथ स्थान परिवर्तन भी हो सकता है।

03 जून के बाद शनि ग्रह का गोचर द्वादश भाव में हो रहा है। उस समय आपका कार्य व्यवसाय कुछ प्रभावित हो सकता है। आपके प्रतिद्वंदी आपका विरोध कर सकते हैं या शत्रुओं द्वारा आपके कार्य में रुकावट डालने की चेष्टा की जा सकती है। अतः बिना किसी पर विश्वास किये आत्मविश्वास के साथ कार्य करते रहें, क्योकि 03 अक्टूबर के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है। उस समय आपके सारे विरोधी शान्त होंगे और आपको कार्य-व्यवसाय मेंसफलता भी मिलेगी।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण सेयह वर्ष अच्छारहेगा।एकादश स्थान केशनि धनागम में निरंतरता बनाए रखेंगे। व्यापारिक अनुकूलता के कारण आपकी आर्थिक स्थिति में वृद्धि हो सकती है। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। धनादि संचित करने में आपको भाईयों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। निवेश के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध शुभ रहेगा। मांगलिक कार्यों में या समाजिक कार्यों में भी आपका पैसा खर्च हो सकता है।

03 जून से 03 अक्टूबर के मध्य समय किंचित प्रभावित हो रहा है। अतः इस समय के अंतराल में कोई बड़ा निवेश न करें या किसी को उधार पैसे न दें। कोई आर्थिक निर्णय लेने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें नही तो आपका पैसा फंस सकता है। 03 अक्टूबर के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। उस समय भूमि, भवन, वाहन इत्यादि का सुख प्राप्त होगा। वर्षान्त में गुरु ग्रह का गोचर पंचम स्थान में होगा, जिसके प्रभाव

से सट्टा लॉटरी या शेयर बजार से भी आप को धन लाभ हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

सामाजिक दृष्टिकोण से वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। तृतीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके पराक्रम तथा कार्य क्षमताओं का विकास होगा। सामाजिक गतिबिधियों में आप बढ़-चढ़ कर भाग लेंगे। पारिवारिक रूप से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा।

26 जून से चतुर्थ स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपका घरेलू वातावरण अनुकूल रहेगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव बढ़ेगा। माता पिता सहित पूरे परिवार का सहयोग प्राप्त होगा। ससुराल पक्ष से संबंध मधुर होंगे। 26 नवम्बर के बाद संतान पक्ष के लिए समय काफी अनुकूल हो रहा है।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत अच्छा नहीं रहेगा। पंचम स्थान पर शनि एवं राहु ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। उनकी शिक्षा-दीक्षा में भी व्यवधान आ सकता है। सन्तान का लक्ष्य प्राप्ति के लिए लगातार परिश्रम भी मनचाहा परिणाम नहीं देगा परन्तु आपके दूसरे बच्चे के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा है। यदि वह विवाह के योग्य हैं तो विवाह निश्चित है।

जून के बाद समय काफी अच्छा हो रहा है। उस समय आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। 26 नवम्बर के बाद गुरु ग्रह का गोचर पंचम स्थान में हो रहा है। संतान इच्छित दम्पतियों के लिए गर्भाधान का शुभसमय है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में शारीरिक आरोग्यता की प्राप्ति व कार्य क्षमताओं में वृद्धि के प्रबल संकेत हैं। मानसिक शांति, प्रसन्नता एवं सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी। आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा परन्तु शनि ग्रह के गोचर के बाद आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है।

03 जून के बाद द्वादश स्थान में शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आप बीमार हो सकते है। सुबह जल्दी उठ कर घूमना या व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। 26 नवम्बर के बाद लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी, जिससे आपकी स्वास्थ्य संबंधित परेशानी दूर हो जाएंगी और आप पूर्ण रूप से स्वस्थ्य रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा रहेगा। आप प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करेंगे। इन्जीनीयरिंग या हार्डवेयर से संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों के लिए यह समय श्रेष्ठ है।

जून के बाद विद्यार्थियों का शिक्षा के प्रति रूझान बढ़ेगा। द्वादश स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त कर अपने करियर में उन्नति करेंगे। 26 नवम्बर के बाद पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय बहुत अच्छा है।

यात्रा-तबादला

वर्ष के पूर्वार्द्ध में तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से छोटी यात्राओं के साथ-साथ लम्बी यात्राएं भी होंगी। नवमस्थ राहु के प्रभाव से आपकी अधिकांश यात्रा अचानक होंगी। पूर्व से निधारित यात्रा प्रायः निरस्त होंगी।

26जून के बाद अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपनी जन्मभूमि की यात्रा हो सकती है। द्वादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा होने के प्रबल योग बन रहे हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अनुकूल है। वर्ष के पूर्वार्द्ध में नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप पूजा पाठ में विशेष रूचि लेंगे। नियमित रूप से अपनी दैनिक पूजा करते रहेंगे। जून के बाद द्वादश स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से आप दान पुण्य अधिक करेंगे। अष्टम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से तन्त्र, यन्त्र एवं मन्त्र के प्रति आप का विश्वास बढेगा और चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से घरेलू सुख, शान्ति एवं समृद्धि प्राप्ति के लिए हवन, ग्रह शान्ति या अन्य कोई पूजा संपन्न करेंगे।

- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें। (तांबे के लोटे में चावल डाल कर)
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें और शनि मन्त्र का पाठ करें।
- संध्या के समय पीपल वृक्ष के नीचे चौमुखी दीपक जलाएं।

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि एकादश भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरु में मकर राशि एवं नवम भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु पंचम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारंभ व्यावसायिक उन्नति के साथ होगा। कोई नया कार्य आरम्भ करेंगे और उसमें आपको सफलता भी मिलेगी। उच्च अधिकारियों का सहयोग प्राप्त होगा साथ ही किसी बड़ी कंपनी के साथ कार्य करने का अवसर प्राप्त होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति भी हो सकती है। 28 फरवरी से 24 जुलाई तक समय प्रतिकूल हो रहा है। गुप्तशत्रु या विरोधियों द्वारा आपके कार्यों में व्यवधान डाला जा सकता है।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आप अपनी कार्य कुशलता एवं दक्षता के बल पर व्यावसायिक जीवन की समस्याओं का समाधान निकाल लेंगे। वर्ष के उत्तरार्द्ध में अपने कर्मचारियों पर निगाह रखें ।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष के प्रारम्भ में धनागम के स्रोतों में वृद्धि होगी। नये व्यापार से भी शीघ्र लाभ होने के योग हैं। साथ ही फंसे हुए धन या रुके हुए धन की प्राप्ति हो सकती है। धार्मिक यात्रा या मांगलिक कार्यों में धन व्यय करेंगे। फरवरी से जून तक समय कुछ प्रभावित रहेगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में कुछ खर्च से आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। ऋण इत्यादि भी बढ़ सकता है। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। शीघ्र पैसा बनाने वाले तरीकों पर अंकुश लगाएं। गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण सामान्य काम काज पर असर नहीं होगा। परन्तु आर्थिक कमी महसूस होती रहेगी। मांगलिक कार्य व पुत्रादि के विवाह अवसर पर भी धन का व्यय हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। यदि आप विवाह योग्य हैं तो विवाह होने की सम्भावना है। प्रेम संबंधों में मधुरता बढ़ेगी। भाईयों का सहयोग प्राप्त होगा। 28 फरवरी के बाद मातुल पक्ष के साथ वैचारिक मतभेद हो सकता है। माता के लिए समय शुभ रहेगा परंतु पिता के लिए यह समय अच्छा नहीं रहेगा। पिता के स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

24 जुलाई के बाद समय अच्छा हो रहा है। नवविवाहिताओं को संतान की प्राप्ति हो

सकती है। पारिवारिक वातावरण अनुकूल बना रहेगा। यह समय बड़े भाई तथा मित्रों से लाभ का योग बना रहा है। घर के वातावरण में प्रेम, आपसी समन्वय व प्रसन्नता का संचार होगा। सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि के संकेत है।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए उत्तम रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। वे अपनी बुद्धि एवं विवेक के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। संतान की इच्छा रखने वाली महिलाओं के लिए गर्भ धारण का अच्छा समय है। परन्तु 28 फरवरी से 24 जुलाई तक समय प्रभावित रहेगा। ये समय आपके संतान की तरक्की में बाधक हो सकता है। दूसरी संतान के लिए समय सामान्य रहेगा।

जुलाई के बाद आपके बच्चों के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी प्रगति होने के शुभ योग बनेंगे। उनके पराक्रम में भी वृद्धि होगी। आपको अपने बच्चों पर अभिमान होगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अतिउत्तम रहेगा। लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी। मानसिक शान्ति एवं शारीरिक आरोग्यता बनी रहेगी। आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे। 23 फरवरी के बाद शनि का गोचर प्रतिकूल होने के कारण मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान हो सकते हैं।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में शनि एवं राहु का गोचर एक साथ प्रतिकूल होने के कारण स्वास्थ्य में उतार-चढाव की स्थिति बनी रहेगी। पंचमस्थ गुरु शारीरिक आरोग्यता अनुकूल रखने का पूर्ण प्रयास करेंगे फिर भी चोट या दुघर्टना की स्थिति बन सकती है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ श्रेष्ठ रहेगा। परन्तु 23 फरवरी के बाद समय किंचित प्रभावित हो रहा है।

वर्ष का उत्तरार्द्ध बहुत अच्छा नहीं रहेगा। शनि एवं राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण करियर व प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। व्यावसायिक रूप से भी समय अच्छा नही रहेगा।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में ही आपकी यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं। छोटी-मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी साथ ही नवमस्थ राहु पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से अचानक आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। 23 फरवरी के बाद विदेश यात्रा का भी योग बन रहा है। फरवरी के बाद चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से मनोवांछित स्थान पर स्थानांतरण होने के योग बन रहे हैं। आप अपनी जन्मभूमि की यात्रा करेंगे अथवा माता के निवास स्थल का भ्रमण करेंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में यात्रा के दौरान आपको छोटी-मोटी परेशानियों का भी सामना करना पड़ सकता है क्योंकि राहु एवं शनि ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में आप धार्मिक कार्य अधिक करेंगे। पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से पूजा-पाठ यज्ञ अनुष्ठान व मन्त्र जाप के प्रति रूचि बढ़ेगी। फरवरी के बाद पारिवारिक सुख शान्ति के लिए भी आप अपने घर में हवन व कोई धार्मिक कार्य संपन्न करेंगे। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप गुरु मन्त्र लेकर साधना भी कर सकते है। आप अपने से बड़े लोगों का सम्मान करेंगे।

- शनि मन्त्र का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का या काले कम्बल मजदूरों या गरीबों को दान करें।
- बुधवार या शनिवार के दिन चिड़ियों को दाना डालें।

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि द्वादश भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं द्वादश भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु अष्टम भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु छठे भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं छठे भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ में कार्य व्यवसाय की स्थिति अच्छी नहीं रहेगी। व्यापार में सफलता प्राप्ति के लिए अत्यधिक परिश्रम करना पड़ेगा। शनि एवं गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण व्यवसाय में हानि भी हो सकती है। अतः इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें। द्वादशस्थ शनि के कारण आलस्य की भावना बनी रहेगी। गुप्त शत्रु एवं प्रत्यक्ष शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। अष्टम स्थान का राहु अचानक आपके कार्यों में व्यवधान उत्पन्न कर सकता है। 29 मार्च के बाद गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण व्यापार में कुछ सुधार होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों के लिए यह समय सामान्य रहेगा।

05 अक्टूबर के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। षष्ठस्थ गुरु एवं लग्नस्थ शनि के प्रभाव से व्यवसाय में उतार-चढ़ाव का योग बन रहा हैं। अतः इस समय के अंतराल में आपको अपने आत्मविश्वास को बनाए रखना चाहिए और बिना किसी पर विश्वास किये अपना कार्य करते रहना चाहिए। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो इच्छित लाभ नहीं मिलेगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ प्रतिकूल रहेगा। शनि एवं गुरु का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण आय के स्रोत प्रभावित होंगे जिससे आपकी आर्थिक स्थिति में बहुत ज्यादा सुधार नहीं होगा। अष्टमस्थ राहु के कारण अचानक आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। 29 मार्च के बाद एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धन लाभ होगा। गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है।

जोखिम भरे कार्यों में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। आप किसी को उधार पैसा न दें वापसी की उम्मीद कम है और अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं। शारीरिक बीमारी पर भी पैसा खर्च होगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ मिला-जुला रहेगा। द्वितीय स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से पारिवारिक अनुकूलता बनी रहेगी। परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी जिससे परिवार में खुशी का वातावरण बनेगा परन्तु आपके

मातुल एवं ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपका संबंध अच्छा नहीं रहेगा। संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। सामाजिक उन्नति के लिए भी समय बहुत अच्छा नहीं है।

29 मार्च के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है। उस समय आपको बड़े भाईयों का सहयोग मिलेगा। 05 अक्टूबर के बाद पत्नी के साथ वैचारिक मतभेद हो सकते हैं जिसका नकारात्मक प्रभाव आपके परिवार पर पड़ेगा। अतः उस समय के अंतराल में आपको अपने विवेक से काम लेना होगा।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल नहीं रहेगा। पंचम स्थान का मंगल गर्भवती स्त्रियों का गर्भपात करा सकता है। बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है जिसके कारण आप मानसिक रूप से चिंतित रह सकते हैं। 29 मार्च के बाद पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपके बच्चों की शिक्षा के प्रति रूचि बढ़ेगी। उनका अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो जाएगा। आपकी संतान विवाह योग्य है तो उनका विवाह भी हो सकता है। दूसरे बच्चे के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा।

25 अगस्त के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। आपके बच्चों की उन्नति में व्यवधान आ सकता है अतः मन को एकाग्र कर शिक्षा के प्रति ध्यान केन्द्रित करें। 05 अक्टूबर के बाद आपके दूसरे बच्चे के लिए समय ज्यादा खराब हो रहा है। उसके खान-पान पर विशेष ध्यान दें।

स्वास्थ्य

वर्ष के प्रारम्भ से ही स्वास्थ्य संबंधित परेशानियां होती रहेंगी। षष्ठस्थ गुरु के प्रभाव से पेट संबंधित परेशानी हो सकती है। घी या तली हुई वस्तु का सेवन कम करें। द्वादशस्थ शनि के कारण आप आलस्य व बीमारी जैसा अनुभव करेंगे। 29 मार्च के बाद लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके स्वास्थ्य में कुछ सुधार होगा।

25 अगस्त के बाद गुरु ग्रह का गोचर फिर से प्रतिकूल होने के कारण मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान रह सकते हैं। अष्टमस्थ राहु अचानक आपका स्वास्थ्य प्रभावित कर सकते हैं। अतः अपना स्वास्थ्य अनुकूल रखने के लिए सुबह-सुबह व्यायाम या योगाभ्यास करना लाभप्रद रहेगा। शारीरिक व्याधि दूर करने के लिए अन्न दान भी कर सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

छठे स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता मिल सकती है परन्तु उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा नहीं है। द्वादशस्थ शनि के कारण पढ़ाई में आलस्य व शिक्षा में व्यवधान आता रहेगा परन्तु 29 मार्च के बाद पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से समय काफी अनुकूल होगा। व्यावसायिक या तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए यह समय अच्छा रहेगा।

25 अगस्त के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार प्रयास करना पड़ेगा। बेरोजगार जातकों को कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

द्वादशस्थ शनि के प्रभाव से वर्षारम्भ में ही आपकी विदेश यात्रा होगी। 29 मार्च से 25 अगस्त तक आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। अगस्त के बाद से छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी।

यात्रा के दौरान या वाहन चलाते सावधानी बहुत जरूरी है, क्योंकि अष्टम स्थान का राहु दुर्घटना का योग बना रहा है। यात्रा के अंतराल में आपका सामान भी चोरी हो सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

मानसिक द्वंदता के कारण वर्षारम्भ में पूजा-पाठ कम ही कर पाएंगे परन्तु दान पुण्य खूब करेंगे। भण्डारा करना या किसी गरीब की सहायता करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। 29 मार्च के बाद मन्त्र जाप करेंगे। 05 अक्टूबर के बाद लग्न स्थान का शनि आपको बहुत ज्यादा आलसी बना सकता है जिससे आपका दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित हो सकता है।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- शनिवार के दिन काला कम्बल गरीबों को दान करें। शनि मन्त्र का जाप करें।
- दुर्गा चालीसा का प्रत्येक दिन पाठ करें। दुर्गा बीसा कवच गले में धारण करें।

वर्षारम्भ में मेष राशि के शनि द्वादश भाव में रहेंगे और 17 अप्रैल को वृष राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे धनु राशि के राहु अष्टम भाव में रहेंगे और 04 फरवरी को वृश्चिक राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे 25 जनवरी को गुरु वृश्चिक राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 01 मई को तुला राशि एवं छठे भाव में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 23 सितम्बर को वृश्चिक राशि एवं सप्तम भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे 27 सितम्बर से 18 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ कार्य व्यवसाय के लिए बहुत अच्छा नही रहेगा। व्यावसायिक जीवन में परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में व्यवधान डाला जा सकता है। आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा शत्रुओं पर विजय प्राप्त करेंगे परन्तु 04 फरवरी के बाद राहु ग्रह का गोचर सप्तम स्थान में चण्डाल योग बना रहा है। इस समय आपको कार्य व्यवसाय में हानि हो सकती है। साझेदारी में कोई व्यापार कर रहे हैं तो असंतुष्ट रहेंगे और साझेदार के साथ संधंब भी खराब हो सकते हैं।

अप्रैल के बाद मुख्यतः सारे ग्रह प्रतिकूल हो रहे हैं फलस्वरूप आय के सारे मार्ग बन्द हो सकते हैं। अधीनस्थ कर्मचारी आपका साथ नहीं देंगे। अधिकारी आपको अनायास ही तंग कर सकते हैं।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक उन्नति के लिए बहुत अच्छा नहीं है। व्यावसायिक स्थिति अनुकूल नहीं होने के कारण आय के सारे मार्ग प्रभावित होंगे। 04 फरवरी के बाद शारीरिक व्याधि दूर करने में भी आपका व्यय होगा। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। किसी को उधार पैसा न दें और खर्च पर भी अंकुश लगाए।

01 मई से समय और ज्यादा खराब हो रहा हैं। इस समय के अंतराल में आपके सारे ग्रह प्रतिकूल है अतः धोखा, हानि व आर्थिक नुकसान का सामना करना पड़ सकता है। पत्नी के स्वास्थ्य पर भी आपका पैसा खर्च हो सकता है। लोन इत्यादि भी लेना पड़ सकता है। विषम परिस्थितियों में आपको अपना आत्मविश्वास बनाए रखना चाहिए और मां लक्ष्मी की उपासना करनी चाहिए।

घर-परिवार, समाज

दूसरे भाव में शनि एवं राहु के गोचरीय प्रभाव के चलते पारिवारिक मामलों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत अच्छा नहीं रहेगा। आपको पारिवारिक मामलों में बड़ी ही समझदारी से काम लेना होगा। परिवार के किसी सदस्य को लेकर मन में चिंता बनी रह सकती है। छोटी-छोटी बातों पर झगड़े या विवाद मे नहीं पड़ना चाहिए और वाणी पर नियंत्रण रखना चाहिए,

नहीं तो आपकी प्रतिक्रिया पारिवारिक वातावरण के लिए अच्छी नहीं रहेगी। मातुल एवं ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपका संबंध अच्छा नहीं रहेगा।

04 फरवरी के बाद धर्मपत्नी के साथ आपके वैचारिक मतभेद उत्पन्न होंगे। यदि आपकी किसी के साथ मित्रता या साझेदारी है तो उसमें दरार आ सकती है। या उनके साथ आपके संबंध खराब हो सकते हैं। सामाजिक पद-प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। मई के बाद आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक स्थिति को लेकर मानसिक परेशानी बनी रहेगी।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ आपकी संतान के लिए सामान्य रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी परन्तु उसके लिए उनको अथक परिश्रम करना पड़ेगा। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। 04 फरवरी के बाद सप्तम स्थान में गुरु एवं राहु की युति चण्डाल योग बना रही है, जो कि आपके दूसरे बच्चे के लिए अच्छा नहीं है।

01 मई से गुरु का गोचर प्रतिकूल होने से संतान की उन्नति में व्यवधान उत्पन्न होंगे। शारीरिक व्याधि के कारण शिक्षा में भी रूकावट आ सकती है। अतः उस समय मन को एकाग्र कर पूरा ध्यान अपनी पढ़ाई पर लगाना चाहिए। स्वास्थ्य संबंधित किसी प्रकार की लापरवाही भी न करें।

स्वास्थ्य

साल की शुरुआत स्वास्थ्य की दृष्टि से सामान्य ही रहेगी। वर्षारम्भ से ही कुछ न कुछ शारीरिक परेशानी बनी रहेगी। मुख्यतः सारे ग्रह प्रतिकूल होने के कारण मौसमजनित बीमारियों से भी आप परेशान हो सकते हैं। आपको ऐसा लग सकता है कि आपकी शारीरिक ऊर्जा धीरे-धीरे करके कम हो रही है। लग्न स्थान का शनि आपको आलसी बना सकता है।

मई से उदर सम्बन्धित परेशानी हो सकती हैं। खान-पान पर संयम रखकर इसे कुछ हद तक नियंत्रित किया जा सकता है। सूर्योदय से पहले उठकर टहलना व व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। शारीरिक आरोग्यता को अनुकूल बनाने के लिए आप तुला दान भी कर सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्ष का प्रारम्भ विद्यार्थियों के लिए अच्छा रहेगा। व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अपने लक्ष्य में सफल होंगे। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने मन को लक्ष्य के प्रति केन्द्रित करना चाहिए नहीं तो मानसिक भटकाव के कारण आप अपने लक्ष्य से भटक सकते हैं।

शनि ग्रह के गोचर के बाद आलस्य आपके करियर को खराब कर सकता है।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में ही द्वादशस्थ शनि के कारण आपकी विदेश यात्रा होगी। शनि ग्रह के गोचर के बाद आपकी छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। चतुर्थ स्थान पर राहु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा।

यात्रा के अंतराल या वाहनादि चलाते समय सावधान रहें दुर्घटना हो सकती है। राहु ग्रह के गोचर के बाद समय काफी अनुकूल रहेगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में पूजा पाठ में आपका मन कम ही लगेगा। अधिक आलस्य के कारण भी आपका दैनिक पूजा-पाठ प्रभावित होगा। मई से आप दान-पुण्य अधिक करेंगे

- बेसन के लड्डू वीरवार के दिन विष्णु जी के मन्दिर में वितरित करें एवं गुरु ग्रह के मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन दुर्गा कवच का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें और प्रत्येक दिन शनि मन्त्र का पाठ करें।

इस वर्ष वृष राशि के शनि लग्न स्थान में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में वृश्चिक राशि के राहु सप्तम भाव में रहेंगे और 9 अगस्त को तुला राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में वृश्चिक राशि के गुरु सप्तम भाव में रहेंगे और 17 फरवरी को धनु राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 14 जून को वृश्चिक राशि एवं सप्तम भाव में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 15 अक्टूबर को धनु राशि एवं अष्टम भाव में आ जाएंगे। 4 जनवरी से 15 अगस्त तक मंगल वक्री होकर तुला राशि एवं छठे भाव में रहेंगे। 2 अगस्त से 15 अगस्त तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का पूर्वार्द्ध कार्य व्यवसाय के लिए बहुत अच्छा नहीं रहेगा। सप्तम स्थान में राहु एवं गुरु ग्रह की युति आपके व्यावसायिक जीवन में व्यवधान ला सकती है। गुप्त एवं प्रत्यक्ष शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रूकावटें डाली जा सकती हैं। यदि आप साझेदारी में कोई व्यापार कर रहे हैं तो आप अपने साझेदार से असंतुष्ट रहेंगे और उसके साथ आपका संधंब भी खराब हो सकता है। 9 अगस्त से राहु का गोचर अनुकूल होने के कारण आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा अपने शत्रुओं पर विजयी प्राप्त कर लेंगे। आप अपने व्यापारिक जीवन में उन्नति करने का पूर्ण प्रयास करेंगे और उसके लिए अथक परिश्रम भी करेंगे। इस समय के अंतराल में आपको सफलता मिल सकती है।

15 अक्टूबर से आपका समय फिर से प्रभावित हो रहा है जिसके फलस्वरूप आपकी आय के सारे मार्ग प्रभावित हो सकते हैं। आपके अधीनस्थ कर्मचारी आपका साथ नहीं देंगे। यदि आप नौकरी करते हैं तो आपके अधिकारी लोग आपको तंग कर सकते हैं जिससे आप मानसिक रूप से अशान्त रहेंगे।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक उन्नति के लिए बहुत अच्छा नहीं है। व्यावसायिक स्थिति प्रतिकूल होने के कारण आय के मार्ग प्रभावित हो सकते हैं। गुरु एवं राहु की युति निवेश के लिए अच्छी नहीं होती है। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। किसी को उधार पैसा न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद कम है और अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं।

18 फरवरी से आपका समय और ज्यादा खराब हो रहा है अतः धोखा, हानि या आर्थिक नुकसान का सामना करना पड़ सकता है। पत्नी के स्वास्थ्य पर भी आपका पैसा खर्च हो सकता है। ऋण इत्यादि भी लेना पड़ सकता है। विषम परिस्थिति में आपको अपना आत्मबल बनाए रखना होगा। 09 अगस्त से राहु का गोचर अच्छा होने के कारण धनागम के स्रोतों में वृद्धि होगी। अचानक आपको मातुल पक्ष के लोगों से लाभ प्राप्त होगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत अच्छा नहीं रहेगा। घरेलू मामलों में आपको बड़ी ही समझदारी से काम लेना होगा। परिवार के किसी सदस्य को लेकर मन में चिंता रह सकती है। छोटी-छोटी बातों पर झगड़ा या विवाद में नहीं पड़ना चाहिए। यदि आपकी किसी के साथ मित्रता है तो उसमें दरार आ सकती है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में समय काफी अच्छा हो रहा है। पत्नी के साथ आपके मधुर संबंध होंगे। माता पिता सहित मातुल पक्ष के लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा। षष्ठस्थ राहु के प्रभाव से आपके शत्रु भी आपके साथ मित्रवत व्यवहार करेंगे। सामाजिक पद व प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ आपके बच्चों के लिए सामान्य रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी परन्तु उसके लिए उनको अथक परिश्रम करना पड़ेगा सप्तम स्थान में गुरु एवं राहु की युति चण्डाल योग बना रही है। जो कि आपके दूसरे बच्चे के लिए अच्छा नहीं है।

18 फरवरी से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से आपकी संतान की उन्नति में बाधा आ सकती है। मानसिक कष्ट व शारीरिक व्याधि के कारण शिक्षा में भी रूकावटें आ सकती हैं अतः उस समय उनको अपने मन को एकाग्र कर पूरा ध्यान अपनी पढ़ाई पर लगाना चाहिए। स्वास्थ्य संबंधित किसी प्रकार की लापरवाही नहीं करनी चाहिए। 15 अक्टूबर से समय अच्छा हो रहा है।

स्वास्थ्य

साल की शुरुआत स्वास्थ्य के लिहाज से उत्तम नहीं रहेगी। लग्नस्थ शनि पर राहु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से मौसमजनित बीमारियों से भी आप परेशान हो सकते हैं। आपको ऐसा लग सकता है कि आपकी शारीरिक ऊर्जा धीरे-धीरे करके कम हो रही है। पेट संबंधित समस्याएं हो सकती हैं। खान-पान पर संयम रखकर इसे कुछ हद तक नियंत्रित किया जा सकता है। सूर्योदय से पहले उठ कर व्यायाम करना लाभप्रद रहेगा।

9 अगस्त के बाद राहु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपकी रोग प्रतिरोधक शक्ति का विकास होगा जिससे आपकी शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी। यदि आप किसी बीमारी से पीड़ित हैं तो इस समय के अंतराल में अच्छे हो जाएंगे। 15 अक्टूबर से समय और बढ़िया हो रहा है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने मन को एकाग्र कर लक्ष्य के प्रति केन्द्रित करना चाहिए। विदेशी भाषा सीखने वालों के लिए यह समय अच्छा है। व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अपने

लक्ष्य में सफल होंगे। लग्नस्थ शनि के कारण आप आलसी भी हो सकते हैं।

9 अगस्त से राहु का गोचर बहुत शुभ हो रहा है। षष्ठस्थ राहु के प्रभाव से अचानक बेरोजगारों को नौकरी मिल जाएगी। व्यवसायियों को उनका ब्राण्ड नेम मिल सकता है प्रतियोगिता परीक्षार्थी अपनी परीक्षा में सफल होंगे।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में कोई विशेष यात्रा का योग नहीं बन रहा है। आपकी छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। व्यावसायिक व्यक्तियों की व्यवसाय से संबंधित यात्राएं होंगी। 18 फरवरी के बाद चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा।

9 अगस्त के बाद आपके विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं। यात्रा के अंतराल या वाहनादि चलाते समय सावधान रहें नहीं तो दुर्घटना हो सकती है, क्योंकि लग्न स्थान का शनि चोट चपेट की सम्भावन बनाएं हुए है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के पूर्वार्द्ध में पूजा पाठ में आपका मन कम लगेगा। वर्ष के उत्तरार्द्ध में गुप्त विद्याओं या तान्त्रिक सिद्धियों के प्रति भी आपका आकर्षण बढ़ेगा।

- बेसन के लड्डू वीरवार के दिन विष्णु जी के मन्दिर में वितरित करें एवं गुरु ग्रह के मन्त्र का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें और प्रत्येक शनिवार शनि मन्त्र का पाठ करें।
- शनिवार के दिन एक नारियल अपने सिर से सात बार घुमाकर बहते हुए पानी में बहा दें।

वर्षारम्भ में शनि वृष राशि एवं लग्न स्थान में होंगे और 31 मई को मिथुन राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। तुला राशि के राहु छठे भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में धनु राशि केगुरु अष्टम भाव में रहेंगे और 5 मार्च को मकर राशि एवं नवम भाव में गोचर करेंगे और वक्री होकर 12 अगस्त को धनु राशि एवं अष्टम भाव में आजाएंगे और पुनः मार्गी होकर 23 अक्तूबर को मकर राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक जीवन के लिए साल का पूर्वार्द्ध अच्छा नहींरहेगा। आर्थिक तंगी के चलते व्यापार में विस्तार करने की योजनाएं वर्षारंभ में धीमी पड़ेंगी। अथकप्रयास एवं बौद्धिक परिश्रम की आवश्यकता है। घर से दूर अर्थात् विदेश में सफलता मिल सकती है। लग्नस्थ शनि के कारण कुछ गलत फहमियों से आप व्याकुल हो सकते हैं। गुप्त शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रूकावटें डाली जा सकती हैं। 5 मार्च के बाद वेतन वृद्धि व पदोन्नति के रूप में आपको पुरुस्कृत किया जा सकता है।

12 अगस्त के बाद कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें नहीं तो उससे आपको हानि हो सकती है। जमीन-जायदाद से जुड़े व्यक्तियों के लिए यह समय अनुकूल नहीं है। 23 अक्तूबर के बाद व्यवसाय व नौकरी के लिए लंबी यात्रा हो सकती है। ये यात्रा सफल सिद्ध होगी। इस दौरान महत्वपूर्ण दस्तावेजों पर बिना देखे दस्तखत न करें और जोखिम उठाने की प्रवृत्ति पर भी अंकुश लगाएं।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से यह साल आपके लिए मिला-जुला रहेगा। साल की शुरुआत में निवेश से सम्बंधित योजनाओं पर ध्यान न दें और अपने दस्तावेज भी संभाल कर रखें। हड़बड़ी से बचने के लिए बेहतर यही होगा कि आप अपनी सभी योजनाएं पहले से तय कर लें।आपको आर्थिक निर्णय लेते समय सतर्क रहना चाहिए और जल्दबाजी में कोई निर्णय नहीं लेना चाहिए।

5 मार्च के बाद कई लाभकारी अवसर मिलेंगे। इन अवसरों का भरपूर लाभ उठाएं। क्योंकि मई के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। इस समय अपने रिश्तेदार, संबंधी या दोस्तों को उधार पैसा न दें।जोखिम भरा निवेश करने से बचें। कृषक वर्गों एवं फुटकर विक्रेताओं के लिए वर्षान्त अच्छा नहीं रहेगा।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक वातावरण के लिए सामान्य रहेगा। अधिक भाग-दौड़ के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे। 5 मार्च के बाद परिवार में छोटे भाई-बहनों का मांगलिक कार्य सम्पन्न होने का योग बन रहा है। यदि परिवार में कोई मुकद्दमा चल रहा हो

तो अनुकूलता प्राप्त होगी। 31 मई के बाद परिवार में किसी व्यक्ति के साथ आपके वैचारिक मतभेद हो सकते हैं।

23 अक्तूबर से आपके पारिवारिक एवं सामाजिक पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आपको बच्चों का भी अच्छा सहयोग मिलेगा। आपकीमाता के स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी और आपको ससुराल पक्ष के लोगों का सहयोग नहीं मिलेगा।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ आपके बच्चों के लिए अच्छा नहीं रहेगा। अष्टम स्थान का गुरु संतान संबंधित चिंताएं दे सकता है। संतान के लिए यह समय अच्छा नहीं है। गर्भवती स्त्रियों को बहुत सावधानी से बरतनी चाहिए ।

5 मार्च के बाद का गोचर अनुकूल होने के कारण आपके बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार आएगा। संतान के साथ संबंध में मधुरता आएगी जिससे घरेलू वातावरण में भी सुधार होगा। यदि अपने बच्चों को प्रोत्साहित करते रहें तो वे अपने लक्ष्य को अवश्य प्राप्त कर लेंगे। अतः आप उनकीसकारात्मक सोच में वृद्धि करते रहें।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। लग्नस्थ शनि के कारण स्वास्थ्य संबंधित चिन्ताएं बनी रहेंगी। मानसिक चिंताएं भी रहेंगी।दुर्घटना या किसी प्रकार के शारीरिक कष्ट का सामना करना पड़ सकता है साथ ही अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से मोटापा एवं लीबरजनित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं।

5 मार्च से लग्न स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अनुकूल होना शुरू हो जाएगा। व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। यदि स्वास्थ्य पर ध्यान नहीं दिया तो 23 अक्तूबर के बाद आपका स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा रहेगा। 5 मार्च के बाद लग्न भाव पर गुरु की दृष्टि आपके मनोबल को बढ़ाएगी। अगर आप प्रतियोगी परीक्षाओं में भाग ले रहे हैं तो सफलता आपके पक्ष में होगा। षष्ठस्थ राहु के कारण अचानक ही आपको उन्नति व सफलता मिलेगी।

मई के बाद चिकित्सा, तकनीकी, वाणिज्य आदि क्षेत्रों के लिए अनुकूल समय रहेगा। कानून से जुड़े लोगों को विशेष लाभ प्राप्त होगा। अध्ययन कार्य में आपकी रुचि बनी रहेगी। अपने लक्ष्य के प्रति आपका उत्साह व साहस बना रहेगा। 23अक्तूबर से आप गुप्त विद्याओं के प्रति आकर्षित हो सकते हैं।

यात्रा-तबादला

यात्रा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में आपकीछोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी परन्तु 5 मार्च के बाद लम्बी यात्राएं भी होंगी। आध्यात्मिक सुख प्राप्ति के लिए आप तीर्थ स्थल की यात्रा भी करेंगे।

कुछ समय के लिए आप प्रवास भी कर सकते हैं। 23अक्तूबर के बाद देश-विदेश घूमने का योग बन रहा है। इस समय के अंतराल में अवांछित यात्रा भी करनी पड़ सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष का प्रारम्भ धार्मिक कार्यों के लिए अच्छा नहीं है। आपके धार्मिक कार्यों में व्यवधान उत्पन्न होंगे। 5 मार्च के बाद समय अच्छा हो रहा है। दैनिक पूजा व दिनचर्या में काफी सुधार होगा। 15 अक्तूबर से आप दान-पुण्य अधिक करेंगे।

- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- शनिवारके दिन गरीबों को काला कम्बल दान करें।
- अपनेबजन के बराबर अन्न आदि दान करें जिससे आपको शारीरिक अनुकूलता प्राप्त होगी।
- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें।

वार्षिक फलादेश - 2033

इस वर्ष शनि मिथुन राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे। 30 जनवरी तक राहु तुला राशि एवं छठे भाव में रहेंगे उसके बाद कन्या राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। 18 मार्च तक गुरु मकर राशि एवं नवम भाव में रहेंगे उसके बाद कुम्भ राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। 24 मार्च से 8 अक्टूबर तक मंगल वक्री होकर धनु राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। वर्षारम्भ में लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि नवीन विचारधारा, नयी योजनाओं को जन्म देगी। उसका उचित लाभ उठा कर आप अपने कार्य व्यवसाय में अच्छी उन्नति करेंगे। 18 मार्च के बाद गुरु ग्रह का गोचर आपके करियर में एक नया मुकाम लेकर आने वाला है। आपको कार्यस्थल में प्रशंसा और पहचान मिलेगी। यह आपकी आशावादी विचारधारा के कारण ही होगा। द्वितीयस्थ शनि के कारण कुछ परेशानियों का सामना भी करना पड़ सकता है। अष्टमस्थ मंगल के कारण गुप्त या प्रत्यक्ष शत्रु परेशानी उत्पन्न कर सकते हैं।

8 अक्टूबर के बाद आप के अन्दर एक गजब का आत्मविश्वास उत्पन्न होगा जिससे आप अपने क्लाइंट्स को प्रभावित करने में सक्षम होंगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण भी हो सकता है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। जमीन-जायदाद से संबंधित कई लाभकारी अवसर आएंगे परन्तु बहुत सोच-विचार कर ही उसमें निवेश करें। क्योंकि चतुर्थ स्थान में शनि ग्रह की दृष्टि जमीन-जायदाद के लिए अच्छी नहीं होती। द्वितीय स्थान में शनि ग्रह की स्थिति आपकी आर्थिक उन्नति के लिए शुभ नहीं है। परन्तु 18 मार्च से आपके आय के साधन बढ़ेंगे। ऋण के लिए आवेदन डाला हो तो इस समय के अंतराल में आपको लोन मिल जाएगा। आप अपनी भौतिक सुख-सुबिधा पर भी अधिक खर्च करेंगे।

द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। इस समय के अंतराल में आप इच्छित बचत करने में भी सफल होंगे। घर परिवार में मांगलिक कार्य होंगे उसमें भी आपके पैसे खर्च होंगे।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ प्रतिकूल रहेगा। द्वितीयस्थ शनि के प्रभाव से आपके घरेलू माहौल में कुछ विषम परिस्थिति उत्पन्न होंगी। परिवार में एक-दूसरे के साथ वैचारिक मतभेद होता रहेगा। परिवार में कुछ लोगों का बर्ताव अच्छा नहीं रहने से आप मानसिक रूप से अशान्त भी रह सकते हैं। 18 मार्च से द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से परिवारिक प्रतिकूलता दूर होगी एवं परिवार में सुख समृद्धि बढ़ेगी।

आपके माता पिता के लिए यह समय बहुत शुभ रहेगा। परिवार के सभी सदस्यों का अच्छा सहयोग मिलेगा। द्वितीयस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। गुरु ग्रह की शुभता के कारण स्त्री सुख, विवाह, धन आगमन एवं संतान का पूर्ण सुख प्राप्त होगा। 8 अक्टूबर से आपके दाम्पत्य जीवन में सामान्य उतार चढ़ाव की स्थिति उत्पन्न हो रही है।

संतान

यह वर्ष आपकी संतान के लिए अच्छा नहीं रहेगा। पंचम स्थान का राहु संतान के लिए अच्छा नहीं होता। वर्ष भर संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। संतान इच्छित व्यक्तियों को कुछ दिन और इंतजार करना पड़ेगा। गर्भवती स्त्रियां सावधानी बरतें अन्यथा गर्भपात हो सकता है।

8 अक्टूबर के बाद का समय आपके दूसरे बच्चे को प्रभावित कर सकता है। इस समयान्तराल में स्वास्थ्य पर ध्यान दें। यात्रादि से भी बचना चाहिए।

स्वास्थ्य

द्वितीस्थ शनि के प्रभाव से मामूली संक्रमण की चपेट में आप जरूर आ सकते हैं। शनि की स्थिति आपके परिवार, संचय, वाणी व आयु के प्रतिकूल सिद्ध हो सकती है। लग्न स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि आपके स्वास्थ्य के लिए अनुकूल नहीं रहेगी। रक्तचाप, वायु विकार व पित्त विकार आदि रोग होने की संभावना है।

आपको दुरुस्त रहने के लिए ध्यान और योग का सहारा लेना होगा। शुद्ध शाकाहारी व सात्विक भोजन आपके लिए लाभप्रद रहेगा। अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए समय समय पर चिकित्सक की सलाह लेते रहें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। परन्तु 18 मार्च के बाद सफलता के प्रबल संकेत दिख रहे हैं। नौकरी इच्छित व्यक्तियों को मनोनुकूल नौकरी की प्राप्ति हो सकती है। विद्यार्थियों को अपने करियर में उचित सफलता मिलेगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश मिल जाएगा।

दशमस्थ राहु के कारण चिकित्सा, तकनीकी, वाणिज्य आदि क्षेत्रों के लिए समय अनुकूल रहेगा। वकील, जज एवं कानून से जुड़े लोगों को विशेष लाभ नहीं होगा।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ से ही आपकी छोटी-मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी। 18 मार्च के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा।

परिवार के साथ भ्रमण पर जाएंगे। यह यात्रा मनोरंजनात्मक व आनन्ददायक रहेगा। इन यात्राओं में आपको कुछ परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

नवमस्थ गुरु के कारण धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। वर्षारम्भ में ही आप धार्मिक कार्य व तीर्थ यात्रा अधिक करेंगे। 18 मार्च से घरेलू सुख शान्ति के लिए कोई विशेष पूजा पाठ सम्पन्न करेंगे जिससे आपको मानसिक शान्ति व समाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त होगी। मन्दिर निर्माण, धार्मिक कार्य, भण्डारादि कार्यों में आप अच्छा दान करेंगे। गरीब बच्चों की पढ़ाई हेतु दान देकर या अनाथ आश्रम में भण्डारा कर अधिक से अधिक पुण्यार्जन करेंगे।

- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं एवं शनि मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन सुबह स्नान के बाद सूर्य को जल दें।
- एक नारियल अपने सिर से सात बार घुमाकर बहते हुए पानी में बहा दें।
- चींटी एवं चिड़ियों को दाना डालें।

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि मिथुन राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे और 13 जुलाई को कर्क राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। 12 अगस्त से पहले राहु कन्या राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे और उसके बाद सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कुम्भ राशि एवं दशम भाव में रहेंगे और 28 मार्च को मीन राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय के लिए वर्ष का प्रारम्भ श्रेष्ठ रहेगा। आप व्यापार में अच्छी उन्नति करेंगे। दशम भाव में गुरु ग्रह की उपस्थिति आपके हित में काम करेगी और साक्षात्कारों में भी सकारात्मक परिणाम देखने को मिलेंगे। जो व्यक्ति नौकरी बदलना चाहते हैं उनके लिए यह समय बहुत ही शुभ है। कठिन परिश्रम और बुद्धिमत्ता आपकी खास ताकत है और इस साल आपको अपनी ताकत का प्रयोग करने के कई अवसर मिलेंगे जिनके सफल परिणामों का आप आनंद भी लेंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपके कार्य व्यवसाय में चौमुखी विकास होगा। कोई नया व्यापार भी प्रारम्भ करेंगे। जिसमें आपको अत्यधिक लाभ प्राप्त होंगे। वरिष्ठ लोगों या अधिकारियों का भरपूर सहयोग मिलेगा। भूमि क्रय-विक्रय या खाद्य पदार्थ का व्यवसाय करने वाले व्यक्तियों को सावधान रहना चाहिए। क्योंकि चतुर्थ स्थान का राहु अच्छा नहीं होता। छोटे व्यापारियों को अपना ब्राण्ड नेम मिलेगा, जिससे वह अपने व्यापार को बड़े पैमाने पर ले जाएंगे।

धन संपत्ति

आपकी आर्थिक स्थिति के बारें में क्या कहना, इस साल तो आपकी बल्ले-बल्ले रहने वाली है। द्वितीयस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। मार्च माह के बाद तो स्थिति और भी सुदृढ़ होने वाली है। विभिन्न स्रोतों से धन का आगमन होगा। शेयर बाजार से भी लाभ होने की संभावना है। आप कुछ बेहतरीन व्यावसायिक संबंध भी कायम करेंगे और लाभकारी निवेशकों के साथ भी निवेश करेंगे। इस निवेश से आपको बहुत अच्छा लाभ होगा।

12 अगस्त के बाद चतुर्थस्थ राहु के प्रभाव से आर्थिक स्थिति थोड़ी कमजोर रह सकती है। खर्चों पर नियंत्रण और भावनाओं पर काबू रखने की जरूरत है। व्यर्थ की चिंता करने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि इस साल आपकी जिन्दगी में बहुत बदलाव आने वाले हैं।

घर-परिवार, समाज

इस साल आपकी पारिवरिक स्थिति बेहतर रहने वाली है, बस जरूरत है सभी लोगों के साथ स्नेह और आपसी सौहार्द के साथ पेश आने की। परिवार के लोगों के सुझावों पर

अमल करना आपके लिए फायदे का सौदा हो सकता है, लेकिन इसके विरुद्ध जाना घातक हो सकता है। है। द्वितीयस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी।

12 अगस्त के बाद चतुर्थ स्थान में राहु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपके परिवार में कुछ परेशानियां उत्पन्न हो सकती हैं। लेकिन कुछ ज्यादा हानि होने की संभावना नहीं है। माँ के साथ कुछ नाराजगी हो सकती है तथा उन्हें स्वास्थ्य संबंधी भी कुछ परेशानियाँ हो सकती हैं, अतः उनका समुचित ख्याल रखें और संयम बरतें। पिता जी के साथ आपके संबंध बेहतर रहेंगे। यदि आप अविवाहित हैं तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है। विवाहित व्यक्तियों को संतान प्राप्ति के प्रबल योग बन रहे हैं।

संतान

वर्ष का पूर्वार्द्ध संतान के लिए अच्छा नहीं है। संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। गर्भवती स्त्रियों को सावधान रहना चाहिए नहीं तो पंचम स्थान का राहु गर्भपात करा सकता है।

वर्ष का उतरार्द्ध आपकी संतान के लिए काफी उत्तम रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। उनकी शिक्षा-दीक्षा में सुधार होगा। आपके बच्चे कुछ विशेष कार्य करेंगे जिससे आप उन पर अभिमान करेंगे। उनकी इस कामयाबी से समाज में भी आपके पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आपकी दूसरी संतान के लिए भी समय काफी शुभ रहेगा।

स्वास्थ्य

सामान्यतः वर्ष का प्रारम्भ बहुत अच्छा नहीं रहने वाला है। लग्न स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनाए रखेगी। द्वितीय स्थान के शनि आपको मानसिक परेशानी दे सकते हैं। आप को ऐसा लगेगा कि धीरे धीरे आपकी ऊर्जा कम हो रही है और आप कमजोर होते जा रहे हैं। परन्तु मार्च के बाद समय काफी शुभ हो रहा है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप निरोगी काया के स्वामी होंगे। अर्थात इस समय आप रोग-मुक्त रहने वाले हैं। लेकिन आप मोटापे का शिकार हो सकते हैं, क्योंकि मसालेदार और तेल वाले आहार के प्रति आपकी रुची बढ़ेगी। इसे नियंत्रित करने की कोशिश करें। आलस्य का त्यागकर स्फूर्तिवान बनें। आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ आपके लिए अच्छा नहीं है। विद्यार्थियों को मेहनत करने के बावजूद भी पारिश्रमिक फल नहीं मिलेगा। पंचम स्थान का राहु आपकी शिक्षा-दीक्षा में भी रुकावट उत्पन्न कर सकता है। परन्तु मार्च के बाद गुरु ग्रह का गोचर शुभ होने के करण आप कोई व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। साथ ही आय के लिए नये स्रोतों का सृजन करेंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में प्रतियोगिता परीक्षार्थी अपने लक्ष्य में सफल होंगे। नौकरी इच्छित व्यक्तियों को मनोनुकूल नौकरी की प्राप्ति होगी। विदेश में करियर बनाने वाले व्यक्तियों

के लिए यह समय श्रेष्ठ है।

यात्रा-तबादला

मार्च के बाद आप अधिक से अधिक यात्राएं करेंगे। छोटी-छोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राओं का भी प्रबल योग बन रहा है। इन यात्राओं के अंतराल में आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है। यह मित्रता आपकी उन्नति के लिए अच्छी होगी।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं। सप्तम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपकी व्यवसायिक यात्रा भी होंगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत अच्छा नहीं रहेगा। नवम स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि धार्मिक कार्यों के लिए शुभ नहीं है। आपका दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होगा। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपके अंदर ईश्वर के प्रति अटूट विश्वास एवं श्रद्धा उत्पन्न होगी, जिसके चलते आप निःस्वार्थ भाव से भगवान की पूजा करेंगे। मन्त्र जाप या भगवान का ध्यान करना आपका नैसर्गिक गुण होगा।

- अपने आपको नियंत्रित रखें।
- हनुमान चालीसा का पाठ करना आपके लिए श्रेष्ठ रहेगा।
- आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।
- अपने घर में पारद के शिवलिंग स्थापित कर उनका पूजन करें।

वार्षिक फलादेश - 2035

इस वर्ष कर्क राशि का शनि तृतीय भाव में और सिंह राशि का राहु चतुर्थ भाव में रहेंगे। 5 अप्रैल तक गुरु मीन राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे और उसके बाद मेष राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। 21 जुलाई से 9 सितम्बर तक वक्री मंगल मीन राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। सप्तम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि व्यापारिक व्यक्तियों के लिए बहुत ही अनुकूल है। यदि आप कुछ नया करने जा रहे हैं तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा। कार्य व्यवसाय में आपके भाईयों का पूर्ण सहयोग मिलेगा। साझेदारी में व्यवसाय कर रहे व्यक्तियों की उन्नति होगी। 6 अप्रैल के बाद समय किंचित प्रभावित हो रहा है। अतः इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें।

यदि आप नौकरी करते हैं तो अचानक प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके घर से दूर भी हो सकता है। द्वादश स्थान में गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपके प्रति किसी प्रकार का षड्यन्त्र या कोई बड़ी समस्या उत्पन्न की जा सकती है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ अति उत्तम रहेगा। एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से धनागम में निरंतरता बनी रहेगी, जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। फंसा या रुका हुआ धन वापस मिल सकता है। धन संचित करने में आपके भाईयों का अच्छा सहयोग मिलेगा। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे उसमें भी आपका व्यय होगा।

अप्रैल के बाद आपके अनावश्यक खर्चे बढ़ सकते हैं। जिससे संचित धन में कमी आ सकती है। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। शीघ्र पैसा कमाने वाले उपायों पर अंकुश लगाएं। लेन-देन व निवेश के मामले में सावधान रहें। धन के मामले में किसी पर बहुत जल्दी विश्वास न करें।

घर-परिवार, समाज

यह साल पारिवारिक जीवन के लिए अच्छा नहीं रहेगा। व्यापारिक व्यस्तता के कारण अपने परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे। चतुर्थ स्थान का राहु परिवार में कुछ विषम परिस्थिति उत्पन्न कर सकता है। ऐसे मे आपको बड़े ही विवेक से काम लेना होगा। सभी लोगों के साथ स्नेह और आपसी सौहार्द के साथ पेश आए।

परिवार के लोगों के सुझावों पर अमल करना आपके लिए फायदे का सौदा हो

सकता है और उनके विरुद्ध जाना घातक हो सकता है। माँ के साथ कुछ नाराजगी हो सकती है तथा उन्हें स्वास्थ्य संबंधी भी कुछ परेशानियाँ हो सकती हैं। अतः उनका समुचित ख्याल रखें और व्यवहार में संयम बरतें। तृतीयस्थ शनि के प्रभाव से समाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ बच्चों के लिए बहुत ही शुभ है। आपके बच्चों की उन्नति होगी। उनकी शिक्षा-दीक्षा मे भी सुधार होगा। नव विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। आपकी दूसरे संतान को उन्नति के अवसर मिलेंगे।

6 अप्रैल के बाद समय प्रभावित हो रहा है। गर्भवती स्त्रियों को बहुत सावधान रहना चाहिए। आपके दूसरे बच्चे का स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। अतः उस समय उनके स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होगी।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। मानसिक रूप से आप सन्तुष्ट रहेंगे। प्रत्येक कार्य को आप सकारात्मक रूप से करेंगे। यदि पहले से कोई बीमारी नहीं है तो यह समय काफी अच्छा रहेगा। परन्तु 6 अप्रैल से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से छोटी-मोटी बीमारियों से आप प्रभावित हो सकते हैं।

गुरु के अग्नि तत्व राशि में होने के कारण पाचन या गैस संबंधित परेशानी हो सकती है। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना बहुत जरुरी होगा। सुबह-सुबह व्यायाम करना या योगा करना आपके लिए लाभप्रद सिद्ध होगा। चतुर्थ स्थान का राहु आपकी माता का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है, जिससे आप मानसिक रूप से परेशान हो सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि विद्यार्थियों के लिए अच्छी है। उच्च शिक्षा हेतु किसी अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो वर्ष का प्रारम्भ बहुत ही शुभ है।

6 अप्रैल से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण व्यावसायिक शिक्षा के प्रति अरुचि उत्पन्न होगी। चतुर्थ स्थान का राहु एकेडमिक एजूकेशन में कमी करेगा। जो जातक नौकरी की तलाश में हैं उनको कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

तृतीयस्थ शनि के कारण आपकी छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। धार्मिक यात्रा कर अत्यधिक पुण्यार्जन करेंगे। 5 अप्रैल के बाद द्वादश स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपकी विदेश यात्राएं होंगी।

अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्ति अपनी जन्मभूमि की यात्रा करेंगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए वर्ष का प्रारम्भ शुभ रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप पूजा-पाठ यज्ञ, अनुष्ठान व मन्त्र पाठ अधिक करेंगे एवं योग इत्यादि क्रियाओं में भी रुचि लेंगे। द्वादश स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आप दान पुण्य अधिक करेंगे। भूखे को खाना खिलाना, गरीबों को दान देना, मजबूरों की सहायता करना ही अपना धर्म समझेंगे।

- महामृत्युंजय यन्त्र अपने घर में स्थापित करें और नित्य उसका पूजन करें।
- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा, सुश्रूषा करें।
- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।

दशा विश्लेषण

महादशा :- चन्द्र
(19/11/2025 - 20/11/2035)

चन्द्र महादशा की अवधि दस वर्ष है। आपकी कुण्डली में यह 19/11/2025 को आरंभ और 20/11/2035 को समाप्त होगी।

चन्द्र सप्तम भाव में अवस्थित है। सप्तम भाव कानूरी समझोते, साझेदार अर्थात् जीवन साथी, व्यापार, मुकद्दमें, विदेश में प्रभाव तथा वहां प्राप्त ख्याति और जीवन में खतरे का सूचक है। अतः दस वर्षो की इस अवधि में आपका जीवन सुखी और स्वस्थ होगा। आपका दाम्पत्य जीवन अनुकूल और आनन्ददायक होगा।

स्वास्थ्य :

चंद्र की स्थिति से सप्तम भाव प्रबल हो रहा है। चन्द्र की प्रथम भाव या लग्न पर दृष्टि है, अतः आपका जीवन सुखमय तथा उत्तम होगा और किसी बड़े रोग या चोट की सम्भावना नहीं है।

अर्थ और सम्पत्ति :

सप्तम भाव में अवस्थित चन्द्र भाव को प्रबलित करता है जो साझेदार का भाव है। अतः दस वर्षो की इस अवधि में आपकी संपत्ति और आर्थिक स्थिति में वृद्धि होगी। आपका बैंक बैलेंस बढ़ेगा और आपको जीवन के सुखों की प्राप्ति होगी।

व्यवसाय :

साझेदारी के व्यवसाय से जुड़े हैं तो आपके व्यापार का विकास होगा और यदि नौकरीपेशा हैं तो जीवन में उन्नति के अवसर आएंगे और अपने व्यवसाय का आनन्द प्राप्त करेंगे। यदि व्यवसाय में हैं तो आपके मस्तिष्क में अनेक सुन्दर और अनुकूल व्यवसाय के विचार उभरेंगे जिन्हें चालू किये जाने पर आपको नाम मिलेगा। आप सामाजिक होंगे ओर व्यवसाय के क्रम में यात्राओं पर जा सकते हैं।

पारिवारिक जीवन :

आपका पारिवारिक जीवन अनुकूल और उत्तम होगा। आपके व्यक्तित्व और जीवन साथी के स्वास्थ्य में सुधार होगा जिससे आपको वैवाहिक जीवन का सुख मिलेगा।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

मस्तिष्क का कारक चन्द्र आपको धार्मिक ग्रन्थों व पुराणों के अध्ययन की ओर प्रेरित करेगा। आपको उन ग्रन्थों के अध्ययन से आनन्द की प्राप्ति होगी।

अंर्तदशा :- चन्द्र - चन्द्र
(19/11/2025 - 20/09/2026)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष रहेगी। आपके लिए यह 19/11/2025 को प्रारंभ होकर 20/11/2035 को समाप्त होगी। इस महादशा में चंद्र की अंतर्दशा की अवधि 10 मास रहेगी। आपके लिए यह 19/11/2025 को प्रारंभ होकर 20/09/2026 को समाप्त होगी।

चंद्रमा आपकी जन्मपत्री में सप्तम भाव में स्थित है और लग्न पर उसकी दृष्टि है। सप्तम भाव लौकिक संबंध, जीवनसाथी, व्यापार में साझेदार, मुकदमे, विदेश में प्रभाव और जीवन के खतरों का परिचायक है।

इस अवधि में आपका व्यक्तित्व आकर्षक होगा, लोकप्रियता बढ़ेगी और यात्रा में सफलता मिलेगी।

अगर आप अविवाहित हैं तो इस अवधि में विवाह हो सकता है। विवाहित जीवन सुखी रहेगा। विवाह होने पर लाभान्वित होंगे। साझेदारी के व्यापार में लाभ होगा; साझेदार से संबंध उत्तम रहेंगे। शुभत्व में वृद्धि के लिए चंद्र के वैदिक मंत्र के 11000 जाप करें।

अंर्तदशा :- चन्द्र - मंगल
(20/09/2026 - 21/04/2027)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह 19/11/2025 को प्रारंभ होकर 20/11/2035 को समाप्त होगी। इस महादशा में मंगल अंतर्दशा की अवधि 7 मास होगी। आपके लिए यह 20/09/2026 को प्रारंभ होकर 21/04/2027 को समाप्त होगी।

मंगल आपकी जन्मपत्रिका में सप्तम भाव में स्थित है। सप्तम भाव लौकिक संबंध, जीवनसाथी, व्यापार में साझेदार, मुकदमें, विदेश में प्रभाव और जीवन में खतरों का परिचायक है। सप्तम में स्थित होकर मंगल कुंडली के 10, 1, 2 भावों पर दृष्टि डाल रहा है।

मंगल की अंतर्दशा में आप विपरीत लिंग के व्यक्तियों पर आसक्त रहेंगे। वाणी में कटुता, चालाकी और दरिद्रता का योग है जिससे विवाहित जीवन कष्टप्रद हो सकता है। क्योंकि आप मंगली हैं, अगर जीवनसाथी मंगली नहीं हैं तो उनका देहांत हो सकता है।

अरिष्ट से बचाव के लिए प्रतिदिन भौमगायत्री मंत्र के 108 जाप करें और हनुमान मंदिर में जाएं।

अंर्तदशा :- चन्द्र - राहु
(21/04/2027 - 20/10/2028)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह महादशा 19/11/2025 को प्रारंभ हुई और 20/11/2035 को समाप्त होगी। चंद्र महादशा में राहु की अंतर्दशा की अवधि 18 मास रहेगी। आपके लिए यह 21/04/2027 को प्रारंभ होकर 20/10/2028 को समाप्त होगी।

राहु आपकी जन्मपत्रिका के एकादश भाव में स्थित है। एकादश भाव मित्रगण, समाज, महत्वाकांक्षा, इच्छाएं और उनकी पूर्ति, उद्यम में सफलता, धनलाभ, बड़े भाई, भाग्योदय और टखनों का परिचायक है। राहु छाया ग्रह है जो अस्तित्वहीन है मगर ग्रहों के समान प्रभावशाली है। इसका शुभत्व इसके निवास और युत ग्रह के अनुसार होता है।

इस अवधि में आप प्रसिद्ध, धनवान और ज्ञानी बनेंगे। अपने कार्यक्षेत्र में विशिष्ट बनेंगे। धन कमाने के लिए विदेश जा सकते हैं। कान के रोगों से बचाव करें।

अरिष्ट से बचाव के लिए राहु के वैदिक मंत्र के 18000 जाप करें।

अंर्तदशा :- चन्द्र - गुरु
(20/10/2028 - 19/02/2030)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह 19/11/2025 को प्रारंभ हुई। इस महादशा में बृहस्पति की अंतर्दशा की अवधि 16 मास है। यह आपके लिए 20/10/2028 को प्रारंभ होकर 19/02/2030 को समाप्त होगी।

बृहस्पति आपकी जन्मपत्रिका के पंचम भाव में स्थित है। पंचम भाव संतान, मनोरंजन, सैर-सपाटे, प्रेम संबंध, स्पर्धा, अच्छे-बुरे चरित्र, धार्मिकता, विवेक, धनाढ्यता और आत्मिक उत्थान का परिचायक है। बृहस्पति शुभग्रह है। पंचम भाव में स्थित होकर गुरु आपकी कुंडली के 9, 11, और लग्न भावों पर अपनी दृष्टि डाल रहा है।

इस अवधि में आप विद्वान और बुद्धिमान होंगे। अपने उच्चाधिकारी के सलाहकार बन सकते हैं। भद्र लोगों से मित्रता होगी। वाहन सुख रहेगा। समाज में सम्मान बढ़ेगा। ईश्वर में आस्था में वृद्धि होगी। संतान आज्ञाकारी होगी, मित्र सम्मान करेंगे।

शुभत्व में वृद्धि के लिए गुरु के वैदिक मंत्र के 19,000 जाप करें।

अंर्तदशा :- चन्द्र - शनि
(19/02/2030 - 20/09/2031)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। इस महादशा में शनि की अंतर्दशा 1 वर्ष 7 मास रहेगी। आपके लिए चंद्र महादशा 19/11/2025 को प्रारंभ हुई और 20/11/2035 को समाप्त होगी। शनि अंतर्दशा 19/02/2030 को प्रारंभ होकर 20/09/2031 को समाप्त होगी।

शनि आपकी जन्मपत्रिका के द्वादश भाव में स्थित है। द्वादश भाव हानि, बाधाएं, धन के दुरुपयोग, धोखा, दान, परिवार से अलगाव, दुख, छुपे दुश्मन, कांड, गुप्त दुख, शैयासुख और विदेश में जीवनयापन का संकेतक है। शनि बहुत शक्तिशाली ग्रह है जो जातक की कर्मठता की परीक्षा लेता है। भाग्योदय में देरी हो सकती है, मगर होता जरुर है।

इस अवधि में आपकी बुद्धि की कुशाग्रता कम हो सकती है। बहुत सावधानी की आवश्यकता है क्योंकि व्यापार आदि में धनहानि हो सकती है। शत्रु बढ़ेंगे, निराशा अधिक रहेगी। गुप्त रुप से पाप करने की प्रवृत्ति हो सकती है।

अरिष्ट से बचाव के लिए मछलियों को आटे की गोलियां खिलाएं। भोजन का पहला कौर गाय को दें। शिव की उपासना कम से कम प्रत्येक शनिवार को अवश्य करें।

योग

रुचक योग

स्वगेहतुङ्गाश्रयकेन्द्रसंस्थैरुच्चोपगैर्वाचनसूनुमुख्यैः।
क्रमेण योगा रुचकाख्यभद्रहंसाख्यमालव्यशशाभिधानाः।।
दीर्घाः स्वच्छकान्तिर्बहुरुधिरवलः साहसप्राप्तसिद्धि-
श्चारुभ्रूनीलकेशः समकरचरणो मन्त्रविच्चारुकीर्त्तिः।
रक्तःश्यामोऽतिशूरो रिपुबलमथनः कम्बुकण्ठो महौजाः ।
क्रूरो भक्तो नराणां द्विजगुरुविनतः क्षामजानूरुजङ्घः।।
खट्वाङ्गपाशवृषकार्मुकचक्रवाणा-
विज्ञाङ्कहस्तचरणः सरलाङ्गुलिः स्यात्।
मन्त्राभिचारकुशलस्तुलयेत्सहस्रं
मध्यं च तस्य गदितं मुखदैर्ध्यतुल्यम्।।
सह्यास्य विन्ध्यस्य तथोज्जयिन्याः प्रभुः शरत्सप्ततिरायुरस्य।
शास्त्राग्निचिह्नोरुचकाभिधाने देवालयान्ते निधनं प्रयाति।।

।। मानसागरी ।। अ.4/श्लोक 2, 3-5 ।।

यदि जन्मपत्रिका में स्वराशि अथवा उच्चहोकर मंगल केन्द्र में हो तो रुचक नामक योग बनता है।

इस योग वाला जातक दीर्घायु होता है। वह सुन्दर कान्ति, शक्तिशाली, साहसी, यश प्राप्त करने वाला, महावीर, मन्त्रवेत्ता, शत्रुओं को भय दिखाने वाला, क्रूरप्रकृति वाला, गुरु वर्गों के समक्ष विनम्र, हाथ पैरों में खट्वाङ्ग (शिव अस्त्र विशेष), पाश, वृष, धनुष, चक्र, वीणा, विद्या आदि रेखा होती है, ये चिह्न भाग्यशाली मनुष्यों के द्योतक हैं। अच्छी सम्मति देने वाला, युद्धादि अथवा मारणादि प्रयोगों में कुशल होता है। शस्त्राग्नि चिह्न से युक्त जातक देवस्थान के समीप मृत्यु प्राप्त करने वाला होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल

योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुंडली में रुचक नामक महापुरुष योग पूर्ण रूप से घटित हो रहा है। यह योग अत्यंत ही उत्तम माना जाता है। फलस्वरूप आप एक प्रभावशाली, पराक्रमी, विख्यात् एवं धनेश्वर्य से युक्त होंगे, तथा पराक्रम से उच्चराज योग की प्राप्ति करेंगे। आप सेना, इन्जीनियरिंग, मेडिकल, होटल एवं भवन निर्माण सम्बंधी क्षेत्र में उच्चस्तर प्राप्त कर सकते हैं।

चक्रवर्ती राजयोग

एकोऽपि विहगः कुर्यात्पंचमांशगतो नृपम्।
समस्तबलसम्पन्नश्चक्रवर्तिनमेव च ।।

।। सारावली ।। अ. 35 /श्लोक 64।।

यदि कोई भी ग्रह कुण्डली में अपने पंचमांश में स्थित हो तो जातक राजा होता है और यदि पूर्णबली हो तो चक्रवर्त्ती राजा होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण प्रतिष्ठत हो रहा है। फलस्वरूप आप एक प्रसिद्ध सम्मानित देश-विदेशों में प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाले राष्ट्राध्यक्ष/राज्याध्यक्ष अथवा सर्वोच्चाधिकारी होकर पूर्ण राज-सुख प्राप्त करेंगे।

अमलयोग

चन्द्राद्योम्न्यमलाह्वयः शुभखगैर्योगो विलग्नादपि।
क्ष्मेशः स्यादमले धनी सुतयशः संपद्युतो नीतिमान्।
।। फलदीपिका ।। अ. 6/श्लोक 19-20 ।।

यदि पत्रिका में लग्न या चंद्रमा से दशम स्थान में शुभ ग्रह हो तो अमला योग होता है।

योग कारक ग्रह : बुध योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण स्थापित हो रहा है। फलस्वरूप आप भूमि के स्वामी, धनी, नीतिवान् पुत्र एवं संपत्ति से युक्त यशस्वी व्यक्ति होंगे।

हर्ष योग

दुःस्थैर्भावगृहेश्वरैरशुभसंयुक्तेक्षितैर्वाक्रमाद्भावैः हर्षयोगः।
सुखभोगभाग्यदृढगात्रसंयुतो
निहताहितो भवति पापभीरुकः ।
प्रथितप्रधानजनवल्लभो धन-
द्युतिमित्रकीर्तिसुतवांश्च हर्षजः।।
।। फलदीपिका ।। अ. 6/ श्लोक 57, 63 ।।

यदि जन्मपत्रिका में छठा भाव या षष्ठेश अशुभ ग्रहों से युत या निरीक्षित हो तथा षष्ठेश दुःस्थान में निवास करता हो तो हर्षयोग होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,शुक्र योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण स्थापित हो रहा है। फलस्वरूप आप भाग्यवान्, दृढ़ शरीर वाले व सुखी, भोगी, शत्रुजीत, पापकर्म में लिप्त एवं भयातुर होंगे परंतु आप प्रसिद्ध, प्रधानप्रिय, धन, पुत्र, मित्र से सुखी एवं यशस्वी होंगे।

काम योग

भावैः सौम्युतेक्षितैस्तदधिपैः सुस्थानगैर्भास्वरैः
स्वोच्चस्वर्क्षगतैर्विलग्नभवनाद्योगाः क्रमाद्द्वादश।
परदारपराङ्मुखो भवेद्वरदारात्मजबन्धुसंश्रितः।
जनकादधिकः शुभैर्गुणैर्महनीयां श्रियमेति कामजः।।
।। फलदीपिका।। अ. 6 / श्लोक 44, 51।।

यदि जन्मपत्रिका में सप्तम भाव में शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तथा सप्तम स्थान में शुभ ग्रह बैठे हो एवं सप्तम भाव का स्वामी स्वराशि या उच्च राशि में स्थित होकर उत्तम स्थान में बैठा हो तो कामयोग बनता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,मंगल योग की संभावना : 96 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप दूसरे के स्त्री में आसक्त नहीं होंगे और आपको उत्तम जीवनसाथी, सन्तान और बन्धुओं का सुख प्राप्त होगा। आप शुभ गुणों से युक्त लक्ष्मीवान् होंगे। आप अपने पिता से अधिक उच्च पद प्राप्त करेंगे।

अचल लक्ष्मी योग

चन्द्रेण मङ्गलो युक्तो जन्मकाले यदा भवेत्।
तस्य जातस्य गेहं तु लक्ष्मीर्नैव विमुंचति।।
।। मानसागरी।। अ. 4/श्लोक 8।।

यदि जन्मकुंडली में मंगल के साथ चंद्रमा चाहे जिस भाव में हो जातक के पास सदैव लक्ष्मी निवास करती है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,मंगल योग की संभावना : 144 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके पास सदैव धन रहेगा। आपके घर में स्थिर लक्ष्मी निवास करेगी।

युद्ध कुशल एवं कलह प्रवीण योग

धैर्यान्वितो विक्रमराशिनाथसंयुक्तराश्यंशपतौ यदंशे ।
तदंशनाथे स्वगृहादिवर्गे युद्धे विदग्धः कलहप्रवीणः ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-33 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीयेश जिसकी राशि अंश में है, वह ग्रह अपने राश्यादि वर्ग में हो तो जातक धैर्यवान, युद्ध में चतुर और कलह करने में निपुण होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,मंगल योग की संभावना : 9 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप धैर्यधारण करने वाले, युद्ध में चतुर और कलह प्रिय प्राणी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

कर्णरोग योग

तृतीयनाथे पापान्विते पापनिरीक्षिते वा वदन्ति कर्णोद्भवरोगमत्र ।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-49 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीयेश पाप युक्त या दृष्ट हो तो कर्णरोग होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,राहु,चंद्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है फलस्वरूप आपको कर्णरोग होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

भवन नाश योग

गेहेशसंयुक्तनवांशनाथे नाशस्थिते स्यादपि गेहनाशः ।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-63 ।।

यदि जन्मपत्रिका में चतुर्थ भाव का स्वामी जिस ग्रह के नवांश में हो और वह ग्रह द्वादश भावस्थ हो तो भवन नष्ट हो जाता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके भवन का नाश हो ऐसा प्रतीत होता है।

पुत्रनाश योग

पापमध्ये तु यद्भावे तदीशेऽपि तथा स्थिते ।
कारके पापसंयुक्ते पुत्रनाशं वदेत्तदा ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 5/श्लो.-14 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचम भाव या पंचमेश पाप ग्रहों के बीच हो, तथा संतान कारक ग्रह भी पाप युक्त हो तो पुत्रनाश योग बनता है।

योग कारक ग्रह : केतु,गुरु योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको संतान सुख में बाधा हो ऐसा प्रतीत होता है।

एक पुत्र योग

।। भारतीय ज्योतिष ।। पृ.- 295 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचम स्थान में राहु या केतु स्थित हो तो एक पुत्र योग बनता है।

योग कारक ग्रह : केतु

योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको एक पुत्र का सुख प्राप्त होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

शिर मुख या गुल्म रोग योग

बलहीनेऽरिनाथे वा लग्नस्थे वा धरासुते।
मूर्धार्तिर्मुखरोगो वा गुल्मविद्रधिभाग्भवेत्।।

।। सर्वार्थचिन्तामणि-अ.-5/श्लो.-42 ।।

यदि जन्मकुंडली में षष्ठेश निर्बल हो या लग्नस्थ हो अथवा लग्न में मंगल हो तो शिर में पीड़ा या मुखरोग अथवा गुल्मरोग होता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको शिर रोग, मुखरोग या गुल्म रोग से पीड़ित होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

विना पीड़ा मृत्यु योग

सौम्यांशके सौम्यगृहेऽथ सौम्य सम्बन्धगे वा क्षयेशे।
अक्लेशजातं मरणं नराणाम्।।

।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-21।।

यदि जन्मकुंडली में द्वादशेश सौम्यग्रह की राशि या सौम्य ग्रह के नवांश या सौम्य ग्रह के साथ स्थित हो तो विना पीड़ा की मृत्यु होती है।

योग कारक ग्रह : मंगल

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका मरण बिना क्लेश का होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

पुनर्जन्म योग

महीजोमहीं सम्प्रापयेत्प्राणिनः
सम्बन्धाद्व्ययनायकस्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।

।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23 ।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में मंगल हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में मंगल स्थित हो अथवा द्वादशेश मंगल से संबंध स्थापित करता हो तो जातक मरणोपरांत शीघ्र जन्म लेकर पृथ्वी पर आता है।

योग कारक ग्रह : मंगल योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत पुनर्जन्म लेकर पृथ्वी पर आएँगे। ऐसा प्रतीत होता है।

वैकुण्ठवास योग

वैकुण्ठं शशिजो सम्प्रापयेत्प्राणिनः
सम्बन्धाद्व्ययनाकस्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23 ।।

यदि जन्मपत्रिका के द्वादश भाव में बुध स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में बुध हो अथवा द्वादश भाव के स्वामी बुध से कोई संबंध स्थापित करता हो तो मरणोपरांत वैकुंठवासी होता है।

योग कारक ग्रह : बुध योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत वैकुंठवासी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

स्वर्गनिवास योग

भृगुसुतः स्वर्गसम्प्रापयेत्प्राणिनः ।
सम्बन्धाद्व्ययनायकास्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23 ।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में शुक्र स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यिद उस नवांश में शुक्र हो या द्वादश स्थान के स्वामी शुक्र से संबंध स्थापित करता हो तो जातक स्वर्ग में निवास करता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत स्वर्ग में निवास करेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुभार्या योग

कुटुम्बकलत्रनाथाभ्यां समेतैर्ग्रहनायकैर्वा कलत्रसंख्यां प्रवदन्ति सन्तः ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-14 ।।

यदि जन्मकुण्डली में द्वितीयेश या सप्तमेश के साथ जितने ग्रह हों उतनी पत्नी होती हैं।

योग कारक ग्रह : सूर्य,बुध योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके दो या दो से अधिक जीवनसाथी हो सकते हैं। ऐसा प्रतीत होता है।

सुलक्षणी स्त्री योग

दारेशे शुभसंयुक्ते शुभखेचरवीक्षिते ।
शुभग्रहाणां मध्यस्थे सत्कलत्रादिभाग्भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-40 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सप्तमेश शुभ ग्रह से युक्त, शुभ ग्रह से दृष्ट तथा शुभ ग्रहों के मध्य में हो तो जातक को सुलक्षणी स्त्री प्राप्त होती है।

योग कारक ग्रह : मंगल,चंद्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका जीवनसाथी सुलक्षणी होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

द्विभार्या योग

।। भारतीय ज्योतिष ।। पृ. 302-7 ।।

यदि जन्मकुण्डली में लग्नेश द्वादश भाव में और द्वितीयेश पाप ग्रह के साथ कहीं भी हो तथा सप्तम भाव में पाप ग्रह स्थित हो तो द्विभार्या योग बनता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,सूर्य,बुध,शुक्र योग की संभावना : 192 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका दो विवाह संभाव्य है।

द्विभार्या योग

पापाः सप्तमे द्विभार्यः।
।। बृहद्योग रत्नाकर ।। पृ. 303 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सप्तम भाव में पाप ग्रह हो तो द्विभार्या योग बनता है।

योग कारक ग्रह : मंगल योग की संभावना : 4 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके जीवन में दो जीवनसाथी आएगें, अर्थात आपके दो विवाह हो, ऐसा प्रतीत होता है।

विकलांग शरीर योग

केन्द्रगौ पुष्पवन्तौ विकलाङ्गः।

।। बृहद्योगरत्नाकर पृ. -5.।।

यदि जन्मकुंडली में केंद्र (1-4-7-10) में सूर्य और चंद्रमा दोनों ग्रह स्थित हो तो जातक विकलांग होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,चंद्र योग की संभावना : 9 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप अंग से हीन होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

पारिजात योग

''सपारिजातद्युचरः सुखानि ।''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिसकी पत्रिका के "पारिजात" भाग में ग्रह हों तो उसे सभी प्रकार के उत्तम सुख की प्राप्ति होती है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,राहु योग की संभावना : 2 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "पारिजात" वर्ग में स्थित है। फलस्वरूप आपको सभी प्रकार का उत्तम सुख प्राप्त होगा।

उत्तमवर्ग योग

''नीरोगतामुत्तमवर्गयातः।''

।।बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका के "उत्तमवर्ग" भाग में ग्रह हों तो वह प्राणी सभी प्रकार से निरोग रहता है।

योग कारक ग्रह : मंगल योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "उत्तमवर्ग" में स्थित है। फलस्वरूप आप सभी प्रकार से

निरोग रहेंगे।

गोपुरांश योग

''सगोपुरांशो यदि गोधनानि ''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका में "गोपुरांश" भाग में ग्रह स्थित हो, वह मनुष्य गौ और धन दोनों से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु योग की संभावना : 4 में 1

आपकी पत्रिका में "गोपुरांश" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप गो धन अर्थात् पशुओं और धन से पूर्ण रहेंगे।

केमद्रुम योग

''चेत्वित्तव्ययगाः भवन्ति न खगाः केमद्रुमः स्यात्तदा।
प्राचीनैर्मुनिभिः स्मृताः श्रुतिमिताः योगाः शशाङ्कोद्भवाः।।''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 43 ।।

यदि जन्मपत्रिका में चन्द्र से द्वितीय अथवा द्वादश भाव में कोई भी ग्रह न हों तो "केमद्रुम" योग का सृजन होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र योग की संभावना : 32 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "केमद्रुम" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप धन(अर्थ), पुत्र, पत्नी, भाई से हीन, नौकरी पेशा वाले (दास) एवं परदेश में निवास करेंगे।

वेशि योग

''धनखेटैर्वेशी दिनेशात्''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 51 ।।

यदि जातक के जन्मकाल पत्रिका में सूर्य से द्वितीय भाव में कोई ग्रह स्थित हो, तो जातक पर वेशि योग का सृजन होगा।

योग कारक ग्रह : राहु,सूर्य योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "वेशि" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप दयावान, स्थूल शरीर वाले, चतुरवक्ता, आलस्य से युक्त एवं वक्र दृष्टि वाले प्राणी होंगे।